



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

No. 1]

नई विल्ली, शनिवार, जनवरी 2, 1988/पौष 12, 1909

NEW DELHI, SATURDAY, JANUARY 2, 1988/PAUSA 12, 1909

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

भाग II—खण्ड 3—खण्ड (II)
PART II—Section 3—Sub-section (II)

(रक्षा मंत्रालय को छोड़ कर) भारत सरकार के अन्तर्गत द्वारा जारी किए गए सार्विधिक आदेश और अधिसूचनाएँ
Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than
the Ministry of Defence)

वित्त मंत्रालय
(केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर गोड़)

नई विल्ली, 13 अक्टूबर, 1987

(आय कर)

का. आ. 1--आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) की धारा 121 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त वाक्यांशों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर गोड़ समय-समय पर यथासंरचित दिनांक 20 जुलाई, 1974 की अविसूचना सं. 679 (का. सं. 187/2/74--आ.क. (नि.-1) में दो गई अनुदूषों में निम्नलिखित संशोधन करती है।

ऋग संघ्रा 11-ब के सामने स्तम्भ सं. 1, 2 तथा 3 की प्रविष्टियों को निम्नानुसार रखा जाएगा :—

87/1949 GI—1

अनुदूषी		
आयकर आयुक्त	प्रधान कार्यालय	जेनरलिकार
1	2	3
11-ब	मेरठ	1. देहरादून परिमण्डन
मेरठ		2. अग्रिकेश परिमण्डन
		3. रुद्रप्रयाग परिमण्डन
		4. सहारनपुर परिमण्डन
		5. नैनीतिकर परिमण्डन
		6. परिमण्डन-I, मेरठ
		7. परिमण्डन-II, मेरठ
		8. बैंगन परिमण्डन, मेरठ
		9. हाइड नैरिमण्डन
		10. गांजिगढ़ परिमण्डन
		11. संसाचा शुद्ध एवं आयकर परिमण्डल, रुड़का
		12. हरिदार परिमण्डल
		13. शामला परिमण्डल

यह अविसूचना दिनांक 1 अक्टूबर, 1987 के द्वारा होती।

[स. 7612/का. सं. 187/9/87--आ.क. (नि-1)]

के. के. त्रिपाठी, सचिव
केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर गोड़

MINISTRY OF FINANCE

(Central Board of Direct Taxes)

New Delhi, the 13th November, 1987

(INCOME-TAX)

S.O. 1.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 121 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), the Central Board of Direct Taxes makes the following amendments to the schedule appended to its notification No. 679 (F.No. 187/2/74-IT(A1) dated 20th July, 1974 as modified from time to time.

The entries in Column Nos. 1, 2 and 3 against Serial No. 118 are substituted as under:

SCHEDULE

Commissioner Headquarters of Income-tax		Jurisdiction
1	2	3
118. Meerut	Meerut	<ol style="list-style-type: none"> 1. Dehradun Circle 2. Rishikesh Circle 3. Roorkee Circle 4. Saharanpur Circle 5. Muzaffarnagar Circle 6. Circle-I, Meerut 7. Circle-II, Meerut 8. Salary Circle, Meerut 9. Hapur Circle 10. Ghaziabad Circle 11. E.D. cum-I. T. Circle, Roorkee 12. Hardwar Circle 13. Shamli Circle

This Notification shall take effect from 1st October, 1987.

[No. 7612/F.No. 187/9/87-II(A1)]

K.K. TRIPATHI, Secy.,
Central Board of Direct Taxes

(राजस्व विभाग)

नई विली, 18 नवम्बर, 1987

(आयकर)

का. आ. 2.—आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 10 की उपधारा (23-ग) के खण्ड (v) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केंद्रीय सरकार एवं द्वारा उस उपलब्ध के प्रयोजनार्थ, "पुष्टिमार्गि तृतीय पीठ ट्रस्ट, उदयपुर" को कर निर्वाचित वर्ष 1985-86 से 1988-89 के लिए अधिसूचित करती है।

[सं. 7619/फा. सं. 197/220/82-आ. क. (नि. - 1)]

(Department of Revenue)

New Delhi, the 18th November, 1987

(INCOME-TAX)

S.O. 2.—In exercise of the powers conferred by sub-clause (v) of clause (23C) of section 10 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), the Central Government hereby notifies "Pushtritmaargya Tritiya Peeth Trust, Udaipur" for the purpose of the said sub-clause for the assessment years 1985-86 to 1988-89.

[No. 7619/F. No. 197/220/82-IT(A)]

नई विली, 25 नवम्बर, 1987

(आयकर)

का. आ. 3.—आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 10 की उपधारा (23-ग) के खण्ड (v) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केंद्रीय सरकार एवं द्वारा उस उपलब्ध के प्रयोजनार्थ, "द्वारा दावातुल कुरान, बम्बई" को कर निर्वाचित वर्ष 1987-88 और 1988-89 के लिए अधिसूचित करती है।

[सं. 7626/फा. सं. 197/190/86—आ. क. (नि. - I)]

दलीप सिंह, विशेष कार्य अधिकारी

New Delhi, the 25th November, 1987

(INCOME-TAX)

S.O. 3.—In exercise of the powers conferred by sub-clause (v) of clause (23C) of section 10 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), the Central Government hereby notifies "Idara Dawatul Quran, Bombay" for the purpose of the said sub-clause for the assessment years 1987-88 and 1988-89.

[No. 7626/F. No. 197/190/86-IT(A1)]

DALIP SINGH, Officer on Special Duty.

नई विली, 18 विसम्बर, 1987

आदेश

स्टाम्प

का. आ. 4.—भारतीय स्टाम्प अधिनियम, 1899 (1899 का 2) की धारा 9 की उपधारा (1) के खण्ड (क) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केंद्रीय सरकार एवं द्वारा जारी किए जाने वाले क्रमांक: बारह करोड़ पैसद लाख रुपये और अंट करोड़ अस्ती लाख रु. के मूल्य के (I) "41" वीं संख्या वाले "11% कर्टाइक राज्य वित्तीय नियम वर्ष पत्र 2002" (दूसरी शुरूआत) (II) 42 वीं संख्या वाले "11% कर्टाइक राज्य वित्तीय नियम वर्ष पत्र 2002" (दौदी शुरूआत) के रूप में उल्लिखित वर्तन पदों के स्वरूप के अधिकारी पर उक्त अधिनियम के अन्तर्गत प्रभावी है।

[सं. 52/87-स्टाम्प-फा. सं. 83/54/87-वि. क.]

बी. आर. मेहमी, अवर सचिव

New Delhi, the 18th December, 1987

ORDER

STAMPS

S.O. 4.—In exercise of the powers conferred by clause (a) of sub-section (1) of section 9 of the Indian Stamp Act, 1899 (2 of 1899), the Central Government hereby remits the duty with which the bonds in the nature of Promissory notes described as (I) "11 per cent Karnataka State Financial Corporation Bonds '2002'" (I Series) No. '41' (II) "11 per cent Karnataka State Financial Corporation Bonds '2002'" (IV Series) No. '42' of the value of rupees, twelve crores and sixty five lakhs and eight crore eighty lakhs respectively to be issued by Karnataka State Financial Corporation, Bangalore as are chargeable under the said Act.

[No. 52/87-Stamp-F. No. 33/54/87-ST]

B. R. MEHMI, Under Secy.

(आधिक कार्य विभाग)

नई दिल्ली, 16 दिसंबर, 1987

का० आ० 5.—केन्द्रीय सरकार, भारतीय (संघ के शासकीय पर्यायों के लिए प्रयोग) हिन्दूमात्राओं, 1949 के नियम 10 के उपनियम (4) के अनुमति में निम्न मंज़ालिय (आधिक कार्य विभाग) के प्रणालीनिक नियंत्रण में निम्न भारतीय साधारण बीमा नियम के निम्नलिखित कार्यालयों को, जिनके 800 प्रतिशत से अधिक कर्मचारीकृत्य ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, अधिसूचित करती है :

1. भारतीय साधारण बीमा नियम :

कम्पनी का नाम : (क) नेशनल इंश्यारेंस कंपनी लिमिटेड

(1) मण्डल कार्यालय, पटना

(2) शाह्वा कार्यालय, गया

(3) शाह्वा कार्यालय, सासाराम

(4) शाह्वा कार्यालय, मुंगेर

(5) शाह्वा कार्यालय, सालेह गंग

(6) शाह्वा कार्यालय, बिहार शरीफ

(ब्र) दि ओरिएंटल इंश्यारेंस कम्पनी लिमिटेड

(1) शाह्वा कार्यालय, रत्नाम

[संख्या 11011/51/85-हिन्दूमात्रा०क०]

पी०वी० पिढे, निदेशक

(Department of Economic Affairs)

New Delhi, the 16th December, 1987

O. 5.—In pursuance of Sub-Rules (4) of Rule 10 of the Official Language (Use for official purposes of the Union) Rules, 1976 the Central Government hereby notifies the following offices of the General Insurance Corporation of India (under the Administrative control of Ministry of Finance, Department of Economic Affairs) where of more than 80 per cent of staff have acquired working knowledge of Hindi :

1. General Insurance Corporation of India

Name of the Company :

(a) National Insurance Co. Ltd.

(1) Divisional Office, Patna

(2) Branch Office, Gaya

(3) Branch Office, Sasaram

(4) Branch Office, Munger

(5) Branch Office, Shaheb Gunj

(6) Branch Office, Bihar Sharif.

(b) The Oriental Insurance Company Limited.

(1) Branch Office, Ratiplam.

[No. F. 11011/51/85-HIC]

P. V. BHUDE, Director (Admn)

(बैंकिंग प्रभाग)

नई दिल्ली, 9 दिसंबर, 1987

का० आ० 6 :-यह बैंकोंगे विनियम अधिनियम, 1949 का द्वारा प्रदत्त यन्त्रियों का प्रयोग करते हुए तथा उसके अनुसार केन्द्रीय सरकार ने बैंक आफ बिहार, लिमिटेड, पटना के भारतीय स्टेट बैंक के साथ विलय के लिए 5 सप्टेंबर, 1969 की एक योजना घंटूर की थी।

यह उक्त योजना के खंड 6 के उपखंड (1) के अनीन भारतीय स्टेट बैंक बारा बिहार बैंक लिमिटेड की परिवर्तियों का अभिय रूप से भूत्यांकन अपेक्षित था, जो फि नियम तारीख के बारे बीमा की समाप्ति के पश्चात् नियम तारीख तो अवधिन रहा मे भूत्यांकित कर लिया गया है।

यह, भारतीय स्टेट बैंक ने पृष्ठ राजपत्र द्वितीय तिथि के प्रयोगों के बाबत बैंक ने अन्तर्गत अवधिन रूप से भूत्यांकन अपेक्षित था, जो फि नियम तारीख के बारे बीमा की समाप्ति के पश्चात् नियम तारीख तो अवधिन रहा मे भूत्यांकित कर लिया गया है।

और यह, केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक ने परामर्श करते पर इत बात मे संतुष्ट हुए फि वितर योजना तो गूढ़ फूट मे गठित हो दी हा गयों हैं और उनका समय बढ़ा कर जिति मे प्रत्यन्तिया का अन्तिम रूप से भूत्यांकन अपेक्षित है, उक्त गठित हो दूर रुदा जहरों है।

जत. अब, यैक आफ बिहार लिमिटेड, पटना तो मारोर स्टेट बैंक के लाय विलय का 5 नवम्बर, 1969 का वितर यागा के खंड 20 बारा प्रदत्त यन्त्रियों का याग करते हुए, कंधार तरावर एड्डारा नियम देता है कि भारतीय स्टेट बैंक आफ बिहार लिमिटेड तो तो प्रदत्त यन्त्रियों का, जिनकी बमूलों और भूत्यांकन नहीं हुआ है, भिता तारीख से उन्नोन यदों की अवधि भूत्यांकन करेगा।

[संख्या 17/2/83-यो. आ०-III]

प्राप्त नाम, जवार सचिव

(Banking Division)

New Delhi, the 9th December, 1987

S.O. 6.—Whereas on 5th November, 1969 a scheme of amalgamation of the Bank of Behar Ltd., Patna with the State Bank of India was sanctioned by the Central Government in exercise of the powers conferred by and in accordance with section 45 of the Banking Regulation Act, 1949,

Whereas under sub-clause (ix) of clause 6 of the said Scheme, the State Bank of India was required to make a final valuation of the assets of the Bank of Behar Ltd., which have been provisionally valued on the prescribed date, on the expiry of twelve years from the prescribed date,

Whereas the State Bank of India has represented that in view of the large number of assets involved and the recovery of most of the items yet to be realised inspite of its efforts, it has not been able to make the final valuation within the time specified in sub-clause (ix) of clause 6 of the Scheme of amalgamation.

And whereas the Central Government in consultation with the Reserve Bank of India is satisfied that, a difficulty has arisen in giving effect to the scheme of amalgamation which it is necessary to remove by extending the time within which the final valuation of assets is required to be made.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by clause 20 of the scheme of amalgamation dated 5th November, 1969 of the Bank of Behar Limited, Patna with the State Bank of India, the Central Government hereby directs that the State Bank of India shall in consultation with and with the approval of the Reserve Bank of India value the assets of the Bank of Behar Ltd. Patna which have not been realised and valued, within a period of nineteen years from the prescribed date.

[No. 17/2/83-B.O. III]

PRAN NATH, Under Secy.

नई दिल्ली, 15 दिसंबर, 1987

का. आ. 7--राष्ट्रीयकूल बैंक (प्रबंध और प्रकोर्ग उपबंध) योजना 1970 की धारा 3 को उपधारा (७) के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार द्वी प्रकोर्ग वार्ता, गोठोस्कर, मनोजगांव, भारतीय रिजर्व बैंक, मान्यताप्रद विशेषण तथा कम्प्यूटर सेट दिवार, वर्नी, बम्बई-400018 को एड्डाग 10-12-1987 से इंडिप्रेन आवरमान बैंक के नियोग के रूप में पुनर्नियोग करती है।

[मंदिर एक. ९/४/८७-वी. ओ.-१]
एम. एस. सीतारामन, अवर सचिव

New Delhi, the 15th December, 1987

S.O. 7.—In pursuance of sub-clause (g) of clause 3 of the Nationalised Banks (Management and Miscellaneous Provisions) Scheme, 1970, the Central Government hereby re-appoints Shri S. P. Gothsokar, Adviser, Reserve Bank of India, Department of Statistical Analysis and Computer Services Wo'l, Bombay-400018 as a Director of Indian Overseas Bank with effect from 10-12-1987.

[No. F. 9/4/86-B.O. I]
M. S. SEETHARAMAN, Under Secy.

का. आ. 8—भारतीय नियोग-आयात बैंक अधिनियम, 1981 (1981 का 28) की धारा 6 की उपधारा (1) के खंड (१) के उपखंड (१) के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार एतद्वारा द्वी प्रकोर्ग वार्ता, वाणिज्य मंत्रालय, मर्दि दिल्ली को भारतीय नियोग-आयात बैंक के नियोग मंडल के नियोग के रूप में मनोनीत करती है।

[मंदिर एक. ७/३/८७-वी. ओ.-१]
एस०एम० हसुरकर, नियोग

S.O. 8.—In pursuance of sub-clause (i) of clause (c) of sub-section (1) of section 6 of Export-Import Bank of India Act, 1981 (28 of 1981), the Central Government hereby nominates Shri A. N. Varma, Secretary, Ministry of Commerce, New Delhi as a Director of the Board of Directors of the Export-Import Bank of India.

[No. F. 7/3/87-BO.I]

S. S. HASURKAR, Director
भारतीय उत्पाद शुल्क, मध्यप्रदेश
इन्दौर, 24 नवम्बर, 1987
अधिष्ठूतना मंडल 19/1987

का. आ. 9--समाजनीय, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, इन्दौर के द्वी के. श्री. मोदे, अधीक्षक, ममूल “वा” नियोग की आयु प्राप्त करने पर दिनांक 31-10-87 के अवश्यक में शामिल देश से नियुक्त हो गए।

[का. स. 11 (3) ३-गो[87/5669]
ना. राजा, समाजनीय

CENTRAL EXCISE COLLECTORATE,
MADHYA PRADESH

Indore, the 24th November, 1987

NOTIFICATION NO. 19/1987

S.O. 9.—Shri K. B. Moghe, Superintendent, Central Excise, Group 'B' of Indore Collectorate having attained the age of superannuation retired from Government service on 31-10-1987 in the afternoon.

[C. No. II(3)-Con[87/5669]
N. RAJA, Collector.

वाणिज्य मंत्रालय

नई दिल्ली, 2 जनवरी, 1988

का. आ. 10 :-नियोग (फालिटी नियोग और नियोग अधिनियम 1963 (1963 का 22) की उपधारा 7 की उपधारा (१) द्वारा प्रदत्त मर्कियों का प्रयाप करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा नियोगित संस्थानों के खिलाफ तथा अवक्ष पृष्ठ-I के नियोग लिए अभियानों के रूप में मान्यता देता है।

1. नियोग नियोग अधिकारण—बम्बई;
2. नियोग नियोग अधिकारण—कलकत्ता;
3. नियोग नियोग अधिकारण—काचीन;
4. नियोग नियोग अधिकारण—बिहार;
5. नियोग नियोग अधिकारण—मद्रास,

[काईल सं. ५ (३)/८३-ई आई एड ई वी
एव. हरिहर, नियोग

MINISTRY OF COMMERCE

New Delhi, the 2nd January, 1988

S.O. 10.—In exercise of powers conferred by Sub-section (1) of Section 7 of the Export (Quality Control and Inspection) Act, 1963 (22 of 1963), the Central Government hereby recognises the following organisations as Agents for the inspection of Minerals and Ores-Group-I.

1. Export Inspection Agency-Bombay;
2. Export Inspection Agency-Calcutta;
3. Export Inspection Agency-Cochin;
4. Export Inspection Agency-Delhi;
5. Export Inspection Agency-Madras.

[F. No. 5(3)/83-ELI

N. S. HARJNARAN, Direc-

मुख्य नियोग आ त नियोग का कार्यालय

आदेश

नई दिल्ली, 11 दिसंबर 1987

का. आ. 11:—पैसर्स भागवन्दका इंजीनियर प्रा.लि. को.के. अस्तर्गी आयात करने के लिये रु. 36,90,000/- (सप्तरे छान ल ख नववे हजार) का एक अयात लाइसेंस सेक्युर. पी/एप/1481039 दिनांक 5-5-87 दिय गया था।

कर्म द्वारा उत्पाद लाइसेंस की सीमा शुल्क/मुद्रा विनियम प्रति की अद्वितीय प्रति की सांग हम अ धार पर की गई है कि मूल मीम-शुल्क/विनियम नियोग प्रति द्वारा गई है अ या अस्तरानस्य हो गई है। अगे यह भी कहा गया है कि लाइसेंस की सीमा शुल्क/मुद्रा विनियम नियोग प्रति की भी गीमा शुल्क प्राविधिकी के पास दर्ज नहीं कर्म द्वारा गई थी, अतः हम प्रधार भी गीमा शुल्क प्रयोग प्रति के मूल्य को बिल्कुल भी उपयोग में नहीं लाया गया है।

2. लाइसेंसधारी ने अपने तर्के के समर्थन में नोटरी प्रविधि, अवधि के समक्ष विधिवत् शरण लेकर एक शास्त्रात् व विवर किया। तरक्की अवधि संतुष्ट है कि अयात लाइसेंस म. पी/एप/1481039 दिनांक 5-5-97 की मूल मीम-शुल्क/मुद्रा विनियम नियोग प्रति कर्म द्वारा गई है। यथा मंसोवेत आयात नियोग अदेश 1955 दिनांक 7-12-1955 की उपधारा 9(ग)(ग) के अन्ति प्रवान अविकारों का प्रयोग करते हुए मंसोवेत भागवन्दका इंजीनियर प्रा.लि. को दी गई उत्पाद मूल भी गीमा शुल्क/विनियम नियोग प्रति की उपधारा रह किया जाता है।

3. उत्पादक लाइसेंस की भी गीमा शुल्क/विनियम नियोग प्रति की अनुलिपि पार्टी की अलग से जारी की जा रही है।

[सं. सी. जी-1/एम०य०पी० पी/एस 10/524 एम आई एस 1257]

बी. अर. अहीर, उत्पाद विनियम
आयात एवं नियोग

(Office of the Chief Controller of Imports & Exports)
ORDER

New Delhi, the 11th December, 1987

S.O. 11.—M/s. Bhagchandka Engineers Pvt. Ltd., Aurangabad were granted a supplementary import licence No. P/S/1481039 dated 5-5-87 for Rs. 6,90,000 (Rupees Thirty six lakhs ninety thousand only) for import of All Second¹/Second grade[Defective Cuttings]Sheets[Coils]Strips in any shape/Section Coated/Uncoated—900 M.Ts. only under F.F.E.

The firm has applied for issue of Duplicate copy of Customs/Ex. Control purposes copy of the above-mentioned licence on the ground that the original Customs purposes Exchange Control copy of the licence has been lost or misplaced. It has further been stated that the Customs purposes

Ex. Cotrol copy of the licence was not registered with any Customs Authority and as such the value of Customs Purpose copy has not been utilised at all.

2. In support of their contention, the licensee has filed an affidavit on stamped paper duly sworn in before a Notary Public Bombay I am accordingly satisfied that the original P/S/1481039, dated 5-5-87 has been lost or misplaced by the firm. In exercise of the powers conferred under sub-clause 9(cc) of the Import (Control) Order, 1955 dated 7-12-1955 as amended the said original Customs Purposes[Ex. Control copy No. P/S/1481039, dt. 5-5-87 is issued to M/s. Bhagchandka Engineers Pvt. Ltd. is hereby cancelled.

3. A duplicate Customs Purposes[Ex. Control copy of the said licence is being issued to the party separately.

[No. Suppl./S-10/524/SSI 87-SIS 1257]
B. R. AHIR, Dy. Chief Controller of Imp. & Exp.

आधा एवं भागरिक पूर्ति मंत्रालय

(भागरिक पूर्ति विभाग)

भारतीय मानक अूर्योदय

मई विलेख, 26 नवम्बर, 1987

का०ओ 12:—गमय-समय पर संशोधित भारतीय मानक संस्था (प्रमाणन महार) विनियम, 1955 के विनियम, 5 के उपविनियम (1) के अनुसर में एतद् द्वारा अधिसूचित किया जाता है जिन मार्तीय मानकों के विवरण नीचे अनुसूची में दिए गए हैं, रद्द कर दिए गए हैं और वापस ले लिए गए हैं।

अनुसूची

कम गद किए गए भारतीय मानकों की संख्या और उप राजपत्र अधिसूचना की ए०ओ० संख्या और दिनियम में भारतीय मानक की स्थापना अधिसूचित की गई थी

टिप्पणी

(1)	(2)	(3)	(4)
1. आई.ए० : 3866-- 1966 गंधा शोज सामग्री की विशेषित	ए०ओ० 1972 दिनांक 1967-05-26, भारत के राजपत्र के भाग 2, खंड 3, उपखंड (ii), विनांक 1967-06-10 में प्रकाशित		

आई.ए० : 4932-- 1979 आम की कलम बनाने की संहिता (पड़ला उत्तराशः)

इन भारतीय मानकों की अब कोई उप-विनियम नहीं रखी। अहं अब वापस से लिए गए हैं।

आई.ए० : 5733-- 1979 सेब की कलम बनाने की संहिता

ए०ओ० 2274 विनांक 1981-08-12, भारत के राजपत्र के भाग 2, खंड 3, उपखंड (ii), विनांक 1981-08-29 में प्रकाशित

4. आई.ए० : 7838-- 1975 सजावटी चुश्मा और साड़ियों संबंधी पारिमाणिक शब्दावली

ए०ओ० 4186 दिनांक 1982-11-24, भारत के राजपत्र के भाग 2, खंड 3, उपखंड (ii), विनांक 1982-12-18 में प्रकाशित

5. आई.ए० : 8256-- 1976 खट्टे रसीले फलों का नर्सरी स्टाक बनाने की संहिता

ए०ओ० 3439 विनांक 1978-11-16, भारत के राजपत्र के भाग 2, खंड 3, उपखंड (ii) विनांक 1978-12-02 में प्रकाशित

6. आई.ए० : 8663-- 1977 बोस के नर्सरी स्टाक बनाने के मार्गदर्शन रिझोर्ट

ए०ओ० 79 विनांक 1979-12-19, भारत के राजपत्र के भाग 2, खंड 3, उपखंड (ii) विनांक 1980-01-12 में प्रकाशित

ए०ओ० 3171 विनांक 1980-10-27, भारत के राजपत्र के भाग 2, खंड 3, उपखंड (ii) विनांक 1980-11-15 में प्रकाशित

MINISTRY OF FOOD AND CIVIL SUPPLIES

(Dept. of Civil Supplies)

BUREAU OF INDIAN STANDARDS

New Delhi, the 26th November, 1987

S. O. 12.—In pursuance of sub-regulation (1) of Regulation 5 of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Regulations, 1955 as amended from time to time, it is hereby notified that the Indian Standard(s), particulars of which are mentioned in the Schedule given hereafter, have been cancelled and stands withdrawn.

SCHEDULE

Sl. No. & Title of the Indian Standard No.	No. & Title of the Indian Standard Cancelled	S. O. No & Date of the Gazette Notification in which Establishment of the Indian Standard was Notified	Remarks
1.	IS : 3866—1966 Specification or sugar-cane seed material	S. O. 1972 dated 1967-05-26 published in the Gazette of India, Part-II, Section-3, Sub-section (ii) dated 1967-06-10	These Indian Standards are no more relevant. Hence withdrawn.
2.	IS : 4932—1979 Code for production of mango grafts (<i>first revision</i>)	S. O. 2274 dated 1981-08-12 published in the Gazette of India, Part II, Section-3, Sub-section (ii) dated 1981-08-29	
3.	IS : 5733—1979 Code for production of grafts of apples	S. O. 4186 dated 1982-11-24 published in the Gazette of India, Part-II, Section-3, Sub-section (ii) dated 1982-12-18	
4.	IS : 7838—1975 Glossary of terms for ornamental trees and shrubs	S. O. 3439 dated 1978-11-16 published in the Gazette of India, Part-II, Section-3, Sub-section (ii) dated 1978-12-02	
5.	IS : 8256—1976 Code for production of nursery stock for citrus fruits.	S. O. 79 dated 1979-12-19 published in the Gazette of India, Part-II, Section-3, Sub-section (ii) dated 1980-0-12	
6.	IS : 8663—1977 Guidelines for production of nursery stock for bamboo	S. O. 3171 dated 1980-12-27 published in the Gazette of India, Part-II, Section-3, Sub-section (ii) dated 1980-11-15	

[No. CMD/13 : 71]

का०आ० 13:—समयसमय पर संगोष्ठित भारतीय मानव संस्था (प्रमाणन मुद्र) विनियम, 1955 के विनियम 3 के उपविनियम (1) के अनुसरण में एन्ड्रोडो अधिसूचित किया जाता है जिस भारतीय मानव के विवरण सौच अनुग्रही में विए गए हैं, रद्द कर दिया गया है और वापस ले लिया गया है।

क्रम सं०	रद्द किए कानूनों वारतीय मानक की संख्या और पर्याप्ति	उस राजपत्र अधिकृतना को एस०ओ० संख्या और तिथि जिसमें भारतीय मानक की स्थापना अधिकृति की गई थी	टिप्पणी
(1)	(2)	(3)	(4)
1. आईएस : 8358--1977 लकड़ी को ईंकियरिंगों एस०ओ० संख्या 419 दिनांक 1980-02-04, भारतीय इस मानक में निर्णित अनेताई आई आई एस : की कार्यकारिता परीक्षण राजपत्र के भाग 2, खंड 3, उपबंध (ii) दिनांक 7028 (भाग 9) में पहले ही सम्मिलित 1980-02-23 से प्रकाशित कर दी गई है।			

सं० सो एम झी/13 : 7

S. O. 13.—In pursuance of sub-regulation (1) of Regulation 5 of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Regulations, 1955 as amended from time to time, it is, hereby, notified that the Indian Standard, particulars of which is mentioned in the Schedule given hereafter, has been cancelled and stands withdrawn.

SCHEDULE E

Sl. No.	No. & Title of the Indian Standard Cancelled	S. O. No. & Date of the Gazette Notification in which Establishment of the Indian Standard was Notified	Remarks
(1)	(2)	(3)	(4)
1.	IS : 8358 1977 Performance tests for wooden packing cases	S. O. 419 dated 1980-02-04 published in Gazette of India, Part-II, Section-3, Sub-Section (ii) dated 1980-02-23	As the requirements laid down in this standard have already been covered in. IS : 7028 (in 9 parts)

[No. CMD/13 :/

का०आ० 14:- समय-समय पर संशोधित भारतीय मानक संस्था (प्रमाण चिन्ह) विनियम, 1955 के विनियम 8 के उपविनियम (1) के अनुसार भारतीय मानक संस्था द्वारा अधिसूचित किया जाता है कि जिन 720 लाइसेंसों के घोरे नीचे अनुसूची में दिए गए हैं, उनका मार्च 1986 में भवीकरण किया गया है।

अनुसूची

क्रम सं०	सीएम/एन संख्या	वेष्ट
(1)	(2)	(3)

(1)	(2)	(3)	(1)	(2)	(3)
101.	0416031	1987-01-31	156.	0597465	1987-03-31
102.	0416132	1986-03-01	157.	0599267	1987-03-15
103.	0421226	1987-02-15	158.	0600327	1987-03-15
104.	0423634	1987-02-28	159.	0600428	1987-03-15
105.	0433536	1986-12-31	160.	0602129	1987-03-15
106.	0437140	1987-02-15	161.	0603030	1987-03-31
107.	0447749	1987-04-15	162.	0603131	1987-03-31
108.	0447850	1987-03-15	163.	0603636	1986-03-31
109.	0467250	1987-03-15	164.	0603737	1986-03-31
110.	0470037	1986-10-01	165.	0637855	1986-02-28
111.	0475249	1986-12-31	166.	0649155	1987-03-15
112.	0480343	19 6-03-16.	167.	0650039	1986-10-31
113.	0483551	1987-03-15	168.	0651647	1986-11-15
114.	0485252	1987-03-15	169.	0652245	1986-11-25
115.	0490447	1987-02-28	170.	0654047	1987-03-31
116.	0490548	1987-02-28	171.	0673657	1987-02-15
117.	0495861	1987-03-15	172.	0675560	1987-03-31
118.	0496560	1987-03-15	173.	0676259	1987-02-28
119.	0496863	1987-03-15	174.	0677766	1987-02-28
120.	0505030	1987-01-15	175.	0678364	1987-02-28
121.	0505131	1987-02-28	176.	0678566	1987-02-28
122.	0506638	1987-03-15	177.	0679467	1987-02-28
123.	0566739	1987-03-15	178.	0679568	1987-02-28
124.	0506840	1987-03-35	179.	0679669	1987-02-28
125.	0520528	1987-03-15	180.	0679770	1987-02-28
126.	0510629	1987-03-15	181.	0680654	1987-03-15
127.	0522030	1987-03-31	182.	0680957	1987-02-28
128.	0522232	1987-03-31	183.	0691050	1987-03-15
129.	0522434	1987-03-31	184.	0691252	1987-03-15
130.	05206139	1976-03-31	185.	0682052	1987-03-15
131.	0532438	1987-03-15	186.	0682153	1987-03-15
132.	0535844	1987-02-15	187.	0682355	1987-02-28
133.	0545645	1987-02-15	188.	0682456	19 7-02-28
134.	0536344	1987-03-31	189.	0682658	1987-03-15
135.	0538647	1987-03-15	190.	0683054	1987-01-15
136.	0537043	1987-03-31	191.	0683256	1983-03-15.
137.	0537952	1986-12-31	192.	0683660	1987-03-15
138.	0540537	1987-03-15	193.	0683362	1987-03-15
139.	0551643	1987-02-08	194.	0684359	1986-12-31
140.	0553647	1986-12-31	195.	0684065	1987-03-15
141.	0562446	1986-11-15	196.	0685260	1986-03-15
142.	0563751	1987-03-15	197.	0685361	1987-03-15
143.	0564854	1986-09-30	198.	0685563	1987-03-15
144.	0572348	1987-03-15	199.	0685765	1987-03-31
145.	0589769	187-02-15	200.	0688266	1987-03-31
146.	0590249	1986-09-15	201.	0689672	1987-03-31
147.	0590552	1987-02-15	202.	0691358	1986-03-31
148.	0690853	1987-02-15	203.	0691962	1987-03-31
149.	0591251	1987-02-28	204.	0708953	1987-03-31
150.	0591655	1987-02-28	205.	0716750	1987-03-31
151.	0592253	1987-03-15	206.	0723646	1986-09-30
152.	0592453	1987-02-28	207.	0732041	1986-11-15
153.	0592556	1987-02-28	208.	0745757	1987-03-15
154.	0594459	1987-03-15	209.	0750144	1987-03-15
155.	0595966	1987-03-15			

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)
२१०	०७३०३४६	१९८७-०१-३१	२६५	०९४७५६३		१९८७-०३-३१
२११	०७५२२१९	१९८७-०२-२४	२६६	०८४८३६३		१९८७-०३-३१
२१२	०७५३४५३	१९८७-०२-२४	२६७	०८४९३६५		१९८७-०३-३१
२१३	०७५१७५८	१९८७-०२-२४	२६८	०८४९७६९		१९८७-०३-३१
२१४	०७५५१५१	१९८७-०२-२४	२६९	०८५००१७		१९८७-०३-१५
२१५	०७५६४५९	१९८७-०२-२४	२७०	०८५०२१९		१९८७-०३-१५
२१६	०७५६५६०	१९८७-०२-२४	२७१	०८५११५०		१९८७-०४-०१
२१७	०७५८१६०	१९८७-०२-२४	२७२	०८५१२९१		१९८७-०३-३१
२१८	०७५८३६२	१९८७-०२-२४	२७३	०८५१९५८		१९८७-०३-१५
२१९	०७५८४६३	१९८७-०२-२४	२७४	०८९७७८०		१९८६-०३-१५
२२०	०७५८८६७	१९८७-०३-१५	२७५	०९०२८४८		१९८६-१०-१५
२२१	०७५८९६८	१९८७-०३-३१	२७६	०९१०८४७		१९८६-११-१५
२२२	०७६००४६	१९८७-०३-१५	२७७	०९११७४८		१९८६-११-१५
२२३	०७६०२४८	१९८७-०३-१५	२७८	०९१५४५३		१९८६-०३-३१
२२४	०७६०३४९	१९८७-०३-१५	२७९	०९२२९५५		१९८५-१२-१६
२२५	०७६१२५०	१९८७-०३-१५	२८०	०९२५१५३		१९८०-१२-३१
२२६	०७६१३५१	१९८७-०३-१५	२८१	०९३१७५४		१९८७-०३-१५
२२७	०७६२६५६	१९८७-०३-३१	२८२	०९३३२५३		१९८७-०१-३१
२२८	०७६४१५५	१९८७-०३-३१	२८३	०९३३४५५		१९८७-०१-३१
२२९	०७६५१५७	१९८७-०३-३१	२८४	०९३५५६०		१९८६-०२-१५
२३०	०७६६३६१	१९८७-०३-३१	२८५	०९३५६६१		१९८६-०२-१६
२३१	०७६६४६२	१९८७-०३-३१	२८६	०९३६०५७		१९८७-०३-१५
२३२	०७६६६६४	१९८७-०३-३१	२८७	०९३८२६३		१९८७-०२-२४
२३३	०७७९२६९	१९८६-०६-१५	२८८	०९४१५१		१९८७-०२-२४
२३४	०७९३५६३	१९८७-०२-२४	२८९	०९४१९५९		१९८७-०२-१५
२३५	०७९८४७२	१९८६-१०-३१	२९०	०९४२४५६		१९८७-०२-२४
२३६	०७९००५५	१९८७-०२-१५	२९१	०९४२५५७		१९८७-०२-२४
२३७	०८०३२१०	१९८७-०१-३१	२९२	०९४२९६१		१९८७-०२-२४
२३८	०८०६४४८	१९८६-०३-३१	२९३	०९४३०५४		१९८७-०२-२४
२३९	०८०८९५७	१९८६-१०-३१	२९४	०९४३२५६		१९८७-०२-१५
२४०	०८३०४४५	१९८७-०१-१५	२९५	०९४३४५८		१९८७-०२-१५
२४१	०८३२१४९	१९८७-०३-१५	२९६	०९४३६६०		१९८७-०२-२४
२४२	०८३२५५०	१९८७-०३-१५	२९७	०९४३७६१		१९८७-०३-१५
२४३	०८३५२५३	१९८७-०१-३१	२९८	०९४४३५९		१९८७-०२-२४
२४४	०८३६१५४	१९८७-०२-१५	२९९	०९४४४६०		१९८७-०२-२४
२४५	०८३८९६६	१९८७-०२-२४	३००	०९४५९६७		१९८७-०२-२४
२४६	०८३९०५९	१९८७-०२-२४	३०१	०९४६०६०		१९८७-०२-२४
२४७	०८३९४६३	१९८७-०१-३१	३०२	०९४६१६१		१९८७-०२-२४
२४८	०८३९६६५	१९८७-०३-१५	३०३	०९४६६६६		१९८७-०३-३१
२४९	०८४१६५२	१९८७-०३-१५	३०४	०९४६७६७		१९८६-०३-०१
२५०	०८४१७५३	१९८७-०३-१५	३०५	०९४७८७०		१९८७-०३-१५
२५१	०८४२०४४	१९८७-०३-१५	३०६	०९४८५६४		१९८७-०२-२४
२५२	०८४२१४९	१९८७-०३-१५	३०७	०९४९८७-		१९८७-०३-१५
२५३	०८४२३५१	१९८७-०३-१५	३०८	०९४९०६६		१९८७-०३-१५
२५४	०८४२७५५	१९८७-०३-१५	३०९	०९४९९७६		१९८७-०३-१५
२५५	०८४२८५६	१९८७-०३-१५	३१०	०९५०५७६		१९८७-०३-१५
२५६	०८४३०५०	१९८७-०३-१५	३११	०९५०६५७		१९८७-०३-१५
२५७	०८४३१५१	१९८७-०३-१५	३१२	०९५०७५४		१९८६-०३-१५
२५८	०८४३६५६	१९८७-०३-१५	३१३	०९५२५६०		१९८७-०३-३१
२५९	०८४४१५३	१९८७-०३-१५	३१४	०९५६६०९		१९८६-०३-०१
२६०	०८४५१५५	१९८७-०२-२४	३१५	०९५७७७२		१९८७-०३-३१
२६१	०८४७०५८	१९८७-०३-३१	३१६	०९५७९७४		१९८७-०३-३१
२६२	०८४७२६०	१९८७-०३-१५	३१७	०९५७९७४		१९८७-०३-३१
२६३	०८४७३६१	१९८७-०३-१५	३१८	०९५८६७३		१९८६-०३-३१
२६४	०८४७४६२	१९८७-०३-३१	३१९	०९५९२७१		१९८६-०३-३१

(1)	(2)	(3)	(1)	(2)	(3)
320.	0959473	1987-03-31	375.	1053430	1986-03-19
321.	0961258	1987-03-31	376.	1053733	1987-03-15
322.	0961359	1987-03-31	377.	1054331	1986-04-01
323.	0972162	1986-05-31	378.	1054937	1986-03-31
324.	0988682	1986-09-30	379.	1056840	1987-03-15
325.	0990164	1987-03-15	380.	1057135	1987-03-15
326.	09913468	1987-01-31	381.	1058137	1986-03-31
327.	0999384	1986-09-30	382.	1058440	1987-03-15
328.	1006724	1985-11-16	383.	1059745	1987-03-31
329.	1007928	1986-11-15	384.	1059846	1987-03-15
330.	1012012	1986-11-30	385.	1060730	1987-03-31
331.	1019632	1986-01-01	386.	1060831	1987-03-31
332.	1026831	1987-03-31	387.	1061833	1987-03-15
333.	1027328	1987-01-15	388.	1067744	1986-04-15
334.	1029433	1987-02-15	389.	1077444	1986-05-15
335.	1030620	1987-02-15	390.	1092642	1986-06-30
336.	1033828	1987-02-15	391.	1093442	1986-06-30
337.	1034224	1987-02-15	392.	1095547	1987-03-31
338.	1034325	1987-02-15	393.	1095749	1987-03-31
339.	1035024	1987-02-15	394.	1100009	1987-03-15
340.	1035832	1987-02-15	395.	1132123	1986-11-30
341.	1036026	1987-02-15	396.	1132224	1985-12-01
342.	1036127	1987-02-15	397.	1134632	1986-11-30
343.	1038434	1987-02-28	398.	1137234	1985-12-16
344.	1038535	1987-02-28	399.	1141023	1986-12-31
345.	1039032	1987-02-28	400.	1141225	1986-12-31
346.	1039234	1987-02-28	401.	1148441	1987-01-15
347.	1039638	1987-02-28	402.	1149443	1986-01-16
348.	1039941	1987-02-28	403.	1150731	1987-01-31
349.	1040118	1987-03-15	404.	1154941	1987-02-15
350.	1040219	1987-03-15	405.	1156842	1987-02-15
351.	1040928	1987-03-15	406.	1156541	1987-03-15
352.	1041221	1987-03-15	407.	1159850	1987-02-15
353.	1042930	1987-03-15	408.	1160431	1987-02-15
354.	1043528	1987-03-15	409.	1160835	1987-02-15
355.	1044429	1987-03-15	410.	1161332	1987-02-15
356.	1044732	1987-03-15	411.	1162536	1987-02-28
357.	1044833	1987-03-15	412.	1162839	1987-02-28
358.	1045027	1987-03-15	413.	1162940	1987-02-28
359.	1045229	1987-03-15	414.	1163033	1986-03-01
360.	1045936	1987-03-15	415.	1163235	1987-02-28
361.	1046635	1986-03-16	416.	1163336	1987-02-28
362.	1047031	1987-03-15	417.	1163740	1987-02-28
363.	1047334	1987-03-15	418.	1163841	1986-03-01
364.	1047940	1987-03-15	419.	1163942	1987-02-28
365.	1048042	1987-03-15	420.	1164035	1987-02-28
366.	1049439	1987-02-28	421.	1164136	1987-02-15
367.	1049136	1987-03-15	422.	1164843	1987-02-28
368.	1050424	1987-03-15	423.	1165037	1987-02-28
369.	1050525	1987-03-15	424.	1165239	1987-02-28
370.	1050929	1987-03-15	425.	1165441	1987-02-28
371.	1051224	1987-03-15	426.	1165542	1987-02-28
372.	1051729	1986-03-16	427.	1166342	1987-02-28
373.	1052125	1986-03-15	428.	1166443	1987-02-28
374.	1052226	1987-03-15	429.	1166645	1987-02-28

(1)	(2)	(3)	(1)	(2)	(3)
430	1167344	1987-03-15	485	1271339	1987-01-31
131	1167445	1987-03-15	486	1272745	1987-02-15
432	1167545	1987-03-15	487	1272947	1987-02-15
433	1167647	1987-03-15	488	1273242	1987-02-15
434	1167748	1987-03-15	489	1273343	1987-02-15
435	1168043	1987-03-15	490	1273545	1987-02-15
436	1168447	1987-03-15	491	1273949	1987-02-15
437	1168649	1987-03-15	492	1274042	1987-01-31
138	1168851	1987-03-15	493	1274345	1987-02-15
439	1169045	1986-03-16	494	1275630	1987-02-15
440	1169146	1987-03-15	495	1274751	1987-02-15
141	1169348	1987-03-15	496	1276349	1987-01-31
442	1170636	1986-03-16	497	1276551	1987-01-31
443	1170737	1986-03-16	498	1276852	1987-01-31
444	1170838	1987-03-15	499	1277048	1987-02-28
445	1171739	1987-03-15	500	1278353	1987-02-28
446	1172539	1987-03-31	501	1278555	1987-02-15
447	1172640	1987-03-31	502	1279052	1987-02-28
448	1172842	1987-03-31	503	1279355	1987-02-28
449	1173743	1986-03-31	504	1279759	1986-03-01
450	1173945	1987-03-15	505	1279961	1986-03-01
451	1174038	1987-03-15	506	1280340	1987-02-28
452	1174139	1987-03-15	507	1280345	1987-02-28
453	1174341	1987-03-31	508	1281241	1987-02-28
454	1174745	1987-03-31	509	1281948	1987-02-23
455	1175646	1987-03-31	510	1282142	1987-02-28
456	1175747	1987-12-31	511	1282243	1987-02-28
457	1176345	1986-03-15	512	1282849	1987-02-28
458	1176547	1987-03-31	513	1282950	1987-02-28
459	1182242	1987-03-15	514	1283144	1987-02-28
460	1195450	1987-03-15	515	1283346	1987-02-28
461	1197353	1986-06-15	516	1283548	1987-02-28
462	1198456	1986-06-15	517	1283649	1987-02-28
463	1220827	1986-08-15	518	1284045	1987-02-28
464	1221526	1986-06-30	519	1284247	1987-03-15
465	1250735	1986-11-30	520	1284651	1987-03-15
466	1253236	1986-12-15	521	1284954	1987-03-15
467	1254238	1986-12-15	522	1285552	1987-03-51
468	1254844	1986-12-15	523	1285754	1987-03-15
469	1258443	1986-12-31	524	1285855	1987-03-15
470	1260940	1987-03-15	525	1285956	1987-03-15
471	1261841	1987-03-15	526	1286150	1987-03-15
472	1262338	1986-12-31	527	1286251	1987-03-15
473	1263340	1987-01-15	528	1286352	1987-03-15
474	1263441	1987-03-15	529	1286554	1987-03-15
475	1263542	1987-01-15	530	1286655	1987-03-16
476	1265950	1987-01-15	531	1286857	1987-03-15
477	1267550	1987-01-31	532	1287253	1987-03-15
478	1267752	1986-12-31	533	1287455	1987-03-15
479	1267853	1987-01-31	534	1287657	1987-03-15
480	1267954	1987-01-31	535	1288358	1987-03-15
481	1268047	1987-01-31	536	1288358	1987-03-15
482	1268855	1987-01-31	537	1289459	1987-03-15
483	1270034	1987-01-31			
484	1270135	1987-01-31			

(1)	(2)	(3)	(1)	(2)	(3)
538	1289560	1987-03-15	593	1371040	1987-02-15
539.	1290040	1987-03-15	594.	1371141	1987-02-15
540	1290343	1987-05-31	595	1371747	1987-02-15
541	1290646	1987-03-15	596	1372143	1987-02-15
542	1290747	1987-03-15	597	1372648	1987-02-15
543	1290949	1987-03-15	598	1372749	1987-02-15
544	1291042	1987-03-31	599	1372850	1987-02-15
545	1291547	1987-03-15	600	1373448	1987-02-15
546	1291648	1987-03-31	601	1374854	1987-02-28
547.	1293147	1986-07-31	602	1375048	1987-03-15
548	1293248	1987-03-31	603	1375250	1987-02-28
549.	1293854	1987-03-31	604	1375553	1987-02-15
550.	1294351	1987-03-31	605	1375654	1987-02-28
551	1294452	1987-03-31	606	1375755	1987-02-28
552	1294553	1987-03-15	607	1375856	1987-02-28
553	1295555	1987-03-31	608	1375957	1987-02-28
554	1295656	1987-03-31	609	1376252	1987-02-15
555	1295959	1987-03-31	610	1376353	1987-02-28
556	1296254	1986-04-01	611	1376854	1987-02-28
557.	1296355	1987-03-31	612	1376954	1987-02-28
558	1297554	1987-03-31	613	1377254	1987-02-28
559	1297660	1987-03-31	614	1377355	1987-02-28
560	1298254	1987-03-31	615	1377557	1987-02-28
561	1298460	1987-03-31	616	1377658	1987-02-28
562.	1298561	1987-03-31	617.	1377759	1987-02-28
563	1298862	1987-03-31	618	1377860	1987-02-28
564	1298763	1986-03-31	619	1378054	1987-02-28
565	1299059	1987-03-31	620	1378559	1987-02-28
566.	1299159	1986-03-31	621	1378761	1987-02-28
567	1299462	1987-03-31	622	1378862	1987-02-28
568	1300017	1987-03-15	623	1379864	1986-03-01
569	1300219	1986-03-31	624	1380243	1987-02-28
570	1304126	1987-03-31	625	1380311	1987-02-28
571.	1310222	1986-05-15	626	1380546	1987-02-28
572	1348853	1986-10-15	627	1381245	1986-03-01
573.	1355850	1985-12-31	628	1381447	1987-02-28
574	1355951	1986-12-31	629	1381750	1987-02-28
575.	1356852	1986-12-31	630	1381952	1987-02-28
576.	1357046	1986-12-31	631	1382045	1987-02-28
577	1361542	1987-01-15	632	1382449	1987-02-26
578	1361643	1987-01-15	633	1382651	1987-02-28
579	1362948	1987-01-15	634	1382752	1987-02-28
580	1363041	1987-01-15	635	1382853	1987-02-28
581	1364649	1987-01-15	636	1383047	1986-02-28
582	1364750	1987-01-15	637	1383350	1986-03-01
583	1366047	1986-02-01	638	1393451	1987-02-28
584.	1366552	1987-01-31	639	1383552	1987-02-28
585	1367756	1987-01-31	640	1383855	1987-02-28
586.	1367857	1987-01-31	641	1384352	1987-02-28
587	1368455	1986-02-01	642	1384453	1987-02-28
588	1369457	1987-01-31	643	1385455	1987-02-28
589	1369861	1987-01-31	644	1385051	1987-02-28
590	1370442	1987-02-15	645	1385556	1987-02-28
591	1370543	1987-02-15	646	1385657	1987-02-28
592	1370644	1987-02-15	647	1386053	1987-02-28

(1)	(2)	(3)	(1)	(2)	(3)
618	1386356	1987-02-28	701	1397967	1987-03-31
649	1386760	1987-03-15	702	1398565	1987-03-31
650	1386962	1987-03-15	703	1399261	1987-03-31
651	1387055	1987-03-15	704	1399365	1987-03-31
652	1387156	1987-03-15	705	1399567	1987-03-31
653	1387257	1987-02-28	706	1399870	1987-03-31
654	1387358	1987-03-15	707	1399971	1987-03-31
655	1387661	1987-03-15	708	1400021	1987-03-31
656	1387762	1987-02-28	709	1400223	1987-03-31
657	1388156	1987-03-15	710	1400425	1987-01-01
658	1388259	1987-03-15	711	1400526	1987-04-01
659	1388761	1987-03-15	712	1400627	1987-03-31
660	1388865	1987-03-15	713	1401023	1987-03-31
661	1388966	1987-03-15	714	1402328	1987-03-31
662	1389059	1987-03-15	715	1402429	1987-03-31
663	1389362	1987-03-15	716	1402530	1987-03-31
664	1389564	1987-03-15	717	1403128	1987-03-31
665	1389766	1987-03-15	718	1403229	1987-03-31
666	1389867	1987-03-15	719	1404029	1987-03-31
667	1389968	1987-03-15	720	1404130	1987-03-31

[म० सी एम शी/13 . 12]
बी० प० म० मिह, अपर महानिदेशक

S.O. 14.—In pursuance of sub-regulation (1) of Regulation 9 of the Indian Standards Listitation (Certification Marks) Regulations 1955, as amended from time to time, the Indian Standards Institution hereby, notifies that 720 licences, particulars of which are given in the following Schedule, have been renewed during the month of March, 1986.

THE SCHEDULE

Sl. No	CM/ No	Valid upto
(1)	(2)	(3)
682.	1491652	1987-03-15
683.	1391854	1987-03-15
684	1391955	1987-03-15
685	1392048	1987-03-15
686	1392149	1987-03-15
687	1392250	1987-03-15
688	1392351	1987-03-15
689.	1392755	1987-03-31
690	1393252	1987-03-31
691.	1394653	1987-03-31
692	1394759	1987-03-31
692ए	1395559	1987-03-15
693.	1396157	1987-03-31
694	1396258	1987-03-31
695	1396460	1987-03-31
696.	1396561	1987-03-31
697.	1397058	1987-03-31
698	1397159	1987-03-31
699	1397462	1987-03-31
700.	1397765	1987-03-31

(1)	(2)	(3)	(1)	(2)	(3)
25.	0102210	1987-03-31	90	0374344	1987-03-15
26.	0102311	1987-03-31	91.	0374647	1986-03-16
27.	0102412	1987-03-31	92.	0374849	1987-03-15
28.	0103414	1987-03-31	93.	0375245	1987-03-31
29.	0103515	1987-03-31	94.	0376550	1987-03-31
30.	0113316	1987-03-31	95.	0377148	1987-03-31
31.	0113821	1987-03-15	96.	0377350	1987-03-31
32.	0115623	1987-03-31	97.	0377451	1987-03-31
33.	0118427	1987-02-28	98.	0377552	1987-03-31
34.	0160527	1987-03-15	99.	0394552	1987-02-28
35.	0160830	1987-03-31	100.	0400218	1986-10-31
36.	0165032	1987-03-15	101.	0416031	1987-01-31
37.	0171532	1987-12-16	102.	0416132	1986-03-01
38.	0171633	1985-12-16	103.	0421226	1987-02-15
39.	0177746	1987-03-31	104.	0423634	1987-02-28
40.	0187244	1987-03-31	105.	0433536	1986-12-31
41.	0187648	1987-03-15	106.	0437140	1987-02-15
42.	0188953	1987-01-15	107.	0447749	1987-04-15
43.	0193441	1987-03-31	108.	0447850	1987-03-15
44.	0194342	1987-03-31	109.	0467250	1987-03-15
45.	0217429	1986-02-16	110.	0470037	1986-10-01
46.	0217732	1986-12-31	111.	0475249	1986-12-31
47.	0226834	1987-03-31	112.	0480343	1986-03-16
48.	0227331	1986-03-01	113.	0483551	1987-03-15
49.	0230118	1986-04-30	114.	0485252	1987-03-15
50.	0230522	1987-03-31	115.	0490447	1987-02-28
51.	0231726	1987-03-31	116.	0490548	1987-02-28
52.	0245737	1987-03-31	117.	0495861	1987-03-15
53.	0245838	1987-03-31	118.	0496560	1987-03-15
54.	0247842	1986-12-15	119.	0496863	1987-03-15
55.	0247943	1986-12-15	120.	0505030	1987-01-15
56.	0253231	1987-02-15	121.	0505131	1987-02-28
57.	0253736	1986-03-01	122.	0506638	1987-03-15
58.	0257542	1987-03-15	123.	0506739	1987-03-15
59.	0259041	1987-03-15	124.	0506840	1987-03-15
60.	0259142	1987-03-15	125.	0510528	1987-03-15
61.	0259243	1987-03-15	126.	0510629	1987-03-15
62.	0259344	1987-03-15	127.	0522030	1987-03-31
63.	0261937	1987-01-01	128.	0522232	1987-03-31
64.	0269044	1987-11-15	129.	0522434	1987-03-31
65.	0271132	1987-01-31	130.	0526139	1987-03-31
66.	0274542	1987-03-15	131.	0532437	1987-03-15
67.	0285749	1986-12-31	132.	0535544	1987-02-15
68.	0287652	1987-03-31	133.	0535645	1987-02-15
69.	0287854	1987-01-31	134.	0536344	1987-03-31
70.	0292140	1986-03-31	135.	0536647	1987-03-15
71.	0296047	1986-03-15	136.	0537043	1987-03-31
72.	0300618	1986-03-31	137.	0537952	1986-12-31
73.	0301721	1986-03-31	138.	0540537	1987-03-15
74.	0310419	1986-11-30	139.	0551643	1987-02-28
75.	0314932	1986-03-16	140.	0553647	1986-12-31
76.	0324329	1987-03-31	141.	0562446	1986-11-15
77.	0331326	1987-01-31	142.	0563751	1987-03-15
78.	0334736	1987-03-15	143.	0564854	1986-09-30
79.	0335031	1987-03-15	144.	0572348	1987-03-15
80.	0335435	1987-03-15	145.	0589769	1987-02-15
81.	0335738	1987-03-15	146.	0590249	1986-09-15
82.	0336336	1987-03-15	147.	0590552	1987-02-15
83.	0340630	1987-03-31	148.	0590653	1987-02-15
84.	0364947	1987-03-15	149.	0591251	1987-02-28
85.	0370535	1987-02-15	150.	0591655	1987-02-28
86.	0371742	1987-03-31	151.	0592253	1987-03-15
87.	0373039	1987-02-28	152.	0592455	1987-02-28
88.	0373342	1987-03-15	153.	0592556	1987-03-15
89.	0373645	1987-03-15	154.	0594459	1987-03-15
			155.	0595966	1987-03-15
			156.	0597465	1987-03-31
			157.	0599267	1987-03-15
			158.	0600327	1987-03-15

(1)	(2)	(3)	(1)	(2)	(3)
159.	0600428	1987-03-15	225.	0761250	1987-03-15
160.	0602129	1987-03-15	226.	0761351	1987-03-15
161.	603030	1987-03-31	227.	0762656	1987-03-31
162.	0603131	1987-03-31	228.	0764155	1987-03-31
163.	0603636	1986-03-31	229.	0765157	1987-03-31
164.	0603737	1986-03-31	230.	0766361	1987-03-31
165.	0637855	1986-02-28	231.	0766462	1987-03-31
166.	0649155	1987-03-15	232.	0766664	1987-03-31
167.	0650039	1986-10-31	233.	0779269	1986-06-15
168.	0651647	1986-11-15	234.	0783563	1987-02-28
169.	0652245	1986-11-15	235.	0788472	1986-10-31
170.	0654047	1987-03-31	236.	0790055	1987-02-15
171.	0673657	1987-02-15	237.	0803240	1987-01-31
172.	0675560	1987-03-31	238.	0806443	1986-03-31
173.	0676259	1987-02-28	239.	0808957	1986-10-31
174.	0677766	1987-02-28	240.	0830445	1987-01-15
175.	0678364	1987-02-28	241.	0832449	1987-03-15
176.	0678566	1987-02-28	242.	0832550	1987-03-15
177.	0679467	1987-02-28	243.	0835253	1987-01-31
178.	0679568	1987-02-28	244.	0836154	1987-02-15
179.	0679669	1987-02-28	245.	0838966	1987-02-28
180.	0679770	1987-02-28	246.	0839059	1987-02-28
181.	0680654	1987-03-15	247.	0839463	1987-02-31
182.	0680957	1987-02-28	248.	0839665	1987-03-15
183.	0681050	1987-03-15	249.	0841652	1987-03-15
184.	0681252	1987-03-15	250.	0841753	1987-03-15
185.	0682052	1987-03-15	251.	0842048	1987-03-15
186.	0682153	1987-03-15	252.	0842149	1987-03-15
187.	0682355	1987-02-28	253.	0842351	1987-03-15
188.	0682456	1987-02-28	254.	0842755	1987-03-15
189.	0682658	1987-03-15	255.	0842856	1987-03-15
190.	0683054	1987-03-15	256.	0843050	1987-03-15
191.	0683256	1987-03-15	257.	0843151	1987-03-15
192.	0683660	1987-03-15	258.	0843656	1987-03-15
193.	0683862	1987-03-15	259.	0844153	1987-03-15
194.	0684359	1986-12-31	260.	0845155	1987-02-28
195.	0684965	1987-03-15	261.	0847058	1987-03-31
196.	0685260	1986-03-15	262.	0847260	1987-03-15
197.	0685361	1987-03-15	263.	0847361	1987-03-15
198.	0685563	1987-03-15	264.	0847462	1987-03-31
199.	0685765	1987-03-31	265.	0847563	1987-03-31
200.	0688266	1987-03-31	266.	0848363	1987-03-31
201.	0689672	1987-03-31	267.	0849365	1987-03-31
202.	0691356	1986-03-31	268.	0849769	1987-03-31
203.	0691962	1987-30-31	269.	0850047	1987-03-15
204.	0708953	1987-03-31	270.	0850249	1987-03-15
205.	0716750	1987-03-31	271.	0851150	1987-04-01
206.	0723646	1986-09-30	272.	0851251	1987-03-31
207.	0732041	1986-11-15	273.	0851958	1987-03-15
208.	0745757	1987-03-15	274.	0897780	1986-03-15
209.	0750144	1987-03-15	275.	0902848	1986-10-15
210.	0750346	1987-01-31	276.	0910847	1986-11-15
211.	0752249	1987-02-28	277.	0911748	1986-11-15
212.	0753453	1987-02-28	278.	0915453	1986-03-31
213.	0754758	1987-02-28	279.	0922955	1985-12-16
214.	0755154	1987-02-28	280.	0925153	1986-12-31
215.	0756459	1987-02-28	281.	0931754	1987-03-15
216.	0756560	1987-02-28	282.	0933253	1987-01-31
217.	0758160	1987-02-28	283.	0933455	1987-01-31
218.	0758362	1987-02-28	284.	0935560	1986-02-15
219.	0758463	1987-02-28	285.	0935661	1986-02-16
220.	0758867	1987-03-15	286.	0936057	1987-03-15
221.	0758968	1987-03-31	287.	0938263	1987-02-28
222.	0760046	1987-03-15	288.	0941151	1987-02-28
223.	0760248	1987-03-15	289.	0941959	1987-02-15
224.	0760349	1987-03-15	290.	0942456	1987-02-28

(1)	(2)	(3)	(1)	(2)	(3)
291.	0942557	1987-02-28	355.	1044429	1987-03-15
292.	0942961	1987-02-28	356.	1044732	1987-03-15
293.	0943054	1987-02-28	357.	1044833	1987-03-15
294.	0943256	1987-02-28	358.	1045027	1987-03-15
295.	0943458	1987-02-15	359.	1045229	1987-03-15
296.	0943660	1987-02-28	360.	1045936	1987-03-15
297.	0943761	1987-03-15	361.	1046635	1987-03-16
298.	0944359	1987-02-28	362.	1047031	1987-03-15
299.	0944460	1987-02-28	363.	1047334	1987-03-15
300.	0945967	1987-02-28	364.	1047940	1987-03-15
301.	0946060	1987-02-28	365.	1048942	1987-03-15
302.	0946161	1987-02-28	366.	1049439	1987-02-28
303.	0946666	1987-03-31	367.	1049136	1987-03-15
304.	0946767	1986-03-01	368.	1050424	1987-03-15
305.	0947870	1987-03-15	369.	1050525	1987-03-15
306.	0948569	1987-02-28	370.	1050929	1987-03-15
307.	0948872	1987-03-15	371.	1051224	1987-03-15
308.	0949066	1987-03-15	372.	1051729	1986-03-16
309.	0949975	1987-03-15	373.	1052125	1986-03-15
310.	0950556	1987-03-15	374.	1052226	1987-03-15
311.	0950657	1987-03-15	375.	1053430	1986-03-16
312.	0950758	1986-03-15	376.	1053733	1987-03-15
313.	0952560	1987-03-31	377.	1054331	1986-04-01
314.	0956669	1987-03-31	378.	1054937	1986-03-31
315.	0957772	1986-04-01	379.	1056840	1987-03-15
316.	0957873	1987-03-31	380.	1057135	1987-03-15
317.	0957974	1987-03-31	381.	1058137	1986-03-31
318.	0958673	1986-03-31	382.	1058440	1987-03-15
319.	0959271	1986-03-31	383.	1059745	1987-03-31
320.	0959473	1987-03-31	384.	1059846	1987-03-15
321.	0961258	1987-03-31	385.	1060730	1987-03-31
322.	0961359	1987-03-31	386.	1060831	1987-03-31
323.	0972162	1986-05-31	387.	1061833	1987-03-15
324.	0988682	1986-09-30	388.	1067744	1986-04-15
325.	0990164	1987-03-15	389.	1077444	1986-05-15
326.	0991368	1987-01-31	390.	1092642	1986-06-30
327.	0999384	1986-09-30	391.	1093442	1986-06-30
328.	1006724	1985-11-16	392.	1095547	1987-03-31
329.	1007928	1986-11-15	393.	1095749	1987-03-31
330.	1012012	1986-11-30	394.	1100009	1987-03-15
331.	1019632	1986-01-01	395.	1132123	1986-11-30
332.	1026831	1987-03-31	396.	1132224	1985-12-01
333.	1027328	1987-01-15	397.	1134632	1986-11-30
334.	1029433	1987-02-15	398.	1137234	1985-12-16
335.	1030620	1987-02-15	399.	1141023	1986-12-31
336.	1033828	1987-02-15	400.	1141225	1986-12-31
337.	1034224	1987-02-15	401.	1148441	1987-01-15
338.	1034325	1987-02-15	402.	1149443	1986-01-16
339.	1035024	1987-02-15	403.	1150731	1987-01-31
340.	1035832	1987-02-15	404.	1154941	1987-02-15
341.	1036026	1987-02-15	405.	1155842	1987-02-15
342.	1036127	1987-02-15	406.	1156541	1987-03-15
343.	1038434	1987-02-28	407.	1159850	1987-02-15
344.	1038535	1987-02-28	408.	1160431	1987-02-15
345.	1039032	1987-02-28	409.	1160835	1987-02-15
346.	1039234	1987-02-28	410.	1161332	1987-02-15
347.	1039638	1987-02-28	411.	1162536	1987-02-28
348.	1039941	1987-02-28	412.	1162839	1987-02-28
349.	1040118	1987-03-15	413.	1162940	1987-02-28
350.	1040219	1987-03-15	414.	1163033	1986-03-01
351.	1040926	1987-03-15	415.	1163235	1987-02-28
352.	1041221	1987-03-15	416.	1163336	1987-02-28
353.	1042930	1987-03-15	417.	1163740	1987-02-28
354.	1043528	1987-03-15	418.	1163841	1986-03-01
			419.	1163942	1987-02-28
			420.	1164035	1987-02-28

1	2	3	1	2	3
421.	1164136	1987-02-15	487.	1272947	1987-02-15
422.	1164837	1987-02-28	488.	1273242	1987-02-15
423.	1165037	1987-02-28	489.	1273343	1987-02-15
424.	1165239	1987-02-28	490.	1273545	1987-02-15
425.	1165441	1987-02-28	491.	1273949	1987-02-15
426.	1165542	1987-02-28	492.	1274042	1987-01-31
427.	1166342	1987-02-28	493.	1274345	1987-02-15
428.	1166443	1987-02-28	494.	1275650	1987-02-15
429.	1166645	1987-02-28	495.	1275751	1987-02-15
430.	1167344	1987-03-15	496.	1276349	1987-01-31
431.	1167445	1987-03-15	497.	1276551	1987-01-31
432.	1167546	1987-03-15	498.	1276652	1987-01-31
433.	1167647	1987-03-15	499.	1277048	1987-02-28
434.	1167748	1987-03-15	500.	1278353	1987-02-28
435.	1168043	1987-03-15	501.	1278855	1987-02-15
436.	1168447	1987-03-15	502.	1279052	1987-02-28
437.	1168649	1987-03-15	503.	1279355	1987-02-28
438.	1168851	1987-03-15	504.	1279759	1986-03-01
439.	1169045	1986-03-16	505.	1279961	1986-03-01
440.	1169146	1987-03-15	506.	1280340	1987-02-28
441.	1169348	1987-03-15	507.	1280845	1987-02-28
442.	1170636	1986-03-16	508.	1281241	1987-02-28
443.	1170737	1986-03-16	509.	1281948	1987-02-28
444.	1170838	1987-03-15	510.	1282142	1987-02-28
445.	1171739	1987-03-15	511.	1282243	1987-02-28
446.	1172539	1987-03-31	512.	1282849	1987-02-28
447.	1172640	1987-03-31	513.	1282950	1987-02-28
448.	1172842	1987-03-31	514.	1283144	1987-02-28
449.	1173743	1986-03-31	515.	1283346	1987-02-28
450.	1173945	1987-03-15	516.	1283548	1987-02-28
451.	1174038	1987-03-15	517.	1283649	1987-02-28
452.	1174139	1987-03-15	518.	1284045	1987-02-28
453.	1174341	1987-03-31	519.	1284247	1987-03-15
454.	1174745	1987-03-31	520.	1284651	1987-03-15
455.	1175646	1987-03-31	521.	1284954	1987-03-15
456.	1175747	1987-12-31	522.	1285552	1987-03-15
457.	1176345	1986-03-15	523.	1285754	1987-03-15
458.	1176547	1987-03-31	524.	1285855	1987-03-15
459.	1192242	1987-03-15	525.	1285956	1987-03-15
460.	1195450	1987-03-15	526.	1286150	1987-03-15
461.	1197353	1986-06-15	527.	1286251	1987-03-15
462.	1198456	1986-06-15	528.	1286352	1987-03-15
463.	1220827	1986-08-15	529.	1286554	1987-03-15
464.	1221526	1986-06-30	530.	1286655	1986-03-16
465.	1250735	1986-11-30	531.	1286857	1987-03-15
466.	1253236	1986-12-15	532.	1287253	1987-03-15
467.	1254238	1986-12-15	533.	1287455	1987-03-15
468.	1254844	1986-12-15	534.	1287657	1987-03-15
469.	1258448	1986-12-31	535.	1288356	1987-03-15
470.	1260940	1987-03-15	536.	1288558	1987-03-15
471.	1261841	1987-03-15	537.	1289459	1987-03-15
472.	1262338	1986-12-31	538.	1289560	1987-03-15
473.	1263340	1987-01-15	539.	1290010	1987-03-15
474.	1263441	1987-03-15	540.	1290343	1987-05-31
475.	1263542	1987-01-15	541.	1290616	1987-03-15
476.	1265950	1987-01-15	542.	1290747	1987-03-15
477.	1267550	1987-01-31	543.	1290949	1987-03-15
478.	1267752	1986-12-31	544.	1291042	1987-03-31
479.	1267853	1987-01-31	545.	1291547	1987-03-15
480.	1267954	1987-01-31	546.	1291648	1987-03-31
481.	1268047	1987-01-31	547.	1293147	1986-07-31
482.	1268855	1987-01-31	548.	1293248	1987-03-31
483.	1270034	1987-01-31	549.	1293854	1987-03-31
484.	1270135	1987-01-31	550.	1294351	1987-03-31
485.	1271339	1987-01-31	551.	1294452	1987-03-31
486.	1272745	1987-02-15	552.	1294553	1987-03-15

1	2	3	1	2	3
553.	1295555	1987-03-31	618.	1377860	1987-02-28
554.	1295656	1987-03-31	619.	1378054	1987-02-28
555.	1295959	1987-03-31	620.	1378559	1987-02-28
556.	1296254	1986-04-01	621.	1378761	1987-02-28
557.	1296355	1987-03-31	622.	1378862	1987-02-28
558.	1297559	1987-03-31	623.	1379864	1986-03-01
559.	1297660	1987-03-31	624.	1380243	1987-02-28
560.	1298248	1987-03-31	625.	1380344	1987-02-28
561.	1298460	1987-03-31	626.	1380546	1987-02-28
562.	1298561	1987-03-31	627.	1381245	1986-03-01
563.	1298662	1987-03-31	628.	1381447	1987-02-28
564.	1298763	1986-03-31	629.	1381750	1987-02-28
565.	1299058	1987-03-31	630.	1381952	1987-02-28
566.	1299159	1986-03-31	631.	1382045	1987-02-28
567.	1299462	1987-03-31	632.	1382449	1987-02-28
568.	1300017	1987-03-15	633.	1382651	1987-02-28
569.	1300219	1986-03-31	634.	1382752	1987-02-28
570.	1304126	1987-03-31	635.	1382853	1987-02-28
571.	1310222	1986-05-15	636.	1383047	1986-02-28
572.	1348853	1986-10-15	637.	1383350	1986-03-01
573.	1355850	1985-12-31	638.	1383451	1987-02-28
574.	1355951	1986-12-31	639.	1383552	1987-02-28
575.	1356852	1986-12-31	640.	1383855	1987-02-28
576.	1357046	1986-12-31	641.	1384352	1987-02-28
577.	1361542	1987-01-15	642.	1384453	1987-02-28
578.	1361643	1987-01-15	643.	1385455	1987-02-28
579.	1362948	1987-01-15	644.	1385051	1987-02-28
580.	1363041	1987-01-15	645.	1385556	1987-02-28
581.	1364649	1987-01-15	646.	1385657	1987-02-28
582.	1364750	1987-01-15	647.	1386053	1987-02-28
583.	1366047	1986-02-01	648.	1386356	1987-02-28
584.	1366552	1987-01-31	649.	1386760	1987-03-15
585.	1367756	1987-01-31	650.	1386962	1987-03-15
586.	1367857	1987-01-31	651.	1387055	1987-03-15
587.	1368455	1986-02-01	652.	1387156	1987-03-15
588.	1369457	1987-01-31	653.	1387257	1987-02-28
589.	1369861	1987-01-31	654.	1387358	1987-03-15
590.	1370442	1987-02-15	655.	1387661	1987-03-16
591.	1370543	1987-02-15	656.	1387762	1987-02-28
592.	1370644	1987-02-15	657.	1388158	1987-03-15
593.	1371040	1987-02-15	658.	1388259	1987-03-15
594.	1371141	1987-02-15	659.	1388764	1986-03-16
595.	1371747	1987-02-15	660.	1388865	1986-03-15
596.	1372143	1987-02-15	661.	1388966	1987-03-15
597.	1372648	1987-02-15	662.	1389059	1987-03-15
598.	1372749	1987-02-15	663.	1389362	1987-03-15
599.	1372850	1987-02-15	664.	1389564	1987-03-15
600.	1373448	1987-02-15	665.	1389766	1986-03-15
601.	1374854	1987-02-28	666.	1389867	1987-03-15
602.	1375048	1987-03-15	667.	1389968	1986-03-16
603.	1375250	1987-02-28	668.	1390145	1987-03-15
604.	1375553	1987-02-15	669.	1390347	1987-03-15
605.	1375654	1987-02-28	670.	1390448	1987-03-15
606.	1375755	1987-02-28	671.	1390549	1987-03-15
607.	1375856	1987-02-28	672.	1390650	1987-03-15
608.	1375957	1987-02-28	673.	1390751	1987-03-15
609.	1376252	1987-02-15	674.	1390852	1987-03-15
610.	1376353	1987-02-28	675.	1390953	1987-03-15
611.	1376858	1987-02-28	676.	1391046	1987-03-15
612.	1376959	1987-02-28	677.	1391147	1987-03-15
613.	1377254	1987-02-28	678.	1391248	1987-03-15
614.	1377355	1987-02-28	679.	1391349	1987-03-15
615.	1377557	1987-02-28	680.	1391450	1987-03-15
616.	1377658	1987-02-28	681.	1391551	1987-08-31

1	2	3
682.	1391652	1987-03-15
683.	1391854	1987-03-15
684.	1391955	1987-03-15
685.	1392048	1987-03-15
686.	1392149	1987-03-15
687.	1392250	1987-03-15
688.	1392351	1987-03-15
689.	1392755	1987-03-31
690.	1393252	1987-03-31
691.	1394658	1987-03-31
692.	1394759	1987-03-31
692A	1395559	1987-03-15
693.	1396157	1987-03-31
694.	1396258	1987-03-31
695.	1396460	1987-03-31
696.	1396561	1987-03-31
697.	1397058	1987-03-31
698.	1397159	1987-03-31
699.	1397462	1987-03-31
700.	1397765	1987-03-31
701.	1397967	1987-03-31
702.	1398565	1987-03-31
703.	1399264	1987-03-31
704.	1399365	1987-03-31
705.	1399567	1987-03-31
706.	1399870	1987-03-31
707.	1399971	1986-03-31
708.	1400021	1986-03-31
709.	1400223	1986-03-31
710.	1400425	1986-04-01
711.	1400526	1986-04-01
712.	1400627	1986-03-31
713.	1401023	1987-03-31
714.	1402328	1987-03-15
715.	1402429	1987-03-31
716.	1402530	1987-03-31
717.	1403128	1987-03-31
718.	1403229	1987-03-31
719.	1404029	1987-03-31
720.	1404130	1987-03-31

[N : CMD/13 : 12]
B.N. SINGH, Addl. Director General

भारत संसाधन विभास मंत्रालय

(संस्कृति विभाग)

नई दिल्ली, 16 दिसम्बर, 1987

का०आ० 15 :— मिनेमेटोग्राफ (प्रमाणन) नियमाली, 1983 के नियम 43 के साथ पठित मिनेमेटोग्राफ अधिनियम, 1952 (1952 का 37) की धारा 5 अंश (5) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करत हुए केंद्रीय सरकार श्रीमती भनमोहिनी महान, डॉ-11/69, पंडारा रोड नई दिल्ली-110003 को फिल्म प्रमाणन अधीन व्यापारिकरण के सबस्य के स्पष्ट में अपने आवेदनों तक नक्लाल नियुक्त करती है।

[फाइल सं० 817/1/87-एफ सी]
मनप्रभान मिट्ट, संयुक्त सचिव

MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
(Department of Culture)

New Delhi, the 16th December, 1987

S.O. 15.—In exercise of the powers conferred by Section 5D(5) of the Cinematograph Act, 1952 (37 of 1952), read with Rule 43 of the Cinematograph (Certification) Rules,

1983, the Central Government hereby appoints Smt. Manmohini Sehgal of D-II/69, Panda a Road, New Delhi-110003, as member of the Film Certification Appellate Tribunal (FCAT), with immediate effect, until further orders.

[File No. 817/1/87-FC]
MAN MOHAN SINGH, Jt. Secy.

जन भूतन परिवहन मंत्रालय

(नौवहन पक्ष)

नई दिल्ली, 17 दिसम्बर, 1987

(वाणिज्य नौवहन)

का०आ० 16 :—नाविकों के लिए गद्दीय कल्याण बोर्ड नियमाली 1963 के नियम 3 अंश 4 के साथ पठित वर्णित नौवहन अधिनियम 1954 (1954 के 44 में) की धारा 218 की इन्हारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए तथा इन मंत्रालय की समर्त्तव्यक अधिसूचना विनाक 15 मई, 1987 के अनुक्रम में केंद्रीय सरकार श्री वी.एम.जोग के स्थान पर येट इस्टर्न शिपिंग कंपनी अम्बर्झ के उपाध्यक्ष श्री एन.ई.पटेलका लिए जहाज-मालिकों के प्रतिनिवित के रूप में नियुक्त करती है।

[फाइल सं० ८०० इन्सू.डॉल्यू/एम.डॉल्यू/८५-४८८] राम स्टेंहो, अपर सचिव

MINISTRY OF SURFACE TRANSPORT
(Shipping Wing)

New Delhi, the 17th December, 1987

(Merchant Shipping)

S.O. 16.—In exercise of the powers conferred by sub-section (i) of section 218 of the Merchant Shipping Act, 1958 (44 of 1958), read with rules 3 & 4 of the National Welfare Board for Seafarers Rules, 1963 and in continuation of this Ministry's notification of even No. dated 15th May, 1987, the Central Government hereby include Shri N. E. Bombay as the representative of shipowners in place of Shri V. M. Jog.

[File No. SW/MWS-33/85-MT]
RAM SANEHJI, Under Secy.

ऊर्जा मंत्रालय

(कारबा विभाग)

नई दिल्ली, 11 दिसम्बर, 1987

शुद्धार्थ

का०आ० 17 :— भारत के राजाव, भाग 2, छट 3, उम्बंड (ii) नार्थ 8 अगस्त, 1987 में पुल सं० 2581 से 2582 पर प्रकाशित भारत सरकार के उर्जा मंत्रालय (कारबा विभाग) का अधिसूचना का०आ० सं० 2000 भारत 22 जुलाई, 1987 में, पृष्ठ 2382 पर, अनुसूची में :-

- (1) 'दिवूनवाड' शब्द के, जहां कही वह शब्द आ जाता है, व्यावर पर "डेंकलवाड" शब्द पढ़े।
- (2) क्रम संख्या 1 में, स्टेंब 5 के नीचे "वन्द्रायर" शब्द के स्थान पर "वन्द्र्युर" शब्द पढ़े।
- (3) क्रम संख्या 2 के स्टेंब 6 के नीचे "676 39" अंकों के स्थान पर "673. 39" अंक पढ़े।
- (4) क्रम संख्या 3 के स्टेंब 2 के नीचे "कुणाद" शब्द के स्थान पर "कुणाड" शब्द पढ़े।

सामाजिक में:-

क-ख-ग में 'केबा' शब्द के स्थान पर 'रेबा' शब्द पढ़े और च क-में 'ग्रामकुणाद' शब्दों के स्थान पर 'ग्राम कुणाड' शब्द पढ़े।

[सं० 43015/9/87-सं० ए/एल एम.डॉल्यू[
बी०वी० राम, प्रबंधन विभाग]

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय

नई दिल्ली, 18 दिसम्बर, 1987

का० आ० 18.—केन्द्रीय सरकार, तेवे उद्योग विभाग अधिनियम, 1974 (1974 का 47) की धारा 3 की उपधारा 3 के खण्ड (ग) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए आयोजित इडिया लिपिटेक के प्रध्य एवं प्रबंध निदेशक एवं ऐसे चालिहा को तेवे उद्योग में लगे यारें-रेण द्वारा घारांख अवगत केन्द्रीय सरकार द्वारा नियंत्रित तेवे उद्योग विभाग बोर्ड में मेजर जनरल ऐसे सी एन जनरल के स्थान पर प्रतिनिधित्व करते के लिए यास्य के स्थान में नहान ग्रामीण नारीगां दो वर्ड में अन्धिक अवधि के लिए नियुक्त करती है।

[मं० 7/9/85-विष. II]

ऐस० गोपालकृष्णन, नियंत्रित (विष)

MINISTRY OF PETROLEUM AND NATURAL GAS

New Delhi, the 18th December, 1987

S.O. 18.—In exercise of the powers conferred by clause (c) of sub-section (3) of section 3 of the Oil Industry Development Act, 1974 (47 of 1974), the Central Government hereby appoints, with immediate effect and for a period not exceeding two years, Shri S. Chaliha, Chairman and Managing Director, Oil India Limited, as a Member of the Oil Industry Development Board to represent, the corporations owned or controlled by the Central Government engaged in the oil industry, vice Maj. Gen. S.C.N. Jatar.

[No. 7/9/85-Fin II]

S. GOPALAKRISHNAN, Director (Finance)

शहर भवालय

नई दिल्ली, 18 दिसम्बर, 1987

का० आ० 19.—केन्द्रीय सरकार एवं द्वारा यह अधिसूचित करती है कि केन्द्रीय रेशम बोर्ड अधिनियम, 1948 (1948 का 61) की धारा 4 की उपधारा (3) के खण्ड (ग) के अनुसार में, राज्य सभा ने 27-11-87 को संघीय शिरोमणी द्वारा राज्य सभा कुण्ठ तथा भूवेश्वर कलिता, जिनका रेशम बोर्ड के सदस्य के स्थान में राजीनाम संभाल हो गया है, के स्थान पर मर्दीनी गुलाम रायूल भाट्टो तथा एच० हनुमतलाया को केन्द्रीय रेशम बोर्ड का महस्य नियंत्रित किया है। अतः अब, केन्द्रीय सरकार, केन्द्रीय रेशम बोर्ड अधिनियम 1948 (1948 का 61) की धारा 4 की उपधारा 3 द्वारा प्रदत्त शक्तियों द्वा० प्रयोग करते हुए भारत सरकार के अपूर्ण तथा वस्त्र मंत्रालय की अधिकृतवादा गा० का० आ० 517(अ) विनांक 9 जूनाई, 1935 में नियोजित संगोष्ठी करती है, अर्थात्—

उक्त अधिसूचना में क्रमांक-3 पर दी गई प्रतिष्ठित के बाद तथा क्रमांक 4 से पहले नियोजित रखा जाएगा, अर्थात्—

- | | |
|-------------------------------|---------------------------------------|
| 3(क) श्री गुलाम रायूल भाट्टो, | इस अधिनियम की धारा 4(3) |
| संसद भवन, | (ग) के अन्तर्गत संसद द्वारा नियंत्रित |
| 13, कैनिंग लेन, | |
| नई दिल्ली। | |
| 3(छ) श्री एच. हनुमतलाया, | |
| संसद भवन, | |
| 12 मीना बाग, | |
| नई दिल्ली। | |

[का० सं० 25011/3/85-रेशम]

आ० 20 अटर्जी, संग्रह विभाग आयुक्त (हस्ताक्षण)

MINISTRY OF TEXTILES

New Delhi, the 18th December, 1987

S.O. 19.—The Central Government hereby notify that in pursuance of clause (c) of sub-section (3) of section 4

of the Central Silk Board Act, 1948 (61 of 1948), Rajya Sabha on 27-11-87, has elected S/Shri Ghulam Rasool Matto and H. Hanumanthappa to be members of Central Silk Board, vice S/Shri Veerashetty Moglappa Kushnoor and Bhubanewar Kalita whose terms as member of Central Silk Board have since expired. Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section 3 of section 4 of the Central Silk Board Act, 1948 (61 of 1948), the Central Government makes the following amendment in the Notification of Government of India in the Ministry of Supply and Textiles S.O. No. 517(E) dated the 9th July, 1985, namely :—

In the said notification, after the entry at serial number 3 and before serial number 4, the following shall be inserted, namely:—

3(a) Shri Ghulam Rasool Matto,
Member of Parliament,
13, Canning Lane,
New Delhi.

3(b) Shri H. Hanumanthappa,
Member of Parliament,
12, Meena Bagh,
New Delhi.

} Elected by Parliament
under section 4(3)(c)
of the Act.

[File No. 25011/8/85-Silk]
R. CHATTERJEE, Jr. Development Commissioner
(Handloom.)

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय

(स्वास्थ्य विभाग)

नई दिल्ली, 7 दिसम्बर, 1987

का० आ० 20.—भारतीय उपचारी परिषद ने, भारतीय उपचारी परिषद अधिनियम, 1947 (1947 का 48) की धारा 10 की उपधारा (2) के अनुग्रह में 16 अप्रैल, 1983 को हुई अपनी देख भूति किया है कि उसमें वित्तिविष्ट की गई असृता उक्त अधिनियम के प्रयोजन के लिए आवश्यक प्राप्त असृता हैगी ;

और उक्त अधिनियम की धारा 15 की उपधारा (1) हात यथा अपेक्षित भारतीय उपचारी परिषद की अधिकृतवाद संज्ञा 11-1/83 आई, एन. सी., तारीख 27 जून, 1983 के साथ राजपत्र में प्रकाशित फर तिया गया है ;

अतः अब उक्त, केन्द्रीय सरकार उक्त अधिनियम की धारा 15 की उपधारा (2) के अनुग्रह में उक्त अधिनियम की अनुशूल्य में निम्नलिखित और संशोधन करती है ताकि इसे उक्त धूप्रणा के अनुमान दाया जा सके, अपेक्षा :—

उक्त अधिनियम की अनुशूल्य में, धारा 1 में “क—सामाजि उपचारी” शीर्षक के अन्तर्गत, क्रम संख्या 50 और उसे संबंधित प्रतिष्ठितों के पश्चात् निम्नलिखित क्रम संख्याएं और प्रतिष्ठितों जोड़ो जाएंगी, अथवा

51 केरल विश्वविद्यालय, तिवेन्द्रम (जव 21 मार्च, 1972 की या उक्ते पश्चात् दी गई)।

“52. पंजाब विश्वविद्यालय, पट्टीपाट (जव 1 मार्च, 1977 की या उक्ते पश्चात् दी गई)।

[संख्या धी. 14015/1/(ii)/81--पी. एम. एम]

MINISTRY OF HEALTH & FAMILY WELFARE

(Dept. of Health)

New Delhi, the 7th December, 1987

S.O. 20.—Whereas the Indian Nursing Council has, by a resolution passed at a meeting held on the 16th April 1983, in pursuance of sub-section (2) of section 10 of the Indian Nursing Council Act, 1947 (48 of 1947), declared

that the qualification specified therein shall be a recognised qualification for the purpose of the said Act;

And, whereas the said resolution has been published in the Official Gazette with the notification of the Indian Nursing Council, No. 11-1/83-INC, dated the 27th June, 1983 as required by sub-section (1) of section 15 of the said Act;

Now, therefore, in pursuance of sub-section (2) of section 15 of the said Act, the Central Government hereby makes the following further amendments in the Schedule to the said Act, so as to bring it into accord with the said declaration namely :—

In the Schedule to the said Act, in part I, under the Heading "A-General Nursing", after serial number 50 and the entries relating thereto, the following serial numbers and entries shall be added, namely :—

- "51. University of Kerala, Trivandrum (when granted on or after the 21st March, 1972)."
- 52. University of Punjab, Chandigarh (when granted on or after the 1st March, 1977)."

[No. V. 14015/1(ii)/81-PMS]

का. आ. 21.—भारतीय उच्चर्या परिषद ने, भारतीय उच्चर्या परिषद अधिनियम, 1947 (1947 का 48) की (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त अधिनियम कहा गया है) धारा 10 के अनुसरण में 5 अर्थात् 1980 को हुई अपनी बैठक में पारित प्रस्ताव द्वारा, यह घोषित किया है कि कालेज और नियंत्रण, नई दिल्ली की नीचे स्तम्भ (1) में विनियोग सम्बन्धीय अर्हताओं का नाम शैक्षणिक सत्र, 1980 से उसके स्तम्भ (2) में विनियोग सम्बन्धीय नाम में बदल दिया जाएः—

(1) (2)

- | | |
|---------------------------------|------------------------------------|
| 7. उपचर्या प्रशासन में डिप्लोमा | } नियंत्रण और प्रशासन में डिप्लोमा |
| 8. नियंत्रण ट्रॉफी डिप्लोमा | |
| 9. मिडवाइक ट्रॉफी डिप्लोमा | |

अतः अब, केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 15 की उपधारा (2) के अनुसरण में, उक्त अधिनियम की अनुवूची का निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अनुवूची के भाग II में सारणी का क्रम संख्या 2 के गामे (1) स्तम्भ 2 में, मद 9 के पश्चात् निम्नलिखित प्रविधि अनः स्वापित की जाएँगी, अर्थात् :—

"(जब 1980 को या उससे पहले हो गई।)"

(2) स्तम्भ 2 में, मद 9 के पश्चात् निम्नलिखित प्रविधि अनः स्वापित की जाएँगी, अर्थात् :—

"10 उपचर्या और प्रशासन में डिप्लोमा।"

[सं. घो. 14015/1/(i)/81-पी. एम. एस.]

S.O. 21.—Whereas the Indian Nursing Council has, in pursuance of section 10 of the Indian Nursing Council Act, 1947 (48 of 1947), (hereinafter referred to as the said Act), by a resolution passed at its meeting held on the 5th April, 1980, declared that the nomenclature of recognised qualifications of the College of Nursing, New Delhi, specified in column (1) below be changed with effect from academic session 1980, to those specified in column (2) thereof :—

(1) (2)

- | | |
|---------------------------------------|--|
| 7. Diploma in Nursing Administration, | } Diploma in Nursing Education and Administration. |
| 8. Nursing Tutors Diploma, | |
| 9. Midwife Tutors Diploma. | |

Now, therefore, in pursuance of sub-section (2) of section 15 of the said Act, the Central Government hereby makes the following amendments to the Schedule to the said Act, namely :—

In part II of the said schedule, against serial number 2 of the Table,—(i) in column 2, after item 9, the following entry shall be inserted, namely :—

"(When granted on or before 1980); (ii) in column 2, after item 9, the following entry shall be inserted, namely :—

10. Diploma in Nursing Education and Administration."

[No. V. 14015/1(i)/81-PMS]

का. आ. 22.—भारतीय उच्चर्या परिषद ने, भारतीय उच्चर्या परिषद अधिनियम, 1947 (1947 का 48) की (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त अधिनियम कहा गया है) धारा 10 के अनुसरण में 27 मार्च, 1985 को हुई अपनी बैठक में पारित प्रस्ताव द्वारा यह घोषित करती है कि अंतिम भारतीय स्वास्थ्य विभाग और लोक स्वास्थ्य संस्थान, कालकाता की नीचे स्तम्भ (1) में विनियोग सम्बन्धीय अर्हताओं का नाम 15 अगस्त, 1975 से इसके स्तम्भ (2) में विनियोग सम्बन्धीय नाम में बदल दिया जाएः—

(1)

(2)

लोक स्वास्थ्य उपचर्या में प्रमाण पत्र लोक स्वास्थ्य उपचर्या में डिप्लोमा

अतः अब केन्द्रीय सरकार उक्त अधिनियम की धारा 15 की उपधारा (2) के अनुसरण में, उक्त अधिनियम की अनुवूची का निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अनुवूची के भाग II में क्रम में, 7 के स.मने स्तम्भ 2 में की प्रविधि के स्थान पर निम्नलिखित प्रविधि रखी जाएँगी, अर्थात् :—
"लोक स्वास्थ्य उपचर्या में डिप्लोमा"

(जब 15 अगस्त, 1975 को या उसके पश्चात् दिया गया।)"

[सं. घो. 14015/1(iii)/81-पी. एम. एस.]

S.O. 22.—Whereas the Indian Nursing Council has, in pursuance of section 10 of the Indian Nursing Council Act, 1947 (48 of 1947), (hereinafter referred to as the said Act), by a resolution passed at its meeting held on the 27th March, 1985, declared that the nomenclature of recognised qualification of the All India Institute of Hygiene and Public Health, Calcutta specified in column (1) below be changed with effect from 15th September, 1975, to those specified in column (2) thereof :

(1)

(2)

Certificate in Public Health Nursing.

Diploma in Public Health Nursing.

Now, therefore, in pursuance of sub-section (2) of section 15 of the said Act, the Central Government hereby makes the following amendments to the Schedule to the said Act, namely :—

In part II of the said Schedule, against serial number 7, in column 2, for the entry, the following entry shall be substituted, namely :—

"Diploma in Public Health Nursing
(When granted on or after the 15th September, 1975)."

[No. V. 14015/1/(iii)/81-PMS]

मई दिनी ९ दिसंबर १९८७

का आ १० —वन्न -चिकित्सक अधिनियम १९४८ (१९४९ का १०) की धारा ३ के खण्ड (ड.) के अनुसरण में वर्तन गत्य भवार द्वारा डा. जोप टी ममपिल्ली सदूचन निदानक, अयुविज्ञान शिक्षा, तिचेन्द्रम बी ४ अगस्त, १९८७ में ८ अगस्त १९८८ तक तक डा. पी. आई. जान के रथान पर भारतीय दत्त निवि सा परिषद का मदस्य नामनिविष्ट किया गया है।

अत अब, कल्दीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा ६ की उपधारा (१) के मध्य पठित धारा ३ के खण्ड (ड.) के अनुसरण में भारत भवार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की अधिसूचना में या का आ ४३०, तरीख २१ जनवरी, १९८४ का निम्नलिखित संशोधन दर्शनी है, अर्थात् —

उक्त अधिसूचना में धारा ३ के परन्तु का माप पठित खण्ड (ड.) के अधीन नामित 'शीर्षक' के अधीन, व्रम सदूचा ३ और उम्म संशोधित प्रतिष्ठितों के स्थान पर निम्नलिखित रखा जाएगा, जर्नल "३, डा. जोप टी नाम विनिविष्ट के रूप १ अगस्त, १९८७ में भविल्ली सरकार ८ अगस्त, १९८८ तक"

[संख्या वी १२०१३/२/८७—पी एम एम]
जी जी क. नगर, अवर दिनव

New Delhi, the 9th December, 1987

SO 23—Whereas in pursuance of clause (e) of section 3 of the Dentists Act, 1948 (16 of 1948), Dr Jose T Mampilly, Joint Director of Medical Education, Trivandrum has been nominated to be a member of the Dental Council of India by State Government of Kerala with effect from the 4th August, 1987 to 8th August, 1988, vice Dr P I John,

Now, therefore, in pursuance of clause (e) of section 3 read with sub-section (4) of section 6 of the said Act, the Central Government hereby makes the following amendment in the notification of the Government of India in the Ministry of Health and Family Welfare, No SO 430 dated the 24th January, 1984 namely —

In the said notification, under the heading "Nominated under clause (e) read with the proviso to section 3", for serial number ३ and the entries relating thereto, the following shall be substituted, namely —

"३, Dr Jose Mampilly	Nominated Kerala Government	4th August 1987 to 8th August, 1988"
----------------------	-----------------------------	---

[No V 12013/2/87 PMS]
G G K NAIR, Under Secy

मई दिनी, १८ दिसंबर, १९९७

का आ २४ —भारतीय आयुविज्ञान परिषद अधिनियम १९५६ (१९५६ का १०२) की धारा ३ की उपधारा (१) के खण्ड (ग) के उपवर्धी के अनुसरण में डा. वेन्न धीरजनल इमैंड को गुजरात गत्य से इस अधिसूचना के जारी तिए जान वी तरीके से, भारतीय आयुविज्ञान परिषद का मदस्य निर्वाचित किया गया है।

अब वेन्नीय सरकार उक्त अधिनियम की धारा ३ की उपधारा (१) के अनुसरण में भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्रालय की ९ जनवरी, १९६० की अधिसूचना सदूचा (का आ १३८) में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् —

उक्त अधिसूचना में धारा ३ की उपधारा (१) के खण्ड (ग) के अधीन निर्वाचित 'शीर्षक' के अधीन व्रम सदूचा १३ और उम्म संशोधित

प्रतिष्ठितों के पाप्तात् निम्नलिखित कम संझा और प्रतिष्ठिता अन्त स्थापित की जायेगी, अर्थात् —

१४ डा. केतन धीरजनल इमैंड,
६, पूनम अपार्टमेंट,
पार्सीटोन निल कोलेज के सामने
अम्बावाडी, अहमदाबाद-३८००१५।

[संख्या वी ११०१३/५/८६—एम ई (पी)]

New Delhi, the 18th December, 1987

SO 24—Whereas in pursuance of the provision of clause (c) of sub-section (1) of section 3 of the Indian Medical Council Act, 1956 (102 of 1956) Dr Ketan Dhirajlal Desai has been elected from the Gujarat State to be a member of the Medical Council of India with effect from the date of issue of this Notification.

Now, therefore, in pursuance of sub section (1) of section 3 of the said Act, the Central Government hereby makes the following amendment in the Notification of the late Ministry of Health No SO 138, dated the 9th January, 1960, namely —

In the said notification under the heading "Elected under clause (c) of sub-section (1) of section 3" after serial number १३ and entries relating thereto, the following serial number and entries shall be inserted, namely —

"14 Dr. Ketan Dhirajlal Desai,
6, Poonam Apartment,
Opposite Poly-Technic College,
Ambawadi, Ahmedabad-380015"

[No V. 11013/५/८६-MH(P)]

का आ २५ —भारतीय आयुविज्ञान परिषद अधिनियम, १९५६ (१९५६ का १०२) की धारा ३ की उपधारा (१) के खण्ड (ग) के उपवर्धी के अनुसरण में डा. जे के अप्रवान को उत्तर प्रदेश गत्य से इस अधिसूचना के जारी किए जाने की तरीके से, भारतीय आयुविज्ञान परिषद का मदस्य निर्वाचित किया गया है।

अब वेन्नीय सरकार उक्त अधिनियम की धारा ३ की उपधारा (१) के अनुसरण में भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्रालय की ९ जनवरी, १९६० की अधिसूचना सदूचा ५-१३/५९-एम-१ (का आ १३९) में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् —

उक्त अधिसूचना में धारा ३ की उपधारा (१) के खण्ड (ग) के अधीन निर्वाचित "शीर्षक" के अधीन व्रम सदूचा ९ और उम्म संशोधित प्रतिष्ठितों के स्थान पर निम्नलिखित कम सदूचा और प्रतिष्ठिता रखी जायेगी, अर्थात् —

९ डा. जे के अप्रवान,
द्वारा श्री एम ई अप्रवान
भास मन्डी
भुगदाबाद (उत्तर प्रदेश)

[संख्या वी ११०१३/१७/८६—एम ई (पी)]

SO 25—Whereas in pursuance of the provision of clause (c) of sub section (1) of section 3 of the Indian Medical Council Act, 1956 (102 of 1956) Dr J K Agrawal has been elected from the Uttar Pradesh State to be a member of the Medical Council of India with effect from the date of issue of this notification,

Now, therefore, in pursuance of sub-section (1) of Section 3 of the said Act, the Central Government hereby makes the following amendment in the Notification of the late Ministry of Health SO No 138 (No ५-१३/५९ MI) dated the 9th January, 1960, namely —

In the said Notification under the heading "Elected under clause (c) of sub section (1) of section 3", for serial number

ber 9 and entries relating thereto the following serial number . . . and entries shall be substituted, namely :—

"9. Dr. J. K. Agarwal,
C/o Shri S. K. Agarwal,
Mandi Bans,
Moradabad, U.P."

[F. No. V. 11013/17/86-ME(P)]

का आ. 26.—भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद् अधिनियम, 1956 (1956 का 102) की धारा 3 की उपधारा (1) के बाटु (ब) के उपवर्णों के अनुसरण में प्रो. हीरेश चन्द्र को भोपाल विश्वविद्यालय, भोपाल की सीनेट द्वारा इस अधिसूचना के जारी किए जाने की तरीख से, भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद् का सदस्य निर्वाचित किया गया है।

अब केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (1) के अनुसरण में, भारत सरकार के भवत्वी स्वास्थ्य भंत्रालय की अधिसूचना संख्या का० आ० (38 सं० 5-13/59एम. ई.) तारीख 9 जनवरी, 1960 में निर्वाचित और संषोधन करती है, अर्थि :—

उक्त अधिसूचना में "धारा 3 की उपधारा (1) के बाटु (ब) के अधीन निवाचित" शीर्षक के अधीन क्रम सं. 48 और उसमें संबंधित प्रविष्टि के स्थान पर, निर्वाचित क्रम संख्या और प्रविष्टि एवं जारी, अप्राप्त।—

"48. प्रो. हीरेश चन्द्र,
मंत्रालयाध्यक्ष, चिकित्सा संकाय,
गांधी भैषिकल कालेज,
भोपाल

[संख्या वी. 11013/71/87-एम. ई. (पी.)]
आर. श्रीनिवासन, अवर सचिव

S.O. 26.—Whereas in pursuance of the provisions of clause (b) of Sub-section (1) of section 3 of the Indian Medical Council Act, 1956 (102 of 1956), Prof. Heeresh Chandra, has been elected by the Senate of Bhopal University to be a member of the Medical Council of India with effect from the date of issue of this notification;

Now, therefore, in pursuance of sub-section (1) of section 3 of the said Act, the Central Government hereby makes the following further amendment in the notification of the Government of India in the late Ministry of Health, No. S.O. 138 (No. 5-13/59-MI), dated the 9th January, 1960, namely :—

In the said notification, under the heading "Elected under clause (b) of sub-section (1) of section 3" for serial number

48 and the entry relating thereto the following serial number and entry shall be substituted, namely :—

"48. Prof. Heeresh Chandra,
Dean of the Faculty of Medicine,
Gandhi Medical College,
Bhopal."

[No. V. 11013/71/87-ME(P)]
R. SRINIVASAN, Under Secy.

उपयोग भंत्रालय

(राज्यन और पेट्रो राज्यन विभाग)

नई विभागी, 17 दिसंबर, 1987

का आ. 27.—यह: पेट्रोलियम और अनिंज पाइप लाईन (भूमि के उपयोग के अधिकार का अर्जन) अधिनियम 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (9) के अधीन भारत सरकार के उपयोग भंत्रालय (राज्यन और पेट्रो राज्यन विभाग की अधिसूचना का आ. 1806 तारीख 6 जुलाई, 1947 और दुर्लभीपत्रक का आ. 2904 और 2905 तारीख 12 अक्टूबर 1987 तथा का.आ. 3344 तारीख 5 दिसंबर, 1987 द्वारा भारत सरकार ने इस अधिसूचना से संलग्न अनुमूली में विनिर्दिष्ट भूमियों के उपयोग के अधिकार को पृष्ठ लाईन को विभागे के प्रयोजन के लिये अंजित करने का आनंद आण्य घोषित कर दिया था।

और अब: सकाम प्राधिकारी ने उक्त अधिनियम की धारा 6 की उपधारा (9) के अधीन सरकार को रिझोर्ट हो दी है।

और अबगे यह: भारत सरकार ने उक्त रिझोर्ट पर विभाग करने के पश्चात् इस अधिसूचना से संलग्न अनुमूली में विनिर्दिष्ट भूमियों में उपयोग का अधिकार करने का विनिश्चय किया है।

अब अब: उक्त अधिनियम की धारा 6 की उपधारा (9) द्वारा प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करने हुए भारत सरकार एवं एनव्हाईस घोषित करती है कि इस अधिसूचना से संलग्न अनुमूली में विनिर्दिष्ट उक्त भूमियों में उपयोग का अधिकार पृष्ठ लाईन के विभागे के प्रयोजन के लिये एनव्हाईस अंजित किया जाता है।

और आगे उम धारा की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करने हुए भारत सरकार निर्देश देनी है कि उक्त भूमियों में अधिकार भारत सरकार में निहित होने के बजाय इंडियन पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड, महाराष्ट्र गैस फ्रेकर काम्पनीस विभाग, विलेपालें(प) म्हार्वे में सभी वायाप्ति से सुकृत रूप में घोषणा के प्रकाशन की तरीके से निहित होगा।

अनुमूली

पेट्रोलियम और अनिंज पाइप लाईन (भूमि के उपयोग के अधिकार का अर्जन) अधिनियम 1962 की धारा 6 की उपधारा (1) परिसूचना की अनुमूली

अ.नं.	गांव का नाम	तहसील	ज़िला	सर्वे नं.	हिस्सा नं.	गट नं.	क्षेत्रफल	प्रार.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1.	बेणमे	पेण	रायगढ़	13 1 से 3 (पी.)		—	—	37.0
				12 1 (पी.)		—	—	29.0
				12 3 (2)पी.		—	—	21.0
				12 3 (2)बी (पी.)		—	—	
				11 1पी		—	—	33.5
				11 1बी (पी.)		—	—	
				11 2बी,		—	—	
				9 2(पी) (पी.)		—	—	14.5

1	2	3	4	5	6	7	8	9
				9	4 (पी.)	—	—	38.5
				53	1 इ 2]	—	—	12.5
				53	2 वी. (पी.)]	—	—	
				41	2 (पी.)	—	—	18.0
				37	1 इ 1 (पी.)	—	—	27.0
2	झोलौरपाटा	पेण	राष्ट्रगढ़	1	3 से 6 (पी.)	—	—	49.5
				2	1 (पी.)	—	—	27.0
				136	2 (पी.)	—	—	09.0
				132	8 (पी.)	—	—	04.0
				132	5 (पी.)	—	—	17.0
				131	0 (पी.)	—	—	01.5
				138	0 (पी.)	—	—	11.0
				64	1 (पी.)	—	—	08.5
				130	2 (पी.)	—	—	03.0
				130	4 (पी.)	—	—	04.0
				130	1 (पी.)	—	—	03.0
				65	1 (पी.)	—	—	11.0
				65	4 (पी.)	—	—	05.0
				65	7 (पी.)	—	—	01.0
				127	4 (पी.)	—	—	01.0
				127	5 (पी.)	—	—	23.0
				66	1 (पी.)	—	—	28.0
				126	1 (पी.)	—	—	21.0
				126	2 (पी.)	—	—	04.0
				126	3 (पी.)	—	—	05.0
				125	3 (पी.)	—	—	01.0
				125	4 (पी.)	—	—	06.0
				68	0 (पी.)	—	—	03.0
				69	1 (पी.)	—	—	14.0
				69	3 (पी.)	—	—	09.0
				119	6 (पी.)	—	—	12.0
				72	3 (पी.)	—	—	24.0
				72	2 इ (पी.)	—	—	10.0
				72	1 (पी.)	—	—	01.0
				74	1 (पी.)	—	—	01.0
				74	5 (पी.)	—	—	12.0
				74	3 (पी.)	—	—	19.0
				74	2 (पी.)	—	—	13.0
				74	4 (पी.)	—	—	11.0
				76	3 (पी.)	—	—	03.5
				77	2 इ (पी.)	—	—	22.5
				77	2 वी. (पी.)	—	—	02.5
				77	1 + 3 से 6 (पी.)	—	—	18.0
				88	1 + 3 + 4 + 57 (पी.)	—	—	16.0
				88	2 (पी.)	—	—	06.0
3	मुमुक्षु	पेण	राष्ट्रगढ़	—	—	58 (पी.)	—	05.0
						57 (पी.)	—	16.0
						56 (पी.)	—	08.0
						59 (पी.)	—	10.0

1	2	3	4	5	6	7	8	9
					50 (पी.)	—	05.0	
					51 (पी.)	—	05.0	
					45 (पी.)	—	25.0	
					41 π (पी.)	—	01.0	
					41 वी	—	26.0	
					40 (पी.)	—	07.0	
					39 (पी.)	—	07.0	
					8 (पी.)	—	07.0	
					32 (पी.)	—	02.0	
					33 (पी.)	—	03.0	
					30 (पी.)	—	07.0	
					214 (पी.)	—	04.0	
					34 (पी.)	—	00.5	
					39 (पी.)	—	15.0	
					212 (पी.)	—	23.0	
					27 (पी.)	—	14.0	
					26 (पी.)	—	05.0	
					25 (पी.)	—	01.0	
					16 (पी.)	—	07.0	
					17 (पी.)	—	05.0	
4 आटोबाटी	पण	रायगड	16	0 (पी.)	—	—	28.0	
			17	1 (पी.)	—	—	05.8	
			17	2 (पी.)	—	—	27.0	
			17	3 (पी.)	—	—	05.0	
			15	1 (पी.)	—	—	01.0	
			15	2 (पी.)	—	—	02.5	
			18	1+2+4 (पी.)	—	—	09.6	
			19	1 π (पी.)	—	—	01.2	
			21	1 (पी.)	—	—	20.9	
			21	2 (पी.)	—	—	00.2	
			21	4 (पी.)	—	—	22.5	
			22	0 (पी.)	—	—	08.6	
			23	5 (पी.)	—	—	13.0	
			23	6 (पी.)	—	—	04.3	
			26	1 (पी.)	—	—	14.4	
			26	2 (पी.)	—	—	29.0	
			26	3 (पी.)	—	—	01.7	
			26	4 (पी.)	—	—	07.9	
			28	1 (पी.)	—	—	16.4	
			28	2 (पी.)	—	—	13.0	
			29	1 (पी.)	—	—	10.8	
			29	3 (पी.)	—	—	07.3	
			29	4 (पी.)	—	—	35.9	
			30	2 π (पी.)	—	—	02.4	
			31	1 (पी.)	—	—	04.3	
5 गांधी	पण	रायगड	19	0 (पी.)	—	—	07.8	
			20	1 (पी.)	—	—	07.8	
			20	2 (पी.)	—	—	05.5	
			20	3 (पी.)	—	—	02.7	
			18	1 (पी.)	—	—	03.5	
			18	2 (पी.)	—	—	16.4	

1	2	3	4	5	6	7	8	9
				17	1 (पी.)	--	--	05.0
				17	2 (पी.)	--	--	04.5
				17	3 (पी.)	--	--	17.9
				16	1 (पी.)	--	--	11.3
				16	2 (पी.)	--	--	20.4
				16	4 (पी.)	--	--	09.8
				14	1 (पी.)	--	--	03.2
				15	1 (पी.)	--	--	09.0
				15	2 (पी.)	--	--	13.6
				15	4 (पी.)	--	--	21.5
				15	5 (पी.)	--	--	02.2
				24	1 (पी.)	--	--	04.5
				24	3 (पी.)	--	--	26.8
				24	5 (पी.)	--	--	10.3
				25	2 (पी.)	--	--	29.5
				31	1 (पी.)	--	--	23.2
				31	3 (पी.)	--	--	02.0
				31	4 (पी.)	--	--	03.2
				31	5 (पी.)	--	--	11.3
				30	10 (पी.)	--	--	04.5
				30	12 (पी.)	--	--	21.7
				30	13 (पी.)	--	--	01.7
				29	2 (पी.)	--	--	19.7
				29	5 (पी.)	--	--	04.3
6. ज्ञाने	पेण	रायगढ़		11	1+3 (पी.)	--	--	24.0
				13	1+2 (पी.)	--	--	09.3
				14	1 ए (पी.)	--	--	01.0
				14	1 बी (पी.)	--	--	17.9
				15	1 (पी.)	--	--	24.0
				15	2 ए (पी.)	--	--	28.3
				16	2 (पी.)	--	--	31.5
				17	1 ए (पी.)	--	--	14.6
				17	1 सी (पी.)	--	--	10.0
				18	3 (पी.)	--	--	12.9
				18	4 (पी.)	--	--	01.7
				18	2 (पी.)	--	--	00.5
				18	5+6 (पी.)	--	--	24.5
				21	2 (पी.)	--	--	24.5
				22	1 ए (पी.)	--	--	07.5
				22	2 ए (पी.)	--	--	07.4
				22	2 बी (पी.)	--	--	06.5
				23	1 ए (पी.)	--	--	01.6
				23	1 बी (पी.)	--	--	08.3
				23	2 (पी.)	--	--	03.7
				23	3 (पी.)	--	--	07.8
				3	3 (पी.)	--	--	19.4
				24	1 (पी.)	--	--	01.7
				17	1 बी, 1 ए,	--	--	12.5
					1 ए, 2 ए,	--	--	
					2 बी (पी.)	--	--	
7. दुर्गदर्शी	अविवाह	रायगढ़		1	1 (पी.)	--	--	24.5
				1	2 (पी.)	--	--	01.8
				1	3 (पी.)	--	--	03.5
				1	4 (पी.)	--	--	01.0
				7	1 (पी.)	--	--	02.0

1	2	3	4	5	6	7	8	9
7 सुर्योदयी		अनिवार्य	गवाह	7	8	9	10	11
7 सातवी		अनिवार्य	गवाह	7 ० (पी)	--	--	05 5	
				6 ० (पी)	--	--	34 0	
				3 १ (पी)	--	-	52 4	
				3 २ (पी)	--		01 0	
				1 २ (पी)	--		06 8	
8 सातवी		अनिवार्य	गवाह	23 १ (पी)	191	--	01 0	
				24 ३ (पी)	115	-	14 9	
				25 १ (पी)	118	-	17 4	
				25 २ (पी)	114	--	03 5	
				25 ३ (पी)	115	--	10 8	
				26 १ (पी)	111	-	03 2	
				32 ३ (पी)	152	--	01 2	
				32 ६ (पी)	151	--	13 4	
				35 ४ (पी)	150	--	03 3	
				12 ७ (पी)	149	--	02 2	
				26 ० (पी)	120	-	00 7	
				32 २ (पी)	146	-	30 0	
				32 १ ए (पी)	143	--	00 3	
				32 १ सी (पी)	145	--	12 9	
				32 ३ (पी)	147	--	03 2	
				33 ० (पी)	147	--	00 7	
				41 २ ए (२) (पी)	167	--	21 7	
					168			
				42 २ ए (पी)	177	--	05 2	
				42 २ सी (पी)	--	-	12 3	
				14 १ (पी)	183	-	22	
				41 १ (पी)	184		11 1	
				47 २ (पी)	195	--	15 6	
				47 २ (पी)	197	--	14 9	
				47 ५ (पी)	197	--	09 6	
				46 ३ (पी)	194	--	05 8	
9 नवम्बर-नक्ष-श्रीगांग		अनिवार्य	गवाह	19 २ (पी)	113	-	25 0	
				13 १ (पी)	111			
						-	19 0	
					120			
				17 १ (पी)	121	--	12 0	
				17 २ (पी)	126	--	11 0	
				17 ५ (पी)	123	--	24 0	
				10 १ ए (पी)	74	--	01 0	
				19 १ (पी)	72	--	17 0	
				19 १ (पी)	73	--	17 0	
				19 २ (पी)	73			
					42	--	21 0	
				39 १ (पी)	71	--	10 0	
				39 १ (पी)	70	--	15 0	
				30 ३ (पी)	67			
				36 १	63	-	07 3	
				37 १ (पी)	42	--	17 0	
				37 २ (पी)	171	--	00 5	
				38 १ (पी)	41	--	04 0	
				37 ४ बी (पी)	45	-	11 0	
					46			
				14 ३ (पी)	12	--	01 0	

1	2	3	4	5	6	7	8	9
10	सीमावेदी	असियांग	रायगढ़	11	6 (पी)	--	-	03 2
				10	2 (पी)	-	-	06 8
				10	3(पी)	--	--	04 3
				10	1 (पी)	--	--	07 8
				10	5 (पी)	-	--	00 2
				12	1 (पी)	--	-	05 5
				12	2 (पी)	-	--	11 3
				16	3 (पी)	--	-	00 0
11	कलापाना	असियांग	रायगढ़	9	2 (पी)	41	--	14 0
				9	4 (पी)	38	--	16 0
				6	2 (पी)	41	--	14 0
				8	3 (पी)	36	--	16 00
				8	4 (पी)	37	--	14 5
				7	2ए (पी)	35	--	13 0
				7	2बी(पी)	30	--	01 0
				7	4 (पी)	29	--	15 0
				6	7(पी)	28	--	02 5
				31	2 (पी)	111	--	04 0
				32	1 (पी)	115	--	19 0
						112		
				32	2 (पा)	114	--	01 0
				32	3 (पी)	116	-	14 0
				32	4 (पी)	117	--	09 0
				32	5बी (पी)	188	-	02 0
						118		
				33	1 (पी)	121	--	23 5
				39	3बी(पी)	123	--	03 5
				39	2 (पी)	121	-	08 0
				39	5 (पी)	139	--	14 0
				35	1 (पी)	133	--	12 5
				38	2 (पी)	138	--	14 0
				38	4 (पी)	137	--	29 0
				40	1 (पी)	146	--	10 0
				40	2 (पी)	146	--	08 0
				40	3 (पी)	151	--	01 5
12	कुर्दूस	असियांग	रायगढ़	24ए	0 (पी)	107	--	00 7
				24बी	1 (पी)	108	-	00 1
				24बी	0 (पी)	110	--	09 8
				27	0 (पी)	104	-	23 5
				26	1 (पी)	113	--	02 3
				26	2 (पी)	112	--	11 3
				26	3 (पी)	111	--	00 3
13	खारकोपरी	असियांग	रायगढ़	1	1 (पी)	4	--	04 5
				1	2 (पी)	3	--	02 7
				1	3 (पी)	2	--	14 9
				1	5 (पी)	2	--	23 7
				3	1 (पी)	9	-	01 5
				4	2 (पी)	10	--	12 6
				4	1 (पी)	11	-	12 3
				5	17 (पी)	18	--	29 3
				6	1 (पी)	19	--	14 6

1	2	3	4	5	6	7	8	9
13.	खारकोपरी	अस्तिकाग	रायगढ़	6	2 (पी)	9	—	02.0
				3	1 (पी)	21	—	16.9
				8	2 (पी)	33	—	11.6
				8	3 (पी)	25	—	20.4
				3	5 (पी)	14	—	03.7
				11	1 (पी)	42	—	24.2
				11	2पी (पी)	3	—	03.0
				11	3पी (पी)	41	—	09.8
				12	2 (पी)	43	—	23.2
				12	4 (पी)	44	—	6.8
				12	5 (पी)	45	—	03.2
				13	2पी (पी)	46	—	—
				13	2पी 1 (पी)	47	—	18.9
				14	5 (पी)	54	—	03.5
				20	3पी (पी)]	103	—	—
					3पी	—	—	10.8
				24	1प (पी)	101	—	02.0
					102	—	—	—
				24	1पी (पी)	103	—	13.6
				24	2 (पी)	101	—	25.0
				24	4प (पी)	88	—	08.8
				22	2पी (पी)	85	—	02.5
				22	3 (पी)	100	—	16.4
				23	2 (पी)	89	—	03.7
				23	3 (पी)	90	—	25.0
				23	4 (पी)	88	—	00.7
14.	चिक्कापी	अस्तिकाग	रायगढ़	32	1 (पी)	107	—	01.0
				32	2प (पी)	109	—	14.9
				32	3 (पी)	102	—	16.9
				32	2पी (पी)	103	—	17.6
				32	4 (पी)	108	—	04.3
				15प	1 (पी)	53	—	15.6
				15प	3 (पी)	51	—	06.0
				17	3 (पी)	59	—	02.5
				31	4 (पी)	101	—	08.8
				18	1+ 2पी (पी)	50	—	08.8
				18	1+ 2पी (पी)	52	—	10.0
				11	2(पी)	30,31	—	30.0
				7	1(1) (पी)	23,25	—	09.6
				7	1(2) (पी)	24	—	—
				7+पी	0 (पी)	23,24,25	—	09.8
				7	2 (पी)	19	—	15.0
				6	1प (पी)	17	—	09.8
				6	4 (पी)	16	—	16.6
15.	बालधिरा	अस्तिकाग	रायगढ़	1	1 (पी)	3	—	02.5
				1	3 (पी)	2	—	05.5
				1	5 (पी)	8	—	04.8
				2	1 (पी)	6	—	20.4
				2	5 (पी)	16	—	05.5
				3	4 (पी)	15,21	—	01.7
				3	2/1 (पी)	17	—	16.0
				3	2/2 (पी)	19	—	15.0

1	2	3	4	5	6	7	8	9
15	बालविद्या	प्रसिद्धांश	रायगढ़	३	३(पी)	२०	—	१७ ०
				५	२(पी)	२६	—	०० २
				८	१(पी)	३१	—	११ ८
				५	१ ^म /१ (पी)	२८	—	१२ ३
				७	१ ^{मी} (पी)	३०	—	२६ ०
				६	१ ^{मी} (पी)	३२	—	१७ ९
				६	२(पी)	३३	—	०१ ७
				६	३(पी)	३२	—	०४ ८
				१९	४(पी)	७९	—	०७ ८
				२०	१(पी)	८५	—	०९ ९
				२०	५ ^ए (पी)	८२	—	१९ ९
				२०	२(पी)	९१	—	०३ ०
				२०	३(पी)	८३	—	०६ ०
16	पिटकिरी	प्रसिद्धांश	रायगढ़	७१	०(पी)	—	—	३४ ४
				७०	१(पी)	२९८	—	०० २
				६६	५(पी)	—	—	१३ १
				६६	१(पी)	२७७	—	०७ ३
				६६	३(पी)	२७९	—	१२ ६
				६६	—	२७६	—	—
				६४	२(पी)	२७४	—	२४ ०
				६४	१ ^म (पी)	—	—	१० ३
				६४	२ ^म /१ (पी)	—	—	०५ ३
				६४	१ ^{मी} (पी)	—	—	२० २
				६४	३ ^ए (पी)	—	—	०२ ७
				६४	२ ^म /२ (पी)	—	—	०८ १
				६४	२ ^{मी} (पी)	—	—	१७ ७
				६१	४(पी)	—	—	१२ ७
				६१	५ ^ए (पी)	—	—	१३ ४
				६१	५ ^{मी} (पी)	—	—	०६ ०
				६२	१ ^{मी} (पी)	—	—	०० ७
				६२	१ ^{मी} (पी)	—	—	०१ ०
				६२	२(पी)	—	—	०५ ०
				६२	३(पी)	—	—	१४ ६
				६३	०(पी)	—	—	०२ ७
17	कुमुदल	प्रसिद्धांश	रायगढ़	१३४/५७	१ ^{मी} (पी)	—	—	०२ ५
				१३५/५८	०(पी)	—	—	६२ ०
				१३५/५९	४ ^{मी} (पी)	—	—	०२ ०
				१३९/६३	८(पी)	—	—	०२ ०
				१३९/६३	१(पी)	—	—	१३ ४
				१३९/६३	२(पी)	—	—	२७ ८
				११२/६८	१(पी)	—	—	०९ ०
				११२/६८	४(पी)	—	—	०६ ५
				१४२/६६	१(पी)	—	—	१७ ०
				११३/६९	७(पी)	—	—	०९ ८
				१४३/६९	८ ^ए ८ ^{मी} (पी)]	—	—	११ ०
				११४/६९	३(पी)	—	—	१५ ६
				१५३/६९	४(पी)	—	—	०१ ७
18	खानदिग	प्रसिद्धांश	रायगढ़	१६	७(पी)	—	—	१५ ६
				१६	८ ^{मी} (पी)	७०	—	०६ ०
				१६	८(पी)	६६	—	०१ ८
				१६	९(पी)	६५	—	०१ २
				१३	१(पी)	५१	—	०१ ०

प्रकाशन II [खण्ड 3.(ii)] भारत की सरकार वित्त मंत्रालय 1993/वैग्रह 11, 1993

31

1	2	3	4	5	6	7	8	9
18	ब्राह्मिका	अलीबाग	रायगढ़	13	2 (पी)	52	--	18.0
				13	7 (पी)	50	--	08.0
				13	8	49	--	02.0
				13	9	48	--	15.4
				11	1 (पी)	37	--	07.8
				11	2 (पी)	47	--	10.0
				11	5 (पी)	38	--	06.3
				10	1एवं (पी)	36	--	07.3
				8	2ए/1 (पी)	39	--	01.2
				8	2ए/2 (पी)	39	--	20.7
				8	2बी (पी)	40	--	12.9
				6	1 (पी)	24	--	11.3
				6	2 (पी)	21	--	16.9
				6	3ए-2 (पी)	19	--	36.0
				4	1/2 (पी)	14	--	19.9
19	कालबड़	अलीबाग	रायगढ़	1	2+3+4 (पी)	3	--	07.3
					8			
				1	5 (पी)	13, 18, 14	--	11.8
				57	1 (पी)	1	--	07.5
				57	2 (पी)	262	--	04.0
				57	3/2 (पी)	272	--	04.0
						261	--	
				57	4+6+7 (पी)	261,	--	16.4
						272	--	
					1			
				57	5/1 (पी)	257	--	14.4
				57	5/2 (पी)	255	--	12.6
				57	4+6+7 (पी)	254	--	09.0
					2			
				58	2 (पी)	251	--	01.2
				56	1 (पी)	256	--	00.5
				43	6ए (पी)	191	--	07.0
				43	6 बी (पी)	192	--	23.7
				41	1 (पी)	190	--	02.2
				44	1 (पी)	193	--	18.4
				44	2 (पी)	194	--	23.0
				44	4 (पी)	198	--	09.3
				44	5 (पी)	196	--	02.5
				39	1ए (पी)	167	--	08.0
20.	श्रीगंगांव (भाग 1)	अलीबाग	रायगढ़	5	0 (पी)	17	--	07.3
				4	3ए	18	--	09.7
				1	1ए (पी)	19	--	02.5
				4	1 बी	49	--	07.5
				14ए	1 (पी)	49	--	08.6
				14ए	2 (पी)	50	--	23.2
				14ए	3 (पी)	51	--	01.2
				15	1 (पी)	52	--	02.0
				34	3 (पी)	141	--	01.5
				34	2ए/1 (पी)	137	--	05.0
				34	2/2 (पी)	140	--	15.0
				34	2 बी/1	139	--	10.3
				34	3 (पी)	150	--	08.6

1	2	3	4	5	6	7	8	9
20	धीगाव	अलीबाग	रायगढ़	३५	३ (पी)	२	—	०१.०
	(भाग १)			३५	१ (पी)	१५०	—	१४.१
				३५	५ (पी)	१५१	—	११.८
				३६	० (पी)	१५५	—	१४.१
				३८	१ (पी)	—	—	०६.३
				३७	१ (पी)	१५६	—	१९.२
				३७	२/१ (पी)	१५७	—	०६.०
				३७	२/२ (पी)	१६०	—	२४.०
				३७	२/३ (पी)	१५९	—	०४.५
				४५	० (पी)	१९४	—	३४.३
				४४	३ (पी)	१९०	—	१२.६
				४४	२ (पी)	—	—	००.५
				४३	१ ए + ३ पी (पी)	१८६	—	०१.२
				४३	१ पी + ३ पी (पी)	१८७	—	०४.३
				४३	२ (पी)	१८४	—	३२.६
				४३	५ (पी)	१८९	—	०९.३
				४७	१ (पी)	१९६	—	०७.५
				४७	२ (पी)	१९७	—	००.५
				४७	३ (पी)	१९८	—	१८.७
				४७	५ (पी)	११२	—	१५.९
				४९	१ (पी)	२०७	—	१६.४
				४९	२ (पी)	२०७	—	०३.५
21	पौसनार	अलीबाग	रायगढ़	१४०	१/१ (पी)	—	—	९६.२
				१४०	२ (पी)	—	—	०९.०
				८५	१ (पी)	—	—	०२.२
				६६	१ (पी)	—	—	२६.८
				६८	२ (पी)	—	—	१५.४
				६४	० (पी)	—	—	०४.५
				६७	१ ए	—	—	१९.१
				६७	१ पी (पी)	—	—	१३.५
				६७	२ (पी)	—	—	०४.०
				६४	१ ए (पी)	—	—	३७.२
				६४	२ पी (पी)	—	—	२२.४
				६९	० (पी)	—	—	१०.१
				७०	४ (पी)	—	—	००.७
22	आकुपुर	अलीबाग	रायगढ़	१९	१/२ए	—	१	१६.६
				१७	० (पी)	—	—	०१.०
				५७	१ (पी)	—	—	०३.०
				५७	४ (पी)	—	—	१८.६
				५७	५ (पी)	—	—	१३.५
				६३	१ (पी)	—	—	०६.३
				६४	२ (पी)	—	—	०३.७
				६४	४ (पी)	—	—	००.२
				६४	५ (पी)	—	—	००.५
				६६ए	० (पी)	—	—	६३.०
23.	पंजारी	अलीबाग	रायगढ़	७९	१ (पी)	—	—	१६.१
				७९	३ (पी)	—	—	२४.७
				७९	३ (पी)	—	—	०१.७
				७९	४/१ (पी)	—	—	१३.१
				७९	४/२ (पी)	—	—	०७.४
				८०	५/२(२) (पी)	—	—	१८.८

1	2	3	4	5	6	7	8	9
				84	1 (पी)	--	--	24.0
				84	2 (पी)	--	--	03.5
				84	3 (पी)	--	--	15.1
				84	4 (पी)	--	--	10.3
				86	1 (पी)	--	--	19.2
				1	1 (पी)	--	--	20.4
				2	2 (पी)	--	--	08.0
				2	1 (पी)	--	--	04.5
				2	3 (पी)	--	--	29.0
				3	1 ए (पी)	--	--	12.8
				3	1 बी (पी)	--	--	13.0
				3	2 (पी)	--	--	14.1
				6	2 (पी)	--	--	01.0
				5	1 (पी)	--	--	22.0
				5	3 (पी)	--	--	00.7
				5	4 (पी)	--	--	17.4
				5	5 (पी)	--	--	01.2
				5	8 (पी)	--	--	01.2
				8	1 (पी)	--	--	15.6
				8	2 (पी)	--	--	07.8
23.	पेसारी	अलिबाग	रायगढ़	9	3 (पी)	--	--	07.5
				9	6 (पी)	--	--	01.2
				9	7 (पी)	--	--	15.9
				9	8 (पी)	--	--	03.2
24.	नवजार-रायदे	अलिबाग	रायगढ़	9	0 (पी)	--	--	06.0
				9	1 ए (पी)	--	--	11.3
				9	1 बी (पी)	--	--	11.3
				9	3 (पी)	--	--	25.0
				10	2 (पी)	--	--	24.0
				10	3 (पी)	--	--	04.0
				4	4 (पी)	--	--	06.3
				4	2 (पी)	--	--	04.8
				4	3 (पी)	--	--	18.9
				5	1 (पी)	--	--	29.0
				5	3 ए (पी)	--	--	01.7
				5	3 बी (पी)	--	--	
25.	गांवजार	अलिबाग	रायगढ़	6	1 (पी)	--	--	07.3
				6	2 (पी)	--	--	
				7	1 (पी)	--	--	05.0
				7	2 (पी)	--	--	
				8	1 ए (पी)	--	--	17.7
				8	1 बी (पी)	--	--	
				8	3 (पी)	--	--	06.8
				8	4 ए (पी)	--	--	12.9
				8	4 बी (पी)	--	--	
25.	गांवजार	अलिबाग	रायगढ़	8	6 ए (पी) {	--	--	01.0
				8	6 बी (पी) }	--	--	
				8	7 (पी)	--	--	08.3
				8	5 (पी)	--	--	08.8
26.	चरी	अलिबाग	रायगढ़	12	1 (पी)	--	--	07.5
				12	3 (पी)	--	--	16.0
				12	6 (पी)	--	--	06.8
				13	5 (पी)	--	--	08.6

1	2	3	4	5	6	7	8	9
				13	6 (पी)	--	--	02.0
				10	1/1 (पी)	--	--	01.0
				10	2 (पी)	--	--	02.2
				14	6 (पी)	--	--	00.5
				9	1 (पी)	--	--	05.0
				9	2 (पी)	--	--	08.0
				9	3 (पी)	--	--	18.6
				7	1 (पी)	--	--	09.6
				7	3 (पी)	--	--	04.0
				7	4 (पी)	--	--	06.0
				7	5 (पी)	--	--	02.0
				7	6 (पी)	--	--	04.5
				7	7ए (पी) {	--	--	08.0
				7	7बी (पी) }	--	--	03.0
				9	9 (1) (पी) {	--	--	09.0
				9	9 (2) (पी) }	--	--	05.0
				42	3 (पी)	--	--	09.0
				47	2 (पी)	--	--	23.0
26. भरो	अलिंगन	रायगढ़	48		1ए+3 (पी)	--	--	16.0
			48		2 (पी)	--	--	05.0
27. खारकोपर	अलिंगन	रायगढ़	40		0 (पी)	--	--	14.0
			37		0 (पी)	--	--	02.0
			36		1 (पी)	--	--	46.0
			35		4 (पी)	--	--	00.5
			35		3(3) (पी)	--	--	16.6
			8		2 (पी)	--	--	10.8
			8		5ए/1 { (पी)	--	--	14.6
			8		5ए/2 }	--	--	
			8		5ए/3 }	--	--	
			8		5ए/4 }	--	--	
			9		2बी+3 (पी)	--	--	19.
					----- (पी)	--	--	
					3	--	--	
			9		28बी+3 (पी)	--	--	05.8
					----- 2	--	--	
			9		1+2ए (पी)	--	--	06.5

₹/-

संकेत प्राधिकारी

द्वितीय पेट्रोकेमिकल्स

महाराष्ट्र गैस ईंकार काम्पलेस विभाग ना गो ठ जा.

[सं 34027/1/87-FC-III]

प्रा. के. गुप्ता, डेस्क अधिकारी

section (1) of Section 6 of the said Act submitted report to the Government.

And further the Central Government has after considering the said report, decided to acquire the right of user in the Lands specified in the schedule appended to this notification.

Now, therfore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (1) of the Section 6 of the said Act the Central Government hereby declares that the right of user in the said lands specified in the schedule appended to this notification is hereby acquired for laying the pipe lines.

And further, in exercise of the powers conferred by Sub-section 4 of that section, the Central Government directs that the right of user in the said lands shall instead of vesting in the Central Government, vest on the date of the publication of this declaration in the Indian Petrochemicals Corporation Limited, Maharashtra Gas Cracker Complex Division, Vile Parle (W), Bombay free from all encumbrances.

MINISTRY OF INDUSTRY
(Department of Chemicals & Petrochemicals)
New Delhi, the 17th December, 1987

S.O. 27.—Whereas by a Notification of Government of India in the Ministry of Industry (Department of Chemicals & Petrochemicals) No. S.O. 1806 dated the 6th July, 1987 and Erratum Nos. (1) S.O. 2904 and (2) S.O. 2905 dated the 12th October, 1987 and S.O. No. 3344 dated 5th December, 1987 under sub-section (1) of section 3 of the Petroleum & Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in Land) Act, 1962 (50 of 1962) the Central Government declared its intention to acquire the Right of User in the lands specified in the schedule appended to that notification for the purpose of laying pipeline.

And whereas the Competent Authority has under Sub-

SCHEDULE

Schedule to Notification under Section 6(1) of the Petroleum and Minerals Pipe Lines (Acquisition of Right of User in Land) Act, 1962.

Sr. No.	Name of the Village	Tahsil	District	Survey No.	Hissa No.	Gat. No.	Area	
							H.	R.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1.	Bendse	Pen	Raigad	13	1 to 3(P)	—	—	37.0
				12	1 (P)	—	—	29.0
				12	3(2)(A) } (P)	—	—	21.0
				12	3(2)(B) } (P)	—	—	3.5
				11	1A }	—	—	14.5
				11	1B }	(P)	—	38.5
				11	2B	—	—	12.5
				9	2(A) (P)	—	—	18.0
				9	4 (P)	—	—	27.0
				53	1A }	(P)	—	27.0
				53	2B }	—	—	11.0
				41	2 (P)	—	—	04.0
				37	1A1 (P)	—	—	03.0
2.	Zothirpada	Pen	Raigad	1	3 to 6 (P)	—	—	49.5
				2	1 (P)	—	—	27.0
				136	2 (P)	—	—	09.0
				132	8 (P)	—	—	04.0
				132	5 (P)	—	—	17.0
				131	0 (P)	—	—	04.5
				138	0 (P)	—	—	11.0
				64	1 (P)	—	—	08.5
				130	2 (P)	—	—	03.0
				130	4 (P)	—	—	04.0
				130	1 (P)	—	—	03.0
				65	1 (P)	—	—	11.0
				65	4 (P)	—	—	05.0
				65	7 (P)	—	—	01.0
				127	4 (P)	—	—	01.0
				127	5 (P)	—	—	23.0
				66	1 (P)	—	—	28.0
				126	1 (P)	—	—	21.0
				126	2 (P)	—	—	04.0
				126	3 (P)	—	—	05.0
				125	3 (P)	—	—	01.0
				125	4 (P)	—	—	06.0
				68	0 (P)	—	—	03.0
				69	1 (P)	—	—	14.0
				69	3 (P)	—	—	09.0
				119	6 (P)	—	—	12.0
				72	3 (P)	—	—	24.0
				72	2A (P)	—	—	10.0
				72	1 (P)	—	—	01.0
				74	1 (P)	—	—	01.0
				74	5 (P)	—	—	12.0
				74	3 (P)	—	—	19.0
				74	2 (P)	—	—	13.5
				74	4 (P)	—	—	11.0
				76	3 (P)	—	—	03.5
				77	2A (P)	—	—	22.5
				77	2B (P)	—	—	02.5
				77	1+3 to 6 (P)	—	—	18.0
				88	1+3+4+5A (P)	—	—	16.0
				88	2 (P)	—	—	06.0
3.	Mundhani	Pen	Raigad	—	—	58 (P)	—	05.0
						57 (P)	—	16.0
						56 (P)	—	08.0
						59 (P)	—	10.0

1	2	3	4	5	6	7	8	9
3. Mundhni (Contd.)	Pen	Raigad	—	—	50 (P)	—	—	05.0
			—	—	51 (P)	—	—	05.0
			—	—	45 (P)	—	—	25.0
			—	—	41A)			
			—	—	41B) (P)	—	—	01.0
			—	—	40 (P)	—	—	26.0
			—	—	39 (P)	—	—	07.0
			—	—	8 (P)	—	—	07.0
			—	—	32 (P)	—	—	02.0
			—	—	33 (P)	—	—	03.0
			—	—	30 (P)	—	—	07.0
			—	—	214 (P)	—	—	04.0
			—	—	34 (P)	—	—	00.5
			—	—	29 (P)	—	—	15.0
			—	—	212 (P)	—	—	23.0
			—	—	27 (P)	—	—	14.0
			—	—	26 (P)	—	—	05.0
			—	—	25 (P)	—	—	01.0
			—	—	16 (P)	—	—	07.0
			—	—	17 (P)	—	—	05.0
4. Ativali	Pen	Raigad	16	0 (P)	—	—	—	26.0
			17	1 (P)	—	—	—	05.8
			17	2 (P)	—	—	—	27.0
			17	3 (P)	—	—	—	05.0
			15	1 (P)	—	—	—	01.0
			15	2 (P)	—	—	—	02.5
			18	1+2+4(P)	—	—	—	09.6
			19	1A (P)	—	—	—	01.2
			21	1 (P)	—	—	—	20.9
			21	2 (P)	—	—	—	00.2
			21	4 (P)	—	—	—	22.5
			22	0 (P)	—	—	—	08.6
			23	5 (P)	—	—	—	13.9
			23	6 (P)	—	—	—	04.3
			26	1 (P)	—	—	—	14.4
			26	2 (P)	—	—	—	29.0
			26	3 (P)	—	—	—	01.7
			26	4 (P)	—	—	—	07.8
			28	1 (P)	—	—	—	16.4
			28	2 (P)	—	—	—	13.0
			29	1 (P)	—	—	—	10.8
			29	3 (P)	—	—	—	07.3
			29	4 (P)	—	—	—	35.9
			30	2A (P)	—	—	—	02.2
			31	1 (P)	—	—	—	04.3
5. Gandhe	Pen	Raigad	19	0 (P)	—	—	—	07.8
			20	1 (P)	—	—	—	07.8
			20	2 (P)	—	—	—	05.5
			20	3 (P)	—	—	—	02.7
			18	3 (P)	—	—	—	03.5
			18	2 (P)	—	—	—	16.4
			17	1 (P)	—	—	—	05.0
			17	2 (P)	—	—	—	04.5
			17	3 (P)	—	—	—	17.9
			16	1 (P)	—	—	—	11.3
			16	2 (P)	—	—	—	20.4
			16	4 (P)	—	—	—	09.8
			14	1 (P)	—	—	—	03.2
			15	1 (P)	—	—	—	09.0
			15	2 (P)	—	—	—	13.6
			15	4 (P)	—	—	—	21.5
			15	5 (P)	—	—	—	02.2
			24	1 (P)	—	—	—	04.5
			24	3 (P)	—	—	—	26.8
			24	5 (P)	—	—	—	10.3

1	2	3	4	5	6	7	8
5. Gandhe (Contd.)		Pen	Raigad	25	2 (P)	—	29.5
				31	1 (P)	—	23.2
				31	3 (P)	—	02.0
				31	4 (P)	—	03.2
				31	5 (P)	—	11.3
				30	10 (P)	—	04.5
				30	12 (P)	—	21.7
				30	13 (P)	—	01.7
				29	2 (P)	—	19.7
				29	5 (P)	—	04.3
6. Chole		Pen	Raigad	11	1+3 (P)	—	24.0
				13	1+2 (P)	—	08.3
				14	1A (P)	—	01.0
				14	1B (P)	—	17.9
				15	1 (P)	—	24.0
				15	2A (P)	—	28.3
				16	2 (P)	—	31.5
				17	1A (P)	—	14.6
				17	1C (P)	—	10.0
				18	3 (P)	—	12.9
				18	4 (P)	—	01.7
				18	2 (P)	—	00.5
				18	5+6 (P)	—	24.5
				21	2 (P)	—	24.5
				22	1A (P)	—	07.5
				22	2A (P)	—	07.3
				22	2B (P)	—	05.5
				23	1A (P)	—	04.6
				23	1B (P)	—	08.3
				23	2 (P)	—	03.7
				23	3 (P)	—	07.8
				3	3 (P)	—	19.4
				24	1 (P)	—	01.7
				17	1B, 1E, 1F, 2A, 2B (P)	—	12.5
7. Durga-Darya		Alibag	Raigad	1	1 (P)	—	24.5
				1	2 (P)	—	01.8
				1	3 (P)	—	03.5
				1	4 (P)	—	01.0
				7	1 (P)	—	02.0
				7	2 (P)	—	05.5
				6	0 (P)	—	38.0
				3	1 (P)	—	52.4
				3	2 (P)	—	01.0
				4	2 (P)	—	06.8
8. Sambri		Alibag	Raigad	23	1 (P)	191	01.0
				24	3 (P)	115	14.9
				25	1 (P)	118	17.4
				25	2 (P)	114	03.5
				25	3 (P)	118	10.8
				25	4 (P)	119	03.2
				35	3 (P)	152	01.2
				35	6 (P)	151	13.4
				35	4 (P)	150	05.5
				35	7 (P)	149	02.2
				26	0 (P)	120	00.7
				32	2 (P)	146	30.0
				32	1A (P)	143	00.3
				32	1B (P)	145	12.9
				32	3 (P)	145	03.2
				33	0 (P)	147	00.7
				41	2A(2) (P)	167	—
						168	21.7

1	2	3	4	5	6	7	8	9
8.	Sambri	Alibag	Raigad	42	2A (P)	177	—	05.2
				42	2C (P)	—	—	12.6
				43	1 (P)	183	—	22.7
				44	4 (P)	184	—	11.3
				47	2 (P)	195	—	15.6
				47	3 (P)	197	—	14.9
				47	5 (P)	197	—	07.6
				46	3 (P)	194	—	05.8
9.	Navkhartar Shrigaon	Alibag	Raigad	19	2 (P)	113	—	25.0
				18	1 (P)	119	—	19.0
						120		
				17	1 (P)	121	—	12.0
				17	2 (P)	126	—	11.0
				17	5 (P)	123	—	24.0
				40	1A (P)	74	—	01.0
				39	1 (P)	75	—	17.0
				39	2 (P)	73	—	
						42	—	21.0
				39	4 (P)	71	—	10.0
				38	1 (P)	70	—	15.0
				36	3 (P)	67		
				36	1	68	—	07.5
				37	1 (P)	42	—	17.0
				37	2 (P)	174	—	00.5
				38	5 (P)	41	—	04.0
				37	4B (P)	45	—	11.0
				44	3 (P)	46	—	04.0
10.	Simadevi	Alibag	Raigad	11	6 (P)	—	—	03.2
				10	2 (P)	—	—	06.8
				10	3 (P)	—	—	04.3
				10	4 (P)	—	—	07.8
				10	5 (P)	—	—	00.2
				12	1 (P)	—	—	05.5
				12	2 (P)	—	—	11.3
				16	2 (P)	—	—	09.0
11.	Phansapur	Alibag	Raigad	9	2 (P)	41	—	14.0
				9	4 (P)	38	—	16.0
				8	2 (P)	41	—	14.0
				8	3 (P)	36	—	16.00
				8	4 (P)	37	—	14.5
				7	2A (P)	35	—	13.0
				7	2B (P)	30	—	01.0
				7	4 (P)	29	—	15.0
				6	7 (P)	28	—	02.5
				31	2 (P)	11	—	04.0
				32	1 (P)	115	—	19.0
						112		
				32	2 (P)	114	—	01.0
				32	3 (P)	116	—	14.0
				32	4 (P)	117	—	09.0
				32	5B (P)	118	—	02.0
						118		
				33	1 (P)	121	—	23.5
				33	3B (P)	123	—	03.5
				39	2 (P)	121	—	00.8
				39	5 (P)	139	—	14.0
				35	1 (P)	133	—	12.5
				38	2 (P)	138	—	14.0
				38	4 (P)	137	—	29.0
				40	1 (P)	146	—	10.0
				40	2 (P)	146	—	80.0
				40	3 (P)	151	—	01.5

1	2	3	4	5	6	7	8	9
12.	Kurdus	Allbag	Raigad	24A	0	(P)	107	— 00.7
				24C	0	(P)	108	— 00.3
				24D	0	(P)	110	— 09.8
				27	0	(P)	104	— 23.5
				26	1	(P)	113	— 02.3
				26	2	(P)	112	— 11.3
				26	3	(P)	111	— 00.3
13.	Kharkppari	Allbag	Raigad	1	1	(P)	4	— 04.5
				1	2	(P)	3	— 02.7
				1	3	(P)	2	— 14.9
				1	5	(P)	2	— 23.7
				3	1	(P)	9	— 01.5
				4	2	(P)	10	— 12.6
				4	1	(P)	11	— 12.3
				5	1A	(P)	18	— 29.3
				6	1	(P)	19	— 12.6
				6	2	(P)	9	— 02.0
				8	1	(P)	21	— 16.9
				8	2	(P)	33	— 11.6
				8	3	(P)	25	— 20.4
				8	5	(P)	14	— 03.7
				11	1	(P)	42	— 24.2
				11	2B	(P)	3	— 03.0
				11	2C	(P)	41	— 09.8
				12	2	(P)	45	— 23.2
				12	4	(P)	44	— 06.8
				12	5	(P)	45	— 03.2
				13	2A	(P)	46	—
				13	2B1	(P)	47	— 16.9
				14	5	(P)	54	— 05.5
				26	3A } 3B }	(P)	103	— 10.8
				24	1A }	(P)	101	— 02.0
							102	—
				24	1B	(P)	103	— 13.6
				24	2	(P)	101	— 25.0
				24	4A	(P)	88	— 08.8
				22	2B	(P)	85	— 02.5
				22	3	(P)	100	— 16.4
				23	2	(P)	89	— 03.7
				23	3	(P)	90	— 25.0
				23	4	(P)	88	— 00.7
14.	Chikhali	Allbag	Raigad	32	1	(P)	107	— 01.0
				32	2A	(P)	109	— 14.9
				32	3	(P)	102	— 16.9
				32	2B	(P)	103	— 17.6
				32	4	(P)	108	— 04.3
				15A	1	(P)	53	— 15.6
				15A	3	(P)	51	— 06.0
				17	3	(P)	59	— 02.5
				31	4	(P)	101	— 06.8
				18	1+2B		60	— 08.8
				18	1+2C	(P)	52	— 10.0
				11	2	(P)	30,31	— 30.0
				7	1(1)	(P)	23,25	— 09.6
				7	1(2)	(P)	24	— 09.8
				7A+B	0	(P)	23,24	— 15.0
							25	—
				7	2	(P)	19	— 09.8
				6	1A	(P)	17	— 16.6
				6	4	(P)	16	— 18.4

1	2	3	4	5	6	7	8	9
13.	Wagvira	Alibag	Raigad	1	1 (P)	3	—	02.5
				1	3 (P)	2	—	05.5
				1	5 (P)	8	—	04.8
				2	3 (P)	8	—	20.4
				2	5 (P)	16	—	05.5
				3	1/2 (P)	15,21	—	01.7
				3	2/1 (P)	17	—	16.0
				3	2/2 (P)	19	—	15.0
				3	3 (P)	20	—	17.
				5	2 (P)	26	—	00.
				5	3 (P)	31	—	11.8
				5	A1+4 (P)	28	—	12.3
				5	1B (P)	30	—	26.0
				6	1B (P)	32	—	17.9
				6	2 (P)	33	—	01.
				6	3 (P)	32	—	08.8
				19	4 (P)	79	—	07.8
				20	1 (P)	85	—	09.8
				20	5A (P)	82	—	19.9
				20	2 (P)	81	—	03.0
				20	3 (P)	83	—	06.0
16.	Pitkiri	Alibag	Raigad	71	0 (P)	—	—	34.4
				70	1 (P)	298	—	00.
				68	5 (P)	—	—	13.
				66	1 (P)	277	—	07.3
				66	3 (P)	275	—	12.6
						276	—	
				66	2 (P)	274	—	24.0
				64	1A (P)	—	—	10.3
				64	2A/1 (P)	—	—	05.3
				64	1B (P)	—	—	20.2
				64	3A (P)	—	—	02.7
				64	2A/2 (P)	—	—	08.3
				64	2B (P)	—	—	17.7
				61	4 (P)	—	—	02.7
				61	5A (P)	—	—	13.4
				61	5B (P)	—	—	06.0
				62	1B (P)	—	—	00.7
				62	1C (P)	—	—	01.0
				62	2 (P)	—	—	05.0
				62	3 (P)	—	—	14.6
				63	0 (P)	—	—	02.7
17.	Kusumbale	Alibag	Raigad	134/57	1D (P)	—	—	02.5
				135/58	0 (P)	—	—	65.0
				136/59	4B (P)	—	—	02.0
				139/63	5 (P)	—	—	02.0
				138/63	1 (P)	—	—	13.4
				139/63	2 (P)	—	—	27.8
				142/68	3 (P)	—	—	09.0
				142/68	4 (P)	—	—	06.5
				142/68	1 (P)	—	—	17.0
				143/69	7 (P)	—	—	08.8
				143/69	8A (P)	—	—	11.0
					8B	—	—	
				143/69	3 (P)	—	—	15.6
				143/69	4 (P)	—	—	01.7

1	2	3	4	5	6	7	8	9
18.	Khatvira	Alibag	Raigad	16	7 (P)	—	—	15.6
				16	6B (P)	70	—	06.0
				16	8 (P)	66	—	01.5
				16	9 (P)	65	—	01.2
				13	1 (P)	51	—	01.0
				13	2 (P)	52	—	18.0
				13	7 (P)	50	—	08.0
				13	8 (P)	49	—	02.0
				13	9 (P)	48	—	15.4
				11	1 (P)	37	—	07.8
				11	2 (P)	47	—	10.0
				11	5 (P)	38	—	06.3
				10	1AB (P)	36	—	07.3
				8	2A/1 (P)	39	—	01.2
				8	2A/2 (P)	39	—	20.7
				8	2B (P)	30	—	12.9
				6	1 (P)	24	—	11.3
				6	2 (P)	21	—	16.9
				6	3A-2 (P)	19	—	36.0
				4	4/2 (P)	14	—	19.9
19.	Kalwad	Alibag	Raigad	1	$\frac{2+3+4}{8} (P)$	3	—	07.3
				1	5 (P)	13,18 14	—	11.8
				57	1 (P)	1	—	07.5
				57	2 (P)	262	—	04.0
				57	3/2 (P)	272	—	08.0
				57	$4+6+7 (P)$	261 272 1	—	16.4
				57	5/1(P)	257	—	14.4
				57	5/2 (P)	255	—	12.6
				57	$4+6+7 (P)$	254	—	09.0
					—	— 2	—	—
				58	2 (P)	251	—	01.2
				56	1 (P)	256	—	00.5
				43	6A (P)	191	—	07.0
				43	6B (P)	192	—	23.7
				41	1 (P)	190	—	02.2
				44	1 (P)	193	—	18.4
				44	2 (P)	194	—	23.0
				44	4 (P)	198	—	09.3
				44	5 (P)	196	—	02.5
				39	1A (P)	167	—	08.0
20.	Shrigaon (Part I)	Alibag	Raigad	5	0 (P)	17	—	07.3
				4	3A (P)	18	—	09.7
				4	1A (P)	19	—	02.5
				4	1B (P)	49	—	07.5
				14A	1 (P)	49	—	08.6
				14A	2 (P)	50	—	23.2
				14A	3 (P)	51	—	01.2
				15	1 (P)	52	—	02.0
20A.	Shrigaon (Part II)	Alibag	Raigad	34	2/3 (P)	141	—	01.5
				34	2A/1 (P)	137	—	03.0
				34	2/2 (P)	140	—	15.0
				34	2B/1 (P)	139	—	10.3
				34	3 (P)	150	—	08.6
				35	3 (P)	2	—	01.0
				35	4 (P)	150	—	14.1
				35	5 (P)	151	—	11.8

1	2	3	4	5	6	7	8	9
20(A). Shrigaon (Part II)	Alibag	Raigad	36	0 (P)	155	—	14.1	
			38	1 (P)	—	—	06.8	
			37	1 (P)	156	—	19.2	
			37	2/1 (P)	159	—	06.0	
			37	2/2 (P)	160	—	24.9	
			37	2/3 (P)	159	—	04.5	
			45	0 (P)	194	—	34.3	
			44	3 (P)	190	—	12.6	
			44	2 (P)	—	—	00.5	
			43	1A+3A (P)	186	—	01.2	
			43	1C+3C (P)	187	—	04.3	
			43	2 (P)	188	—	32.6	
			43	4 (P)	189	—	09.3	
			47	1 (P)	196	—	07.5	
			47	2 (P)	197	—	00.5	
			47	3 (P)	198	—	18.7	
			47	5 (P)	112	—	15.9	
			49	1 (P)	207	—	16.4	
			49	2 (P)	207	—	03.5	
21. Poynad	Alibag	Raigad	180	1/1 (P)	—	—	96.2	
			180	2 (P)	—	—	09.0	
			85	1 (P)	—	—	02.2	
			66	1 (P)	—	—	26.8	
			66	2 (P)	—	—	15.4	
			64	0 (P)	—	—	08.5	
			67	1A (P)	—	—	19.1	
			67	1B (P)	—	—	13.5	
			67	2 (P)	—	—	04.0	
			68	1A (P)	—	—	37.2	
			68	2B (P)	—	—	22.4	
			69	0 (P)	—	—	10.1	
			70	4 (P)	—	—	00.7	
22. Ambepur	Alibag	Raigad	19	1/2A (P)	—	1	16.6	
			17	1	0 (P)	—	—	01.0
			57	1	(P)	—	—	03.0
			57	4	(P)	—	—	16.6
			57	5	(P)	—	—	13.5
			68	1	(P)	—	—	06.3
			68	2	(P)	—	—	03.7
			68	4	(P)	—	—	00.2
			68	5	(P)	—	—	00.5
			66A	0	(P)	—	—	63.0
23. Pezari	Alibag	Raigad	79	1	(P)	—	—	16.1
			79	2	(P)	—	—	24.7
			79	3	(P)	—	—	01.7
			79	4/1	(P)	—	—	15.1
			79	4/2	(P)	—	—	07.8
			80	5/2(2)	(P)	—	—	18.8
			84	1	(P)	—	—	24.0
			84	2	(P)	—	—	03.5
			84	3	(P)	—	—	15.1
			84	4	(P)	—	—	10.3
			86	1	(P)	—	—	19.2
			1	1	(P)	—	—	20.4
			2	2	(P)	—	—	08.0
			2	1	(P)	—	—	04.5
			2	3	(P)	—	—	29.0
			3	1A	(P)	—	—	12.8
			3	1B	(P)	—	—	13.0
			3	2	(P)	—	—	14.1
			6	2	(P)	—	—	01.0
			5	1	(P)	—	—	22.0
			5	3	(P)	—	—	00.7
			5	4	(P)	—	—	17.4

1	2	3	4	5	6	7	8	9
				5	5 (P)	01.2
				5	8 (P)	01.2
				8	1 (P)	15.6
				8	2 (P)	07.89
23. Pezari	Alibag	Raigad		8	3 (P)	07.5
				9	6 (P)	01.2
				9	7 (P)	-	...	15.9
				9	8 (P)	03.2
24. Navkhar Rayande	Alibag	Raigad		8	0 (P)	06.0
				9	1A (P)	11.3
				9	1B (P)	11.3
				9	3 (P)	25.0
				10	2 (P)	24.0
				10	3 (P)	04.0
				4	4 (P)	06.3
				4	2 (P)	04.8
				4	3 (P)	18.9
				5	1 (P)	29.0
				5	3A 1 (P)	01.7
				5	3B 2 (P)	
25. Gaokhat	Alibag	Raigad		6	1 (P) }	07.3
				6	2 (P) }	
				7	1 (P)	05.0
				7	2 (P)	
				8	1A (P) }	17.7
				8	1B (P) }	
				8	3 (P)	06.8
				8	4A (P) }	12.9
				8	4B (P) }	
				8	6A (P) }	01.0
				8	6B (P) }	
				8	7 (P)	08.3
				8	5 (P)	08.8
26. Charl	Alibag	Raigad		12	1 (P)	07.5
				12	3 (P)	16.0
				12	6 (P)	06.8
				13	5 (P)	08.6
				13	6 (P)	02.0
				10	1/1 (P)	01.0
				10	2 (P)	02.2
				14	6 (P)	00.5
				9	1 (P)	05.0
				9	2 (P)	08.0
				9	3 (P)	16.6
				7	1 (P)	09.6
				7	3 (P)	04.0
				7	4 (P)	06.0
				7	5 (P)	02.0
				7	6 (P)	04.5
				7	7A (P)	08.8
				7	7B	
				7	9(1) (P)	03.0
				7	9(2)	
				7	10 (P)	09.0
				42	3 (P)	09.0
				47	2 (P)	23.0
				48	1A + 3 (P)	16.0
				48	2 (P)	05.0

1	2	3	4	5	6	7	8	9
27. Kharkopar	Alibag	Raigad	40	0 (P)	14.0	
			37	0 (P)	02.0	
			36	1 (P)	46.0	
			35	4 (P)	00.5	
			35	3(3) (P)	16.6	
			8	2 (P)	10.8	
			8	5A/1 (P)	14.6	
			8	5A/2 {		
			8	5A/3 }		
			8	5A/4 }		
			9	2B+3 (P)	19.9	
				3		
			9	2B+3 (P)	05.8	
				2		
			9	1+2A (P)	06.5	
				Sd/-				

COMPETENT AUTHORITY

Indian Petrochemicals Corp. Ltd.,
Maharashtra Gas Cracker Complex Dn.,
Nagothane.

(No. 34027/1/87-PC. III
S. K. GUPTA, Desk Office:

को भारत के भारतीय राजपत्र के भाग-2 छंड 3, उप-
छंड (1) में प्रकाशित अधिसूचना सं. जी.एम.
आर 534(ई) के द्वाया अधिसूचित किया गया
था।

(Department of Company Affairs)
New Delhi, the 21st December, 1987

S.O. 28.—In exercise of the powers conferred by section 67 read with clause (n) of section 2 of the Monopolies and Restrictive Trade Practices Act, 1969 (54 of 1969), the Central Government hereby makes the following rules to amend the Monopolies and Restrictive Trade Practices (Recognition of Consumers' Association) Rules, 1987, namely:—

का. आ. 28—एकाधिकार तथा अवरोधक व्यापारिक व्यवहार अधिनियम, 1969 (1969 का 54) की घारा 2 के छंड (एन) के साथ पठित घारा 67 के द्वाया प्रवत्त शब्दियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय नियमावली एकाधिकार तथा अवरोधक व्यापारिक व्यवहार (उपभोक्ता संघर्षों को मान्यता) नियमावली, 1987 में संशोधन करने के लिये निम्नलिखित नियम बनाती है, असार्वतुः—

1. (1) इन नियमों का नाम एकाधिकार तथा अवरोधक व्यापारिक व्यवहार (उपभोक्ता संघर्षों को मान्यता) नियमावली, 1987 होगा।

(2) ये नियम शासकीय राजपत्र में अपने प्रकाशन की तारीख से प्रभाव देंगे।

2. एकाधिकार तथा अवरोधक व्यापारिक व्यवहार (उपभोक्ता संघर्षों को मान्यता) नियमावली, 1987 के नियम 3 में उप-नियम (4) के लिये निम्नलिखित उप नियमों को प्रतिस्थापित किया जायेगा, असार्वतुः—

“(4) कम्पनी कार्ब विभाग, मान्यता प्रकाशन पत्र जारी करने से पहले आवेदक से अतिरिक्त सूचना जैसी वे अवधारणा समझें, वी अपेक्षा कर सकता है जो कि इस प्रकार की अतिरिक्त सूचना मानोने के लिये भेजे गये पत्र की प्राप्ति की तारीख से 30 दिन के अन्दर सेजती हौंगी।

(क) कम्पनी कार्ब विभाग द्वाया उप नियम (1) के अन्तर्गत किये गये प्रत्येक आवेदन पत्र का नियमावली आवेदन पत्र के प्राप्त होने की तारीख से या, उप-नियम (4) के असरीकृत भेजी गई अतिरिक्त सूचना की प्राप्ति की तारीख, जैसा भी मानला हो, से 90 दिन के अन्दर किया जावेगा।”

[फाइल में 38/5/86-सं.एक.-5 (बाल्य-II)]

की.के. मजोहा, संयुक्त भवित्व

टिप्पणी—एकाधिकार तथा अवरोधक व्यापारिक व्यवहार (उपभोक्ता संघर्षों को मान्यता) नियमावली 1987

“(4) The Department of Company Affairs may, before issuing a certificate of recognition, require the applicant to furnish such additional information as it may consider necessary within a period of thirty days of the date of receipt of the letter seeking such additional information.

(4A) Every application made under sub-rule (1) shall be disposed of by the Department of Company Affairs within ninety days from the date of receipt of the application or, as the case may be, of the receipt of the additional information furnished under sub-rule (4).”

[File No. 38/5/86-CL.V (Volume-II)]

V. K. MAJOHRA, Jt. Secy.

Note : The Monopolies & Restrictive Trade Practices (Recognition of Consumers' Association) Rules, 1987 were notified vide Notification GSR 534 (E) published in Part-II-Section 3-Sub-section (1) of the Gazette of India Extraordinary, dated 1st June, 1987.

संचार मंत्रालय

(दूरसंचार विभाग)

नई दिल्ली, 17 दिसम्बर, 1987

का. आ. 29:—स्थायी अदेश संख्या 627, दिनांक 8 मार्च, 1960 द्वारा लागू किए गए भारतीय तार नियम 1951 के नियम 434 के खंड III के पैरा (क) के अनुसार महानिवेशक, दूरसंचार विभाग ने मूर्खल, यहाँ खेवड़ा, चिनान एवं जूणडन, टेलीफोन केन्द्रों, हारेयाणा सर्किल, में दिनांक 1-1-1988 से प्रमाणित दर प्रणाली लागू करने का निश्चय किया है।

[संख्या 5-13/87-पी एच बी]

MINISTRY OF COMMUNICATIONS

(Department of Telecommunications)

New Delhi, the 17th December, 1987

S.O. 29.—In pursuance of para (a) of Section III of Rule 434 of Indian Telegraph Rules, 1951, as introduced by S.O. No. 627 dated 8th March, 1969, the Director General, Department of Telecommunications, hereby specifies 1st January, 1988 as the date on which the Measured Rate System will be introduced in Murthal, Rai, Kewra, Bhigra and Jundla Telephone Exchanges of Haryana Telecom. Circle.

[No. 5-13/87-PHB]

का. आ. 30:—स्थायी अदेश संख्या 627, दिनांक 8 मार्च, 1960 द्वारा लागू किए गए भारतीय तार नियम 1951 के नियम 434 के खंड III के पैरा (क) के अनुसार महानिवेशक, दूरसंचार विभाग ने पन्तलम टेलीफोन केन्द्र, केरल सर्किल, में दिनांक 31-12-1987 से प्रमाणित दर प्रणाली लागू करने का निश्चय किया है।

[संख्या 5-2/87-पी एच बी]

पी. आर. कार्रा, सहायक महानिवेशक, (पी.एच.बी.)

S.O. 30.—In pursuance of para (a) of Section III of Rule 434 of Indian Telegraph Rules, 1951, as introduced by S.O. No. 627 dated 8th March, 1960, the Director General, Department of Telecommunications, hereby specifies 31st December, 1987 as the date on which the Measured Rate System will be introduced in Pandalam Telephone Exchange, Kerala Telecom. Circle.

[No. 5-2/87-PHB]

P. R. KARRA, Asstt. Director Genl. (PHB)

श्रम मंत्रालय

नई दिल्ली, 17 दिसम्बर, 1987

का० आ० 31:—ओर्डोगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की वारा 17 के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार, रघुराज नगर लाईस्टोन माइन्स ऑफ मेसर्स सूतना स्टोन एंड लाइम कम्पनी लि., सूतना के प्रबंधतंत्र से सम्बद्ध नियोजकों और उनके कर्मकारों के बीच, अनुबंध में निर्दिष्ट ओर्डोगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार ओर्डोगिक अधिकरण, जबलपुर के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 8-12-86 को प्राप्त हुआ था।

MINISTRY OF LABOUR

New Delhi, the 17th December, 1987

S.O. 31.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Jabalpur, as shown in the Annexure, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Raghuraj Nagar Limestones Mines of M/s. Sutna Stone & Co. Ltd., Sutna and their workmen, which was received by the Central Government on the 8th December, 1987.

BEFORE SHRI V. S. YADAV, PRESIDING OFFICER,
CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL
CUM-LABOUR COURT, JABALPUR (M.P.)

Case No. CGIT/LC(R)(42) of 1985

PARTIES.

Employers in relation to the management of Raghuraj Nagar Limestone Mines of M/s. Sutna Stone and Lime Company Limited, Satna (M.P.) and their workman Shri Shivpal Nai, Unskilled Piece-rated Mazdoor C/o Secretary, Hindustan Khan Mazdoor Sangh, Branch Satna Siding, Satna (M.P.).

APPEARANCES :

For workman—Shri B. S. Bisen, Advocate.

For management—Shri P. D. Pathak, Advocate.

INDUSTRY : Limestone Mine.

DISTRICT : Satna (M.P.)

AWARD

Dated: December 1st, 1987

The Central Government in the Ministry of Labour vide Notification No. L-29012/5/85-D-III(B) Dated 31st May, 1985 referred the following dispute to this Tribunal, for adjudication:—

“Whether the punishment of dismissal from service with effect from 15-11-1983 awarded to Shri Shivpal Nai, Un-skilled piece-rated Mazdoor, by the management of Sutna Stone and Lime Co. Ltd., Satna (M.P.) was commensurate with the gravity of the offence committed by the concerned workmen? If not, to what relief is the workman entitled?”

2. Facts leading to the present reference are that the workman was tried in domestic enquiry dated 29-9-1983 on the following two charges under Article 17(iii)(h) of the Standing Orders:—

1. That the workman on 26-9-1983 at about 8.30 p.m. abused with filthy language, shouted and threatened Shri Udairaj Singh.
2. That because of riotous and disorderly behaviour of the workman peace of the mines was disturbed.

3. The plea of the workman was that the case is false and fabricated. In fact, Shri Udairaj Singh had cut down his wages and used filthy language against his fellow workers. As a result of domestic enquiry the services of the workmen were terminated hence this reference.

4. I had framed various issues but looking to the nature of reference quoted above Issue No. 3 and 4 which to the following effect appear to be relevant:—

ISSUES

1. Whether the enquiry is proper and legal?
2. If not, whether the termination of the workman is justified on facts of the case?
3. Whether the punishment awarded is proper and legal?
4. Relief and costs?

Findings with reasons:—

Issue No. 3 and 4:—The contention of the workman is based on merits of the domestic enquiry held. But now it is well settled as has been held in the case of Calcutta Electric Supply Co. Ltd. Vs. Their workmen (AIR 1959 SC. 1191) that this Tribunal cannot enlarge the scope of reference and has to confine itself to the reference. Therefore this Tribunal cannot go into the merits, propriety and legality of the domestic enquiry. As regards the punishment I have already reproduced the charges against the workman. The charge against the workman are that he abused and threatened with dire consequences his superior Mate and furthermore he during his working hours acted in an in-

disciplined and riotous behaviour whereby the peace of the mines was disturbed. I have gone through the evidence and I do not find any insinuating circumstance in favour of the workman. The workman was also not able to point out any such circumstances to justify this Tribunal to reduce his punishment. In the circumstances punishment awarded to the workman appears to be legal and proper and he is not entitled to any relief. The reference is accordingly answered as under:—

That the punishment of dismissal from service with effect from 15-11-1983 awarded to Shri Shivpal Nai, Unskilled piece rated Mazdoor, by the management of Sutna Stone and Lime Co. Ltd., Sutna (M.P.) was commensurate with the gravity of the offence committed by the concerned workman. He is therefore not entitled to any relief. No orders as to costs.

V. S. YADAV, Presiding Officer
[No. L-29012/5/85-D.II(B)]
V. K. SHARMA, Desk Officer

नई दिल्ली, 18 दिसम्बर, 1987

का. आ. 32.—आधिकारिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसार में, केन्द्रीय सरकार, भारतीय स्टेट बैंक के प्रबंधित सेवामय नियाजकों और उनके कर्मचारों के बीच, अनुसार में निश्चिट आधिकारिक विवाद में आधिकारिक अधिकरण भ्राता के पंचायत को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 1-12-87 को प्राप्त हुआ।

New Delhi, the 18th December, 1987

S.O. 32.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Industrial Tribunal, Madras as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employees in relation to the State Bank of India and their workmen, which was received by the Central Government on the 1st December, 1987.

**BEFORE THE INDUSTRIAL TRIBUNAL, TAMIL NADU,
MADRAS**

Monday, the 23rd day of November, 1987

PRESENT :

Thiru Fyzee Mahmood, B.Sc., B.L., Industrial Tribunal.

Industrial Dispute No. 43 of 1986

(In the matter of the dispute for adjudication under Section 10(1)(d) of the Industrial Disputes Act, 1947 between the workman and the Management of State Bank of India, Madras-1)

BETWEEN

Thiru V. Raghunatha Gupta,
6, Ramanujam Street,
T. Nagar, Madras-600017.

AND

The Chief General Manager,
State Bank of India,
Local Head Office,
21, Rajaji Salai, Madras-600001.

REFERENCE :

Order No. L-12012/200/85-D.II(A) dated 16-6-1986 of the Ministry of Labour, Government of India, New Delhi

This dispute coming on for final hearing on Tuesday, the 17th day of November, 1987 upon perusing the reference claim and counter statements and all other material papers on record and upon hearing the arguments of Miss R. Vaigai for Thiruvalagai Row and Reddy, Advocates appearing for the workman and of Thiru R. Sreekrishnan, Advocate appearing for the Management and this dispute having stood over till this day for consideration, this Tribunal made the following:—

AWARD

This dispute between the workman and the Management of State Bank of India, Local Head Office, Madras-1 arises out of a reference under Section 10(1)(d) of the Industrial Disputes Act, 1947 by the Government of India in its Order No. L-12012/200/85-D.II(A), dated 16th June, 1986 of the Ministry of Labour for adjudication of the following issue:

Whether the action of the management of State Bank of India, Local Head Office, Madras in relation to the Indiranam Branch in dismissing Shri V. Raghunatha Gupta, Teller from service from 4th August, 1984 was justified? If not, what relief is the workman concerned entitled to?

(1) It is mentioned in the claim statement that the Petitioner Thiru V. Raghunatha Gupta was working as a Teller in the Indiranam Branch of the Respondent-Bank. He was issued with a charge sheet dated 11th March, 1983 in respect of two allegations of misconduct which took place on 25th January, 1983 and 22nd September, 1982. The petitioner had rendered an explanation denying the charges. Subsequently, a domestic enquiry was conducted and the Enquiry Officer found him guilty of both the charges. Accepting the findings of the Enquiry Officer, the Petitioner was dismissed from service. He preferred an appeal and the Appellate Authority by its order dated 22nd October, 1984 exonerated him of the 2nd charge, but holding the 1st charge as proved upheld the punishment imposed. It is stated that the enquiry was not conducted in a fair and proper manner and was in violation of principles of natural justice. The findings of the Enquiry Officer are perverse and not supported by evidence on record. The Punishing Authorities had not taken into account the gravity of the misconduct, the past record of service and the extenuating circumstances as required under paragraph 521(10)(c) of the Sastri Award before imposing the punishment. At any event, the Petitioner had unblemished record of 18 years of service and the punishment is shockingly disproportionate to the gravity of the misconduct committed and calls for interference under Section 11-A of the Industrial Disputes Act.

(2) In the counter statement filed by the Respondent-Bank, the allegations made in the claim statement are denied. Two charges were framed against the Petitioner on the allegations of misconduct and a fulfilled domestic enquiry was conducted, wherein he was given ample opportunity to defend himself. The Enquiry Officer had found him guilty on both the charges and he was dismissed from service. The Appellate Authority had exonerated the Petitioner of the 2nd charge but upholding the 1st charge had confirmed the punishment imposed. The disciplinary proceedings were properly conducted and the punishment imposed does not warrant any interference under Section 11-A of the Industrial Disputes Act. In case the enquiry is held to be vitiated, an opportunity may be afforded to the Respondent-Bank to adduce independent evidence before the Tribunal to prove the charges.

(3) The point for consideration is as contained in the reference.

(4) No oral evidence was adduced on either side. Exs. W-1 to W-14 and M-1 to M-8 were marked by consent.

(5) At the outset itself it may be pointed out that the learned counsel appearing for the Petitioner did not challenge the validity of the domestic enquiry conducted on any ground but had confined the arguments only to the scope of Section 11-A of the Industrial Disputes Act and an endorsement was made to that effect.

(6) It is now settled law that under Section 11-A of the Industrial Disputes Act, the Tribunal is at liberty to consider not only whether the finding of the misconduct recorded by the employer is correct but also to satisfy itself one way or other regarding the misconduct committed, the punishment to be imposed and the relief to be granted to the concerned workman on the basis of the materials on record and on re-appraisal of the evidence.

(7) The Petitioner was working as a Teller in the Respondent-Bank at Indiranam Branch. He was issued with a charge sheet dated 11th March, 1983 marked as Ex. W-1. The charges read as follows:

(1) On 25th January, 1983 you issued a cash receipt with the Bank's stamps duly affixed thereon to Shri

R. Gopalakrishnan for a sum of Rs. 1,000 for credit of his S.B. A/c. No. 2/64. The voucher was duly passed to the Accounts wing and posted in the relative Savings Bank Ledger, Day Book and also the Teller's Cash Scroll. At the end of the day the voucher was withdrawn by you and the entry cancelled in all the corresponding books. By your above action you have committed the Bank to the position of a debtor to Sri Gopalakrishnan when in fact no cash was physically received by you.

Your above action if proved, would amount to an act of 'gross misconduct' under paragraph 521(4)(j) of the Sastry Award read with paragraph 18.28 of the Desai Award.

- (2) Earlier on 22nd September, 1982 there was a shortage of Rs. 12,000 in your individual cash balance even though the receipts any payments made by you did not indicate such shortage from the notations on the relative vouchers and by your own confirmation the drawer and cubicle was locked whenever you were not physically present at your counter.

The shortage was made good on the same day at 11 P.M. This would indicate a temporary misappropriation of cash entrusted to you.

Your above action, if proved, would amount to an act of 'gross misconduct' under paragraph 521(4)(j) of the Sastry Award read with paragraph 18.28 of the Desai Award.

The Petitioner-workman had given an explanation marked as Ex. W-2 dated 21st March, 1983 denying the charges. Subsequently, a full-fledged domestic enquiry was conducted in which the Petitioner had fully participated. The Enquiry Officer as revealed by the findings marked as Ex. W-6 held both the charges as proved. The Punishing Authority after furnishing the findings of the Enquiry Officer to the Petitioner and hearing him on the proposed punishment of dismissal had finally by its order dated 1st August, 1984 marked as Ex. W-7 dismissed the Petitioner without notice as contemplated by paragraph 521(5)(a) of the Sastry Award. The Petitioner had filed an appeal before the Chief Regional Manager, State Bank of India, Madras, who by an order dated 22nd October, 1984 marked as Ex. W-9 had exonerated the Petitioner of the 2nd charge. In respect of the 1st charge, the Appellate Authority had found him guilty of gross misconduct and confirmed the punishment of dismissal imposed. On perusing the documentary evidence adduced, I have no hesitation to hold that the finding rendered by the Enquiry Officer holding Charge No. 1 as proved which had been upheld by the Punishing and Appellate Authorities is fully justified and that the Petitioner had committed an act prejudicial to the interests of the Bank amounting to gross misconduct under paragraph 521(4)(j) of the Sastry Award applicable to the concerned workman. In this context, it may be mentioned that the Petitioner had virtually admitted this charge as disclosed by the earliest explanation marked as Ex. W-2 dated 21st March, 1983 tendered by him. In it, in respect of Charge No. 1 he had stated as follows :

"In regard to the charge contained in para (i) of the above charge-sheet, I state that about a few days back, I promised to pay a sum of Rs. 1,000 on 25th January, 1983 to Shri R. Gopalakrishnan. When Shri Gopalakrishnan approached me at my counter on that day I told him that I would pay the money immediately to which he requested me not to pay it in cash but to credit his S/B A/c. No. 64. As I was under the impression that I was in possession of my purse in which I had kept Rs. 1000, I obtained a credit voucher filled in and signed by him for Rs. 1000 and returned the counterfoil duly stamped and signed by me to him. As I had to attend to many more customers awaiting at my counter, I did not attempt to take out the cash from my purse immediately. After disposing of the customers, I could find to my utter shock and surprise that the purse was not with me. I felt that either I should have left it at my residence or lost somewhere. Closing my counter I rushed to my house and searched for the purse. But, in spite of my sincere efforts I could not locate it. Immediately I came to the Branch and explained in brief and requested the

concerned clerks to treat the voucher as cancelled. I also informed Shri R. Gopalakrishnan that I did not credit the money into his account as I could not get the money due to certain unavoidable circumstances and promised to credit his account the next working day which I promptly did."

The Appellate Authority had rightly pointed out as the Petitioner had issued a cash receipt for Rs. 1000 to the credit of the customer Thiru R. Gopalakrishnan on 25th January, 1983 and recorded the entry in the books and released the voucher and later altered the figures to clearly established the charge levelled against him. Exs. M-1 to M-4 also fortify these facts. As already adverted to, the Petitioner had not seriously disputed the allegations levelled though he had tendered a feeble explanation for having committed them.

(9) The learned counsel for the Petitioner Miss. R. Vaigai has urged that neither the Punishing Authority nor the Appellate Authority had taken the past record of service of the Petitioner and the extenuating circumstances before imposing the punishment of dismissal as contemplated by paragraph 521(10)(c) of the Sastry Award. On a perusal of Ex. W-7, the order of dismissal and Ex. W-9, the order of Appellate Authority confirming the punishment, it is manifest that they had not adverted to the past record of service of the Petitioner. The contention raised on behalf of the Petitioner that he had 17 years of unblemished record of service prior to his dismissal has not been controverted even by adducing any evidence before the Tribunal. On the other hand, the Petitioner has filed Exs. W-12 to W-14. These exhibits would disclose that the Bank had appreciated his efforts in securing deposits. It is no doubt true that the misconduct committed by the Petitioner would amount to gross misconduct under paragraph 521(4)(j) of the Sastry Award as an act prejudicial to the interests of the Bank, however, taking the past unblemished record of service of the Petitioner of nearly 17 years, and the surrounding circumstances of the case, the punishment of dismissal imposed appears to be harsh and disproportionate to the gravity of the misconduct proved. After the introduction of Section 11-A of the Industrial Disputes Act, the scope of jurisdiction of the adjudicating authority to interfere with the disciplinary action has been enlarged and it can enquire into the adequacy and propriety of the punishment imposed. The managerial prerogative has to yield to the satisfaction of the Tribunal not only with respect to justification but also the adequacy of the punishment. In Industrial Law, dismissal is the ultimate and most drastic disciplinary action which may be inflicted by an employer for an act of misconduct against an individual workman affecting his livelihood and rendering him unemployed. In deciding whether in a particular case, the act is serious enough to justify dismissal the matter needs to be examined in the light of the gravity of the misconduct committed, the past record of service of the concerned workman and the surrounding circumstances of the case. There cannot be any hard or fast rule of any "Litmus Test" to arrive at a decision in the matter. Each case would have to be decided on its own facts and the prevailing circumstances. On the facts of the instant case and the evidence adduced, the punishment of dismissal is held to be unjustified for the solitary lapse committed and accordingly set aside.

(10) The Petitioner is directed to be reinstated in service with half back wages continuity of service and other attendant benefits. It is further directed that the reinstatement should be effected on or before 1st January, 1988. Failing which the Petitioner would be entitled to full wages from 1st January, 1988 till the date of his reinstatement. There will be no order as to costs.

Dated this, 23rd day of November, 1987.

(Sd) Fyzee Mahmood
Industrial Tribunal

WITNESS EXAMINED

For both sides : None

DOCUMENTS MARKED

For Workman :

Ex. W-1/11-3-R3—Charge-sheet issued to the Petitioner/Workman (copy)

- Ex. W-2/21-3-83—Written explanation given by the Petitioner to the Charge sheet. (copy).
- Ex. W-3/30-8-83—List of materials and witnesses given by the prosecuting official for the enquiry. (copy)
- Ex. W-4/30-4-84—Letter to the Petitioner from the Regional Manager with regard to personal hearing. (copy).
- Ex. W-5/16-5-84—Reply given by the Petitioner to Ex. W-4. (copy)
- Ex. W-6/19-5-1984—Enquiry findings sent to the Petitioner along with a letter. (copy).
- Ex. W-7/1-8-84—Dismissal order issued by the Disciplinary Authority. (copy).
- Ex. W-8/22-8-84—Appeal against the order of dismissal to the Appellate Authority. (copy).
- Ex. W-9/22-10-84—Order of Appellate Authority confirming the punishment. (copy).
- Ex. W-10/12-11-84—Petition for revocation of dismissal order. (copy).
- Ex. W-11/23-9-85—Failure of Conciliation Report. (copy).
- Ex. W-12/12-4-77—Letter of appreciation given to the Petitioner by the Respondent for Deposit Mobilisation. (photo stat copy).
- Ex. W-13/July, 1977—Photograph of petitioner published in Family link magazine in appreciation of deposit mobilisation. (photostat copy).
- Ex. W-14/July 1977—Photograph of petitioner published in colleague magazine in appreciation of deposit mobilisation. (photostat copy).

For Management :

- Ex. M-1/25-1-83—Counterfoil slip. (xerox copy).
- Ex. M-2/25-1-83—Extract of Cash receipt book. (xerox copy).
- Ex. M-3/25-1-83—Day Book Ledger Extract (xerox copy).
- Ex. M-4/25-1-83—Extract of Cash Receipt Posting Book. (xerox copy).
- Ex. M-5/12-9-83—Disciplinary proceedings. (xerox copy).
- Ex. M-6/9-5-84—Personal hearing regarding enquiry. (xerox copy).
- Ex. M-7/9-7-84—Personal hearing regarding enquiry. (xerox copy).
- Ex. M-8/24-9-84—Personal hearing regarding appeal (xerox copy).

FYZEE MAHMOOD, Industrial Tribunal
[No. L-12012/200/85-D.II(A)]
N. K. VFRMA, Desk Officer

नई दिल्ली, 18 दिसम्बर, 1987

का०-अ० ३३—केन्द्रीय सरकार ने यह समाचार ही जाने पर कोकहित में ऐसा करता अपेक्षित था औद्योगिक विवाद अधिनियम 1947 (1947 का 14) की धारा 2 के खंड (d) के उपखंड (VI) के उपबंधों के अनुसरण में भारत सरकार के लाभ मन्त्रालय की अधिसूचना संस्था का०आ० १७३० विनाई २२ जून, १९८७ द्वारा बताया उचोग की जो उक्त अधिनियम की धारा 2 के खंड (ख) में यथापर्याप्ति वैकल्पिक कंपनी वाले चलाया जाता है, उक्त अधिनियम के प्रयोजनों के लिए २९ जून, १९८७ से छः मास की कालावधि के लिए जीक उपयोगी सेवा वैधित किया था:

और केन्द्रीय सरकार की राय है कि लोकहित में उक्त कालावधि को छः मास की और कालावधि के लिए बढ़ावा जाना अपेक्षित है,

अतः, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 2 के खंड (d) के उपखंड (vi) के पर्युक्त छारा प्रवत

गवितयों का प्रबोग करते हुए केन्द्रीय सरकार उक्त उचोग को महत अधिनियम के प्रयोजनों के लिए २९ दिसम्बर, १९८७ से छः मास की और कालावधि के लिए उपयोगी सेवा वैधित करती है।

[संख्या एम 11017/2/85-टी-1(ए)]

नंद लाल, अधर सचिव

New Delhi, the 18th December, 1987

S.O. 33.—Whereas the Central Government having been satisfied that the public interest so required had, in pursuance of the provision of sub-clause (vi) of clause (n) of section 2 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), declared by the notification of the Government of India in the Ministry of Labour S.O. No. 1730 dated the 22nd June, 1987 the Banking Industry carried on by a Banking Company as defined in clause (bb) of section 2 of the said Act to be a public utility service for the purpose of the said Act, for a period of six months from the 29th June, 1987;

And whereas, the Central Government is of opinion that public interest requires the extension of the said period by a further period of six months;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by the proviso to sub-clause (vi) of clause (n) of section 2 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby declares the said industry to be a public utility service for the purpose of the said Act, for a further period of six months from the 29th December, 1987.

[No. S-11017/2/85-D.I(A)]

NAND LAL, Under Secy.

नई दिल्ली, 18 दिसम्बर, 1987

का०आ० ३५—ओद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार ने गिडी-नी कौलियरी मैसर्स सी०सी० लिम० के प्रबन्धनत्व से सम्बद्ध नियोजकों और उनके कमंकारों के बीच, अनुबंध में निर्दिष्ट ओद्योगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार औद्योगिक अधिकारण के पंचांग का प्रभागित करनी ही जी केन्द्रीय सरकार को १५-१२-८७ से प्राप्त हुआ था।

New Delhi, the 18th December, 1987

S.O. 34.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, No. 2, Dhanbad, as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Gidi-C Colliery of M/s. C. C. Ltd., P.O. Gidi-C, District Hazaribagh and their workmen, which was received by the Central Government on the 15th December, 1987.

BEFORE THE CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL (NO. 2) AT DHANBAD

Reference No. 160 of 1985

In the matter of industrial dispute under Section 10(1)(d) of the I.D. Act, 1947

PARTIES :

Employers in relation to the management of Gidi-C Colliery of M/s. C.C. Ltd., and their workmen.

APPEARANCES :

On behalf of the workmen: Shri Lalit Burman, Vice President, United Coal Workers Union.

On behalf of the employers: Shri R. S. Murthy, Advocate.

STATE : Bihar.

INDUSTRY : Coal.

Dhanbad, the 9th December, 1987

AWARD

The Government of India, Ministry of Labour in exercise of the powers conferred on them under Section 10(1)(d) of the I.D. Act, 1947 has referred the following dispute to this Tribunal for adjudication vide their Order No. L-24012 (49)/85-D.IV(B), dated, the 21st November, 1985.

SCHEDULE

"Whether the action of the Management of Gidi-C colliery of M/s. C.C. Ltd., P.O. Gidi-C, Dist. Hazaribagh for not regularising and paying wages as Pay Loader Operator Gr. I to S/Shri Saiju Manjhi, Barju, Raju Manjhi, Ramdeo Mahto and Md. Siraj when they have been working as such since 26-2-83 is legal and justified? If not, to what relief are the concerned workmen entitled?"

The case of the workmen is that the concerned workmen S/Shri Saiju Manjhi, Barju, Raju Manjhi, Ramdeo Mahto and Md. Siraj were originally appointed in different jobs by the management of C.C. Ltd. They had requisite qualification to work as Tipper/Pay Loader operator, they were selected by a Selection Committee constituted by the management to work as Tipper/Pay Loader Operator. The management instead of giving them proper designation and rates for the job in which they were engaged, issued an office order dt. 26-2-83 in which they were described as trainee driver with stipulation that they would continue to get the wages of their respective categories/groups for one year and their case for promotion to Cat. V would be considered by a D.P.C. after one year. As during the period of the said training the workmen were actually engaged in operating tipper/pay loader as fullfledged operators, they demanded that they should be given proper designation and wages of operators. The management initially refused to concede to the demand of the workmen but subsequently the Administrative Officer, Gidi-C colliery issued an office order dt. 23/28-2-84 giving category V wages to the concerned workmen with effect from 26-2-84. The concerned workmen protested against the said Office order on the ground that they were performing the job of pay loader operators and have been operating pay loaders of higher capacities for which they are entitled to get the wages of pay loader operator of Grade-I. The management refused to concede to the said demand of the concerned workmen. Thereafter their union raised an industrial dispute before the ALC(C) Hazaribagh. The conciliation proceeding ended in failure giving rise to the present reference. After the order of reference was passed by the Ministry of Labour dt. 21-11-85, the management issued an office order dt. 2 12-85 promoting the concerned workmen to the post of pay loader operator Grade-II with effect from 26-2-85. The successive action of the management in respect of the proper designation, grade and wages of the concerned workmen were wrong and unjust. The management was actuated with malafide intention of taking service of higher grade without paying the higher grade and wages commensurate with the performance of the work being done by the concerned workmen. The management by dubbing the workmen as trainers drivers proposed to continue payment of the wages of lower categories and then conceded the wages of category V with effect from 26-2-1983 thereby nullifying its earlier order. The management's action conceded the designation and grade of pay loader operator Grade-II with effect from 26-3-85 when the dispute was referred for adjudication. The belated actions of the management amounts to admission of the fact that the concerned workmen were actually working as Pay loader operator and as such they were entitled to the proper grade of pay loader operator Grade-I and the consequential benefits with effect from 26-2-83.

The case of the management is that the terms of reference contains an erroneous presumption that the five concerned workmen have been working as Pay loader operator from 26-2-83 although such contention of the sponsoring union was denied by the management during the course of conciliation proceeding before the ALC(C), Hazaribagh. The appropriate Government has therefore entered the arena of the Tribunal in stating in the terms of reference and giving judgement that the five concerned workmen in question have been working as Pay loader operator Grade-I since 26-2-83 although it was a disputed fact. The reference therefore is hit by the ruling of their Lordships of the Supreme Court in Ram Awat Sharma and others Vs State of Haryana (1985-II-TT-187). The five concerned workmen were previously working as either in Category I mazdoor or Category II Mazdoor. They obtained Motor Vehicle license but had no experience of driving Motor Vehicle/Heavy transport vehicle and were never employed as Drivers of such vehicles. The Pay loaders are heavy transport vehicles under the 87/1949 GI—7

Motor Vehicle Act. In February, 1983, the management had decided to provide training to the concerned workman and entertained them as trainee drivers for a period of one year in the first instance on payment of the same wages which they were already getting. Since the concerned workmen were also put in training at the same time in regard to operation of a Pay loader they were allowed the wages of driver Cat. V which is the wages applicable to the post of Motor Vehicles drivers with effect from 26-2-83 as per policy decision of the management for trainee operators. NCWA-II finalised by JBCCI read with implementation instruction No. 36 dt. 2-2-81 provided that the trainee operators would be dealt with as per the scheme in operation in CCL and that such a scheme inter alia lays down that the workers selected as trainee operators will draw during the period of their training the wages applicable to the post in which they might be working prior to their being entertained for training. In view of the above the concerned workmen were entitled to the wages of the post of either Cat. I or Cat. II but the management allowed them additional benefits by being placed in the daily rated category V which was the pay scale of a Motor Vehicle driver. The implementation instructions of JBCCI placed pay loader operators in 3 grades namely Grade-III, Grade-II, Grade-I and put them under excavation Group D, C and B respectively for the purpose of pay scales giving their specific job description. Group B pay loader operator Grade-I is a highly skilled workmen having 5 years experience capable of operating all types of pay loaders of capacity of 4 C.M. and above and he should have knowledge of the mechanism of the equipment and should undertake minor running repairs. He must also hold valid heavy vehicle driving licence and should ensure up keep of the machine. It will appear from the job, description and grouping that they vary according to the capacity of the pay loader operated and experience of operation of pay loaders of such capability besides certain other stipulation. Gidi-C colliery had two pay loaders one of 1.6 C.M. capacity and the other of 2 C.M. capacity. The former has been surveyed off having outlived its life and the latter is still in operation. The concerned workmen received their training on those two pay loaders. The operators operating pay loaders of the above aforesaid capacity are entitled to be placed in Grade-III/Grade-D only of excavation pay scale. The management had stipulated the period of training for the workmen having regard to the aforesaid job description as 2 years. After they completed the retaining period their case were reviewed and they were placed due to mistake in excavation grade-C instead of Excavation Grade-D with effect from 26-2-83. The concerned workmen have neither operated pay loader which are required to be operated by the Pay loader operator Grade-I with effect from 26-2-83 nor they are entitled to be paid wages of pay loader operators of Grade I from that date or from any other date. In the above view of the matter the demand of the sponsoring union that the concerned workmen should be given Grade I of pay loader operator with effect from 26-2-83 is misconceived and it is liable to be rejected. The action of the management in not regularising and paying the wages as pay loader operator Grade-I, to the concerned workmen is legal and justified

The point for consideration in this reference is whether the concerned workmen are entitled to be regularised as Pay loader operator Grade-I and be paid wages of the same grade with effect from 26-2-83.

The management examined one witness in support of its case. The workmen did not examine any witness in their support. However, the workmen got their documents exhibited as W-1 to W-3. The management also produced documents which have been marked Ext M-1 and M-2.

It appears from the schedule of the order of reference that the Govt. ha. given a decision that the concerned workmen are working as Pay Loader Operator Grade-I and as such it has referred the case for adjudication for their regularisation as Pay loader operator Grade-I although the said fact is disputed Shri I. Burman, appearing on behalf of the concerned workmen, also submitted that the concerned workmen are not working as Pay Loader Operator in Grade-I. The Govt. having administrative function should not have decided a matter of quasi judicial function that the concerned workmen are already working as pay loader operators in Grade-I.

However, as both the parties agreed to the fact that the concerned workmen were not working as Pay Loader Operators Grade-I, the matter has to be decided as to whether the concerned workmen are entitled to be regularised as Pay Loader Operator Grade-II since 26-2-83.

Admittedly, the reference is based on NCWA-II implementation instruction No. 36 dt. 2-2-81 of JBCCI and the said instruction is Ext. M-1 in the case. It will appear from Ext. M-1 at Sl. No. 12 of page-8 that highly skilled workman having 5 years experience capable of operating all type of pay loaders of capacity of 4 C.M. and above has been placed in pay loader operator Grade-I. Besides that he should have knowledge of mechanism of the equipment and should be able to undertake minor running repair and should hold valid heavy vehicle driving licence. It will appear from the evidence of MW-1 that there was no pay loader of the capacity of 4 C.M. or above in Gidi-C colliery. The workmen have adduced no evidence to show that there was any pay loader of the capacity of 4 C.M. or above which the concerned workmen were operating. Regarding experience also it will appear that the concerned workman had not acquired 5 years experience after the period of his training. It will thus appear that the concerned workmen are not entitled to be regularised as Pay loader Operator Grade-I, as they had not operated the pay loader of the capacity of 4 C.M. and above.

The evidence of MW-1 shows that the concerned workmen were formerly mazdoors and subsequently they were put as trainer drivers vide Ext. W-1. Ext. W-1 dt. 26-2-83 shows that on the basis of the recommendation of the Selection Committee the concerned workmen were placed as trainer driver for a period of one year which was liable to be extended subsequently and that during the said period of training they will continue to get the wages applicable to their present category and that on expiry of the training period they will be tested by the D.P.C. and those suitable may be promoted as driver Category V subject to the requirement and availability of the vacancies. It is clear therefore that the concerned workmen were placed as trainee driver from 26-2-83. Ext. W-2 is an office order dt. 27-2-84 by which sanction was accorded to the payment of minimum wages of Cat. V to the concerned workmen with effect from 28-2-83 who were allowed to work as driver (TR) vide office order dt. 26-2-83. MW-1 also has stated that vide Ext. W-2 the concerned workmen were placed in Cat. V. He has further stated that the concerned workmen were promoted as pay loader operator Grade-II vide Ext. W-3. The said Ext. W-3 is an office order dt. 3-12-85 which shows that on the basis of the recommendation of the D.P.C. the concerned workmen were temporarily promoted to the post of Pay Loader Operator Grade-II with effect from 26-2-85. It is clear therefore that the concerned workmen were working as Pay loader operator and as such they were allowed Grade-II of pay loader operators. MW-1 has stated that the concerned workmen were given training for driving pay loaders and maintenance and its minor repairs and that the training took about one year. MW-1 has stated that in 1983 there was one Terex Pay loader in the colliery capacity of 1.6 C.M. and that subsequently in 1984 the colliery acquired one more pay loader Model 1420 having capacity of 2 C.M. He has also produced a Literaturs in respect of the said pay loader marked Ext. M-2 to show that the bucket capacity of the pay loader Model 1420 is 2 C.M. He has also stated that since 1984 the Terex Pay loader is not working and only Pay loader which was acquired in 1984 was being operated in the colliery. This evidence of MW-1 shows that although the concerned workmen had taken their training on the Pay loader of 1.6 C.M. but they were actually working on the pay loader of 2 C.M. from 1984. Ext. M-1 will show at page-8 that a workman having three years of experience of operating of all types of pay loaders of capacity less than 4 C.M. but more than 2 C.M. has to be placed as Pay loader operator Grade-II. The concerned workmen were operating according to MW-1 Pay loader of the capacity of 2 C.M. and as such they cannot be placed in Pay Loader Grade-II. The skilled workman having two years experience in heavy equipment and in heavy vehicles capable of operating all types of pay loader of capacity of 2 C.M. and less has to be placed as pay loader operator Grade-III. According to Ext. M-1 as the colliery in question was having pay loader of 2 C.M. and not above it the concerned workmen were entitled to Grade-III pay loader operator and not pay loader operator Grade-II. The management have given Grade-II

to the concerned workmen with effect from 26-2-85 perhaps taking experience of 3 years into consideration although they were operating pay loader of the capacity of 2 C.M. only. As the concerned workmen are operating the pay loader of capacity of 2 C.M. from 1984 they are entitled to be paid as Pay Loader Operator Grade-III from 26-2-84. They cannot get Grade-III from 26-2-83 as they were under training for one year from 26-2-83 during which period they were to get wages applicable to their existing category. As the management has placed the concerned workmen as pay loader operator Grade-II with effect from 26-2-85 vide Ext. W-3, the concerned workmen will continue to get the said wages of pay Loader operators Grade-II with effect from 26-2-85 and they may accordingly be regularised as pay loader Operators Grade-II with effect from 26-2-85.

In the result, I hold that the action of the management of Gidi-C colliery of M/s. C.C.L. for not regularising and paying wages as Pay loader Operators Grade-I to the concerned workmen with effect from 26-2-83 is justified. However, the concerned workmen are entitled to be placed as Pay Loader Operator Grade-III with effect from 26-2-84 and the management is directed to pay the difference of wages to them from 26-2-84 to 25-2-85. The concerned workmen have already been placed as Pay Loader Operator Grade-II with effect from 26-2-85. The management is directed to regularise them as Pay Loader Operator Grade-II with effect from 26-2-85 as there is nothing against them.

This is my Award.

Dt : 9-12-87.

I. N. SINHA, Presiding Officer

[No. L-24012(49)/85-D.IV(B)]

R. K. GUPTA, Desk Officer

अम द्वालय

नई दिल्ली, 18 दिसंबर, 1987

का. आ. 35 :- प्रौद्योगिक विद्याव अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसार में, केन्द्रीय सरकार, केन्द्रीय विद्यालय द्वारा प्राप्ति के प्रबंधन से भवतु नियोजकों और उनके कर्मचारों के नीचे, अनुंध में निविष्ट प्रौद्योगिक विद्याव में प्रौद्योगिक अधिकारण, अहमदाबाद के पचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 8-12-87 को प्राप्त हुआ था।

MINISTRY OF LABOUR

New Delhi, the 18th December, 1987

S.O. 35.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Industrial Tribunal Ahmedabad, as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Kendriya Vidhyalaya, BSF and their workmen, which was received by the Central Government on the 8th December, 1987.

ANNEXURE

BEFORI SHRI C. G. RATHOD PRESIDING OFFICER,
CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL
AT AHMEDABAD

Reference (ITC) No. 16 of 1987

ADJUDICATION

BETWEEN

The Employer in relation to the management of —
Kendriya Vidhyalaya
BSF, Dantiwada
Dist. Banaskantha

—First party

AND

Somchand Kanjibhai Purabia
residing at Harijan Colony
New Gate, Palanpur
Dist. Banaskantha

—Second party

In the matter whether the action of the management of Principal Kendriya Vidyalaya, B.S.F. Dantiwada (B.K.) in terminating the service of Shri Purbia Somchand K., Wet Sweeper w.e.f. 8-6-84 is justified ? If not, to what other relief he is entitled ?

APPEARANCES :

Shri S. N. Gandhi—for the second party.
Shri Balvir Singh—for the first party.

STATE : Gujarat

INDUSTRY : Education

Dist. : Banaskantha

AWARD

Dated the 8th December, 1987

By an order No. L-42012/64/85-D.II(B) dated 8-2-87, the Desk Officer, Government of India, Ministry of Labour, New Delhi in exercise of the powers conferred by clause(u) of sub-section (1) and sub-section (2A) of Section 10 of the Industrial Disputes Act, 1947, has referred the dispute between the employers in relation to the management of Kendriya Vidyalaya, B.S.F. and other workman to this Tribunal for adjudication. The dispute referred to is whether the action of the management of Principal Kendriya Vidyalaya, B.S.F. Dantiwada (B.K.) in terminating the service of Shri Purbia Somchand K. Wet Sweeper w.e.f. 8-6-84 is justified ? If not, to what other relief he is entitled ?

2. The workman namely Sh. Purbia Somchand K. has filed the statement of claim at Ex. 3 and briefly the facts are—that the concerned workman was employed as Wet Sweeper in Kendriya Vidyalaya, Dantiwada, Dist. Banas Kantha. He was initially appointed in the services on 14-9-82 by an order as at Annexure 'A'; that he worked from 14-9-82 to 30-4-83. The opponent thereafter gave artificial intermittent break on paper and again the opponent engaged the workman w.e.f. 1-7-83 and that he continued to work upto 8-6-84 and on the same date his services were arbitrarily and abruptly terminated. The said workman thereafter, visited and met the officer concerned for seeking the reasons for termination that the workman did not get any reply and, therefore, he was constrained to approach the Conciliation Officer and ultimately the matter has been referred to this Tribunal. It is contended that the action of the opponent in terminating the services of workman is illegal, invalid and inoperative in law on the ground that the opponent was given artificial intermittent breaks; that the action of the opponent in giving such artificial intermittent breaks is uncalled for and violative of Article 14 of the Constitution of India and it is in utter disregard to the mandatory provisions of Section 25F read with Section 25G and H of the Industrial Disputes Act, 1947; that the impugned action of the opponent is a malafide exercise of managerial power. Further it is contended that immediately after the termination of the services of the workman, the opponent has appointed a fresh candidate which is in contravention to the provisions of Section 25G & H of the I.D. Act; that the concerned workman was appointed after undergoing all the process of recruitment namely, interview, viva-voce test, etc. and that action in terminating the services of the workman is arbitrary and mala fide and it is against the norms of principles of natural justice and, therefore, it is prayed that he be reinstated on the original post of Wet-Sweeper with full back wages and continuity of services and that he be paid all the fringe benefits like leave bonus, P.F. etc.

3. The first party, Kendriya Vidyalaya has filed its written statement at Ex. 9 and briefly it is contended as under : that the reference is without any basis and not according to law and hence it should be rejected; that the Kendriya Vidyalaya is a school run by the Kendriya Vidyalaya Sangathan—a Society registered under the Societies Registration Act, 1960; that its head quarters are at Delhi and it manage the various schools, including this present school situated in the various parts of the country. It is further contended that as per the general guidance of the Sangathan, Shri Purbia—the workman, was appointed purely on adhoc basis on two occasions one from 14-9-82 to 30-4-83 and thereafter from 1-7-83 to 8-6-84. The workman has produced the first appointment order and the second appointment order is not produced by him. According to the Kendriya Vidyalaya, in view of the appointment orders, the workman was employed on

specific understanding that it was a purely ad hoc appointment and that he was appointed for a specific period as stated in the respective appointment orders; that the workman willingly accepted the said appointment order with the full understanding that he did not raise any objection to the terms of the said appointment order. It is incorrect to say that there were any artificial breaks. The first appointment was till 30-4-83 as the school was closed for summer vacation by that time and during summer vacation, it was not necessary to continue the employment. The second appointment was from 1-7-83 to 30-4-84. However, in view of the letter from Asstt. Commissioner, Gandhinagar dated 25-4-84, the services of Mr. Purabia was extended upto 8-6-84. Further, it is contended that the workmen's services were, however, terminated finally on 8-6-84 under the instructions from the Head Quarter Office. It is further contended that the workman being a purely ad hoc employee, he is not entitled to claim anything as alleged in the statement of claim; that his service being a fixed tenure, terminable by efflux of time determined in advance, he is not entitled to any such right as prayed in the statement of claim and, therefore, the reference requires to be rejected.

4. In the present reference, the oral evidence was led on both the sides and some documents also produced which I have an occasion to refer hereafter. I may state that after the evidence was over, I have heard Mr. S. N. Gandhi for the concerned workman and Mr. Balvir Singh for the Kendriya Vidyalaya.

5. In the present reference, we have no consider whether the action of the management in terminating the service of Mr. Purbia Somchand K. Wet Sweeper w.e.f. 8-6-84 is justified and if not what are the reliefs he is entitled to ? Admittedly, Shri Purbia Somchand K. has worked in the Kendriya Vidyalaya of Gujarat as a Wet Sweeper. He was given an appointment letter as per Ex. 15. He has joined the service from 14-9-82. According to Mr. Purabia, he worked from 14-9-82 till 8-6-84 and on that day his services were terminated by letter Ex. 19. The fact that his services were terminated by Ex. 19 is not disputed by the management. However, according to the management's written statement the initial appointed was only from 14-9-82 to 30-4-83 and as there was summer vacation, he was discharged and was given reappointment. The fact that he was given reappointment by an order Ex. 22 and that appointment was till the regular incumbent join or till 30-4-83 whichever is earlier. It appears that the concerned workman was continued even after 30-4-84 in view of the letter from Asstt. Commissioner, Kendriya Vidyalaya Sangathan (Ahmedabad Region) which is dated 25-4-84. It inter alia states that the services of all the ad hoc employees should be terminated on 30-4-84, but in the case of candidates belonging to scheduled castes, scheduled tribes, etc., engaged on ad hoc basis upto 30-4-84 may be continued till 30-4-84 till the regular incumbents join duty provided that these candidates were initially appointed on ad hoc basis after sponsoring names from Employment Exchanges and after following prescribed procedure. Now Mr. Purabia is a scheduled caste candidate and hence his services were continued beyond 30-4-84 in view of the letter as above. It, therefore, follows that even though Mr. Purabia was appointed on ad hoc basis, it appears that he was continued as his initial appointment was made after sponsoring names from Employment Exchange and further after following prescribed procedure. If that was not done, he should have been relieved on 30-4-84 as per Ex. 22.

6. Now if the concerned workman has worked from 14-9-82 to 30-4-83 and thereafter from 1-7-83 to 8-6-84 admittedly he has worked for more than 240 days and if he has worked for more than 240 days in view of the clear provisions of Sec. 25(B) it can be said that he is deemed to be in continuous service and now if he is deemed to be in continuous service, it is clear that in view of the provisions of Sec. 25(F) the workman cannot be retrenched unless the workman has been given one month's notice in writing indicating the reasons for retrenchment and the period of notice has expired or the workman has been paid in lieu of such notice, wages for the period of notice. Now it is urged that in the instant case, there was an agreement and in view of the agreement the services of the concerned workman could be determined. Now the agreement itself states that the services of the concerned workman could be terminated till the regular incumbent join or till 30-4-84 whichever is earlier as

per Ex. 22. Now in the instant case, the ad hoc appointment continued even after 30-4-84 and thereafter there was no other agreement. Therefore, it could not be said that the management, had a right to terminate the services of the concerned workman on the said terms as stated in the letter at Ex. 22 as he continued to work after 30-4-84. Secondly it also appears from what has been stated as above that in the instant case, there was no notice served by the employer u/s. 25 (r) nor the workman has been paid the wages for the notice period and in that view of the matter, it is clear that the termination is bad. The Section 25(r) is quite clear on the point and, thereto, the termination of his service by the management is bad.

7. It was, however, urged by Mr. Rathore for the management that Kendriya Vidyalaya is a society registered under the Societies Registration Act and, therefore, the society cannot be sued here. Now Mr. Rathore is not right on the issue in question in as much as simply because Kendriya Vidyalaya is a society registered under the Societies Registration Act it does not and cannot mean that the Tribunal has no jurisdiction in as much we have first to consider whether there is an industrial dispute.

8. If we were to refer to the definition of industrial dispute, it is quite clear that any dispute or dispute between the employer and the workman which is connected with the employment or terms or employment would be an industrial dispute. In the instant case, the question is about the termination of the services of Mr. Purabia by the management. The question referred to is whether the said termination is legal and valid, & thereto naturally it would be an industrial dispute.

9. However it is contended that the Kendriya Vidyalaya is not an industry and the provisions of Industrial Disputes Act are not applicable to it. On going through the definition of the industry, we find that it is a very wide definition and naturally it would cover even the case where education is being imparted. Mr. Rathore for the management has tried to refer to a decision in Bangalore Water Supply and Sewerage Board's case, reported in 1978, LAB IC page 487. He has also stated that in the decision namely University of Delhi, the Supreme Court has held that the Industrial Tribunal was wrong in regarding the university as an industry. Now, it would be seen that the learned Advocate or the management has not properly gone through the Bangalore Water Supply case. In that decision, their Lordships of the Supreme Court were pleased to observe that the decision namely University of Delhi, AIR 1963, SC, page 1873 was wrongly decided. They further held that education can be and is in its institutional form an industry. Some of the grounds which were discussed therein were that it was urged that the predominant activity of the University was teaching and since the teacher did not come within the purview of the Act, only the incidental activity of the subordinate staff could fall within its scope that could not alter the predominant character of the institution. The Supreme Court dealt with these contentions saying "the premises relied on is that the bulk of the employees in the University is the teaching community. Teachers are not workmen and cannot raise disputes under the Act. The subordinate staff being only a minor category of insignificant numbers, the institution must be excluded, going by the predominant character test. It is one thing to say that an institution is not an industry. It is altogether another things to say that a large number of its employees are not 'workmen' and cannot therefore avail of the benefits of the Act and so the institution cases to be an industry. The test is not the predominant number of employees entitled to enjoy the benefits of the Act. The true test is the predominant nature of the activity. In the case of the University or an educational institution, the nature of the activity is ex hypothesis education which is a service to the community. Ergo, the University is an industry. The error has crept in if we may say so with great respect, in mixing up the numerical strength of the personnel with the nature of the activity."

10. The second ground was that there are a number of other activities of the University Administration, demonstrably industrial which are severable although ancillary to the main cultural enterprise. It is stated that a University may have a target printing press as a separate but having considerable establishment. It may have a large fleet of trans-

port buses with an army of running staff and, therefore, relying on the decision namely, The Corporation of Nagpur (AIR 1960, SC page 675) has held that these operations, viewed in severally or collectively, may be treated as industry. It would be strange, indeed if a University has 50 transport buses, hiring driving, conductors, cleaners and workshop technicians, how are they to be denied the tenets of the Act, especially when their work is separable from academic teaching merely because the buses are owned by the same corporate personality? We find, with all deference, little force in this process of nullification of the industrial character of the University's multi-form operations.

11. The third ground is that the education develops the personality of the pupil and this process, if described as industry, sounds grotesque. In this regard, they observed that they were unable to appreciate the force of this reasoning and further stated "that the pejorative assumption seems to be that 'industry' is something vulgar, inferior disparaging and should not be allowed to sully the sanctified subject of education. In our view, industry is a noble term and embraces even the most sublime activity. At any rate, in legal terminology located in the statutory definition it is not money-making, it is not lucre-loving, it is not commercialising, it is not profit hunger. On the other hand a team of painter who produce works of art and sell them or an orchestra group which travels and performs and makes money may be an industry, if they employ supportive staff of artists or others. There is no degrading touch about industry especially in the light of Mahatma Gandhi's dictum that 'Work is Workship'."

12. The Supreme Court also negatived the ground that education is a mission and vocation, rather than a profession or trade or business and finally went on to observe that indeed, all life is a mission and a man without a mission is spiritually still-born and further observed that the education is, therefore, an industry and nothing can stand in the way of that conclusion.

13. It, therefore, appears to me having regard to the facts as above that there is no substance in the argument put forward by the learned Advocate on behalf of the management that the Kendriya Vidyalaya being an educational institution, the Industrial Disputes Act does not apply to it. As stated in the Supreme Court's decision, it would apply in the case of workman such as in the present case who was a Wet Sweeper. As discussed above, it is clear that he has served for more than 240 days and his termination has not been after the compliance of the provisions of Section 25(F) of the I.D. Act. It appears that even after retrenching the concerned workman a new workman has been appointed in his place. We do not know whether the person appointed in his place is on the regular employment. Nothing has been produced to hold that Mr. Purabia was not selected and other persons were selected. It is also not shown that the other persons were selected on the date the appointment was given to Mr. Purabia. Having regard to the recruitment terms and conditions of service, it appears that so far as the group-D staff is concerned, the appointing authority is the principal and in the circumstances when Mr. Purabia has worked for more than 240 days, it must be held that he was wrongly terminated w.e.f. 8-6-84 that action is not justified and, therefore, he is entitled to reinstatement. Mr. Purabia has stated that he has made attempts in getting service at other place, but he could not get any other job. In the circumstances, since the termination was bad, there is no other alternative but to pass an order of his reinstatement with full back wages and continuity of service and hence the order.

ORDER

Shri Somchand Kanjibhai Purabia his ordered to be reinstated. He shall be reinstated within one month of the publication of this award. He shall have all the benefits of continuity of service from 8-6-84 and shall also be entitled to arrears of pay, etc. The management shall pay the same to the concerned workman within two months

from the date of publication of this award. No order as to costs.

Sd/-
G. J. DAVE,
SECRETARY

Ahmedabad, 16th November, 1987

C. G. RATHOOD, Presiding Officer
13-11-1987

PRESIDING OFFICER
[No. L-42012/64/85-D.II(B)]
HARI SINGH, Desk Officer

का. ना. ३६ --श्रीआंगक विवाद आघातियम, १९४७ (१९४७ का १४) की धारा १७ के अनुसार में, केंद्रीय सरकार, चीफ प्रोजेक्ट मैनेजर नागपुर के प्रबंधनत रोपनवाल विधियों और उनके कर्मचारों के बीच, अनुबंध में निर्दिष्ट आंगांगिक विवाद में केंद्रीय सरकार आंगांगिक अधिकरण, जबलपुर के पास का प्रक्रियन करनी है जो केंद्रीय सरकार को ९ दिसंबर, १९८७ को प्राप्त हुआ था।

S.O. 36.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal, Jabalpur, as shown in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Chief Project Manager, Nagpur, and their workmen, which was received by the Central Government on the 9th December, 1987.

ANNEXURE

BEFORE SHRI V. S. YADAV, PRESIDING OFFICER,
CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL-
CUM-LABOUR COURT, JABALPUR (M.P.)

Case No. CGIT/LC(R)(11)/1986

PARTIES :

Employers in relation to the management of Chief Project Manager, Railway Electrification, Central Railway, Nagpur (M.S.) and their workman, Shri Jafar Mahmood, E.S.M. S/o Shri M. Ali, Guard Bungalow No. D-18/E, Railway East Colony, Post Bina, District Saugor (M.P.)

APPEARANCES :

For workman—Shri P. S. Nair, Advocate.

For management—Shri S. P. Sinha, Advocate

INDUSTRY : Railway. DISTRICT : Nagpur (M.S.)

AWARD

Dated, December 2, 1987

By Notification No. L-41012(63)/83-D.II(E) dated 16th January, 1985 the Central Government in the Ministry of Labour has referred the following dispute, for adjudication:—

"Whether the action of the management of Railway Electrification, Central Railway Nagpur (MS) in terminating the services of Shri Jafar Mahmood, E.S.M. 'B' w.e.f. 30-4-1983 is justified? If not, to what relief the workman concerned is entitled?"

2. Facts which are no longer in dispute are that an advertisement was published in newspaper for the post of Electrical Signal Maintainer Grade II and other posts and workman, Shri Jafar Mahmood, applied for the former. He appeared along with seven others for interview on 27-3-1982 at Bhopal after written test. He was selected by the Railway Service Commission, Bombay and the General Manager, Central Railway, Bombay vide order dated 25-6-1982 appointed him on the said post and he joined the duty on 22-7-82.

3. Thereafter there were some reports in the National Newspapers about certain complaints of malpractices committed by the Railway Service Commission. Thereafter the

services of the workman were terminated vide order dated 30-4-1983.

4. The case of the workman further is that without any investigation the services of the workmen were terminated with effect from 30-4-1983. The workman has put in efficient, sincere and honest services without any complaint against him. He has put in more than 240 days service therefore it would be deemed to have put in more than one year continuous service. After termination of his services the post was filled in by other candidates. Therefore his termination amounts to retrenchment and is in violation of Section 25G, 25H and 25N of the Industrial Disputes Act, 1947 as well as violative of Article 14 and 16 of the Constitution. For the above reasons the termination of services of workman is unjustified without any reason and arbitrary. Therefore the workman is entitled to be reinstated with full back wages, interest on back wages etc.

5. The case of the management further is that the workman was appointed as Apprentice Electrical Signal Maintainer Gr. II. In view of the criticism in the National Press against malpractices committed by the Railway Service Commission the matter was investigated by the vigilance directorate of the Railway who informed that sufficient evidence of mala fide has been found in the selection of the candidates who were recommended for the training as Apprentice Electrical Signal Maintainer and others. In consequence of this the Railway Board issued instructions to the Division concerned to terminate the apprenticeship of the workman and others who had by then already joined their apprenticeship. Since the workman was only an apprentice, it was not necessary to give any opportunity to him for the termination of the apprenticeship. The provisions of Railway Servants (Discipline and Appeal) Rules, 1968 are not applicable in cases of the apprentices.

6. The case of the management further is that various provisions of Chapter VA and B were substituted by Act 49 of 1984 which came into effect from 18-8-1984 much after the termination of the workman. Therefore these provisions are not applicable to the case of the workman. In any case, it was not a case of retrenchment and therefore Section 25N has no application. Shri Deepak Pratap has been taken back to duty vide D.R.M.'s letter dated 11-6-1985 as per instructions issued by the Chairman Railway Recruitment Board for the reasons they will explain.

7. At the very outset on behalf of the workman, it has been contended that the Railway Administration is employing more than 300 employees, as such provisions of Section 25G, 25H and 25N of the I.D. Act are applicable to the workman. On the other hand, the stand of the management is that these provisions are not applicable in his case.

8. I have gone through these provisions and I find that Section 25N was struck down by the High Court of Madras as unconstitutional and the present section therefore was substituted by the Amending Act 49 of 1984. Therefore, the provisions of Section 25N which came into force in the year 1984 will not apply to discharge of the applicant made in the year 1983.

9. Section 25G lays down the procedure for retrenchment and Section 25H relates to the re-employment of the workman so retrenched. From the perusal of Section 25G it is crystal clear that the ordinary rule is last person employed is to be retrenched unless for the reasons to be recorded employer retrenches any other workman. The summary sheet merit list of Shri Jagat Mahmood interviewed on 27-3-1982 and list Fx. M. 24 clearly go to show that the services of the workman were terminated because the marks in the interview were found to have been manipulated. The figure '14' has been manipulated and made as '64'. Thus there is a valid reason in writing for discharging the present workman. In the circumstances the provision of Sec. 25G are fulfilled and the question of applying Section 25H therefore does not arise. Regarding the re-employment of Shri Deepak Pratap it is mentioned that he was taken on duty as per instructions issued by the Chairman, Railway Recruitment Board and they will give reasons for the same. Unfortunately those reasons are not given till now. But in this connection, it is pertinent to note that there was a Vigilance enquiry to

decide the prima facie cases and on the instructions contained in Railway Board's letter No. E(NG)182 RSC/63 dated 21-9-1982 the services of the workman and others were terminated. But if the Board decided otherwise in the case of Deepak Pratap, it cannot be said that the applicant should also claim re-employment under Sec. 25H of the I. D. Act.

10. Next it has been contended on behalf of the workman that his termination was for the alleged manipulation in his marks which amounts to misconduct with stigma attached. Therefore the services of the workman could not have been terminated without a proper domestic enquiry after giving him an opportunity to explain his stand. I am unable to agree because the allegation against the workmen is not that he himself did manipulation in his marks. The allegation against him is that his marks in the interview were manipulated.

11. In this connection, management has examined Shri K. C. Hasija (M.W. 1) and relied on Ex. M/1 marks-sheet and Ex. M/1A. Shri K. C. Hasija has stated that he was working as Deputy Director of Vigilance of Railways. He was directed by the Railway Board to enquire into the irregularities committed by the Railway Service Commission, Bombay in the matter of Selection of Apprentice Electrical Signal Maintainer Gr. II (Cat. No. 46). He submitted his report after examining the record. The Marks-sheet goes to show that the marks of the present workman were altered from 14 to 64, this is crystal clear from perusal of Marks sheet. Another witness Shri M. Shariff (M.W. 2) stated that as per condition No. 5, the officer of appointment of trainee was for 24 months. There are instructions from the Railway Board vide circular dated 2-2-54 that the apprentices are not railway employees and their services could be terminated under Rule 148(2), R. 1 of the Indian Railway Establishment Code.

12. The workman has relied in this regard on the case of Vimal Kumar Srivastava Vs. Tulsi Gramin Bank, Banda, judge of the Allahabad High Court (reported in 1986 Lab. I. C. 1112). In that case the allegations were that answer books go to show the similarity of mistake. Therefore it was presumed that the examinee had adopted unfair means and as such it was directed that he should be given nil marks in the interview. In the circumstances, the Court held that such a stand is not justified without giving him an opportunity to explain. Such is not the case in the instant case. As I have already pointed out the allegation is not against the workman but against the Selection Board which has taken his interview. Thus there is nothing for the workman to explain. His marks-sheet shows the manipulation made by the Interview Committee.

13. For the reasons discussed above, I find that discharge of the applicant from service is justified and the provisions of the I. D. Act, are not attracted. Therefore the workman is not entitled to any relief. I, therefore, answer the reference as under :

That the action of the management of Railway Electrification, Central Railway, Nagpur (MS) in terminating the services of Shri Jafar Mahmood, E.S.M. 'B' w.e.f. 30-4-1983 is justified. He is not entitled to any relief. No order as to costs.

Sd/-

V. S. VADAV, Presiding Officer
[No. L-41012/63/83-D. III(B)]
HARI SINGH, Desk Officer

मही विल्सन, 18 दिसंबर, 1987

का. आ. 37.—श्रीधोगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 11) की पारा 17 के अनुसार में, केन्द्रीय सम्पादन वर्गों का नियंत्रण, भौतिक भारत कोकिंग कोष नियमित्त के प्रबंधनता के सम्बद्ध नियोजकों द्वारा उनके प्रमेकरण के बीच, अनुबंध में निर्दिष्ट श्रीधोगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार श्रीधोगिक अधिकरण, संघ्या - 1, धनबाद के पंचाट को प्रकाशित करती है। श्री केन्द्रीय सम्पादन को 8 दिसंबर, 1987 को प्राप्त हुआ था।

New Delhi, the 18th December, 1987

S.O. 37.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal No. 1, Dhanbad as shown in the Annexure, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Barora Colliery of M/s. Bharat Coking Coal Limited, and their workmen, which was received by the Central Government on the 8th December, 1987.

ANNEXURE

BEFORE THE CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL NO. 1, DHANBAD.

In the matter of a reference under section 10(1)(d) of the Industrial Disputes Act, 1947.

Reference No. 21 of 1982.

PARTIES :

Employers in relation to the management of Barora Colliery of Messrs Bharat Coking Coal Limited, P.O. Nawagarh, Dist. Dhanbad,

AND

Their Workmen.

PRESENT :

Shri S. K. Mitra, Presiding Officer.

APPEARANCES :

For the Employers : Shri B. Joshi, Advocate.

For the Workmen : Shri S. Bose, Secretary, Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh.

STATE : Bihar.

INDUSTRY : Coal

Dhanbad, dated the 30th November, 1987

AWARD

By Order No. L-20012(376)/81-D. III(A) dated, the 26th February, 1982, the Central Government in the Ministry of Labour has, in exercise of the powers conferred by clause (d) of sub-section (1) of section 10 of the Industrial Disputes Act, 1947, referred the following dispute to this Tribunal for adjudication.

"Whether the demand of the workmen of Barora Colliery of Messrs Bharat Coking Coal Limited, Post Office Nawagarh, District Dhanbad that Shri Ramdeo Singh, Assistant Loading Clerk Grade-III should be recategorised as Loading Clerk-Grade-II from the 1st May, 1972 is justified? If so, to what relief is the workman concerned entitled?"

2. The case of the concerned workmen, details apart, is as follows :—

The concerned workman, Ramdeo Singh, has remained in the employment of the colliery as Loading Clerk from the date prior to take over of the colliery by the Central Government with effect from 17-10-71 and nationalisation with effect from 1-5-72. The private owners exploited the employees in various methods including under payment for specific job done by an employee. Although the concerned workman was performing the duties of Loading Clerk he was designated as Asstt. Loading Clerk and thereby the management paid him one grade lower rate of wages since the Loading Clerk is in Clerical Grade II whereas Asstt. Loading Clerk is in Clerical Grade-III. Upon nationalisation of the collieries the ownership, management and control of the property were vested in M/s. B.C.C. Ltd., a Central Government company. The management of M/s. BCCL recategorised employees according to nature of job performed by each individual workman and the concerned workman also expected that his case would receive due consideration. But for reasons best known to the management his case was kept pending though he was performing the duties of a Loading Clerk and workmen doing similar nature of job in that

colliery and in other collieries of the management were regularised in Clerical Grade-II. He was constrained to make several representations to the management and was assured that his case would be referred to appropriate authorities for regularisation. The Colliery Supdt. by his note dated 18-11-78 and a further note dated 24-11-78 took up his case with the Area General Manager of M/s. B.C.C.L., Barora Area. The union, the workman belonged to also raised the issue before the management. The authorities at Area General Manager's level were satisfied that injustice was being done to the concerned workman and agreed to regularise his grade and a letter dated 30-1-80 (Ext. M-4) was sent to the Supt., Barora Colliery by the Personnel Manager, Barora Area intimating therein that the concerned workman should be regularised in Grade-II after obtaining a declaration from him that he would not claim any dues of back wages prior to the date of his regularisation in Grade-II. Unfortunately the Colliery management did not act even on the formula suggested by the Area Personnel Manager, Barora Area. The union of the workmen represented the matter again to the General Manager of Area by a letter dated 15-5-81 (Ext. W-2), but that was not replied to. In the circumstances the union was constrained to raise industrial dispute before the Asstt. Labour Commissioner (Central), Dhanbad, by letter dated 29-5-81. But the conciliation proceeding ended in a failure due to the adamant attitude of the management. Hence, the union has prayed that the demand of the workman is justified and he should be re-categorised in Clerical Grade-II with effect from 1-5-72.

3. The management has contested the matter. It has contended that the concerned workman was appointed Asstt. Loading Clerk on 31-1-73 and has been continuing as such. He was given Identity Card where he put his signature in token of his acceptance the entries made therein as correct. As per recommendations of Central Coal Wage Board, Asstt. Loading Clerk is placed in Clerical Grade-III and therefore, the concerned workman can have no grievance about it. The demand of the concerned workman to be promoted to the post of Loading Clerk in Grade-II cannot be accepted because he is junior to several Grade-III Clerks in the colliery. According to norms of promotion from Grade-III to Grade-II seniority is taken into consideration in respect of all the Grade-III Clerks of the colliery. Since the concerned workman is junior most he cannot be promoted over the head of other Clerks who are senior to him. The demand of the union is based on imaginary assertion that the concerned workman has been working as Loading Clerk from 1-5-1972. Hence, it is asserted by the management that the demand of the concerned workman is not justified.

4. In rejoinder to the written statement of the union the management has contended that the notesheet of the different collieries are not accepted without proper verification and authenticity of the facts stated therein. The entire approach of the union was based on the assertion of the concerned workman that he had been working as Loading Clerk which was detected subsequently as false and was a manipulated affair.

5. In the rejoinder to the written statement of the management the workman has denied the allegation made by the management in its rejoinder and stuck to the position that he was performing the duties of a Loading Clerk and has got every right to be re-categorised as Loading Clerk Grade-II.

6. The management has examined only one witness in this case and introduced in evidence a mass of documents which have been made Exts. M-1 to M-5. The workman has examined himself only in this case and introduced some documents which have been marked as Exts. W-1 and W-2.

7. There is no dispute that the concerned workman was working in Barora Colliery since 31-1-73. It has been

asserted by the management that he was working as Asstt. Loading Clerk Grade-III while the concerned workman has asserted that he was working as Loading Clerk Gr. II. It has been admitted by the concerned workman that in the Identity Card and Form B Register he has been designated as Asstt. Loading Clerk Grade-III from the very beginning, but it is his testimony that while he was working as Asstt. Loading Clerk Grade-III he got a letter from the management directing him to do the work of Loading Clerk Grade-II. But he could not produce this letter. MW-1, Birendra Nath Das, was formerly posted as Agent of Barora Colliery from January, 1981 to July, 1983. In his testimony he has stated that there was only one railway siding at the time when he was the Agent of Barora Colliery and that the entire staff looking after and performing the duties attending to supervision of loading comprised of one supervisor, two loading clerks, two Asstt. Loading Clerks, six Loading Munshies and one Attendance Clerk. The fact that there was one railway siding in Barora Colliery has not been pleaded by the management in written statement. The statement of Sri Das with regard to the number of loading munshies of Barora Colliery appears to be bristle with inaccuracy because in Ext. M-5 which is a list of loading personnel shows that there was only one loading munshi in Barora Colliery. This witness has asserted that the concerned workman was posted in the colliery as Asstt. Loading Clerk and his function was to assist the Loading Clerk in performance of duties and that he never allotted him the duties of Loading Clerk.

8. It is the case of the concerned workman that he was performing the duties of a Loading Clerk in Clerical Grade-II, but the management paid him one grade lower rate of wages in Clerical Grade-III and that upon his representation the matter was ultimately taken up by the Colliery Superintendent by his note dated 18-11-78. It appears from the photo copy of a note dated 18-11-78 raised by Senior Personnel Officer, Barora Area (Ext. M-1) that the Suptd. Barora Colliery forwarded a list for categorisation of Engineering workers and others and that he made a reference about the concerned workman, Asstt. Loading Clerk in Grade-III for replacement in Grade-II. Since no details, such as, actual job performed by him, Suptd. Barora Colliery, was requested to furnish following facts:

- (i) since when in the present grade;
- (ii) actual job performance; and
- (iii) strength of Asstt. Loading Clerk, Loading Clerk and no. of siding.

Suptd., Barora Colliery, provided bio-data of the concerned workman stating that the concerned workman was working as Loading and Despatch Clerk (Ext. M-2). It appears further from another note-sheet that the management has stated that the concerned workman was working as Loading and Despatch Clerk since 1973 and the appropriate grade of Despatch Clerk is Grade-II as per N.C.W.A. (Ext. M-1). The management prepared a list of loading personnel of Barora Colliery and this shows that there was one Loading Supervisor, three Loading Clerks, two Asstt. Loading Clerks and one Loading Munshi in Barora Colliery (Ext. M-5). The list shows that the concerned workman was placed in Clerical Grade-II with effect from 30-7-82. In his testimony the concerned workman has stated that since 1983 he has been getting wages available to Clerk Grade-II. By letter dated 30-1-80 (Ext. M-4) Personnel Manager, Barora Area wrote to the Superintendent, Barora Colliery, as follows :

"Reference your endorsement on your Note-sheet dated 18th November, 1978, and your comments dated 24-11-78 regarding Sri Ram Deo Singh, Asstt. Loading Clerk. As per proforma filled up for categorisation by you, we note that he is doing the job of Loading Clerk since December, 1973 and as such he is entitled to be regularised as Clerk Grade-II after taking declaration from him that will not claim for back wages before putting him as Clerk Grade-II."

Thus it is seen that the management was satisfied about the fact that the concerned workman was performing all jobs of Loading Clerk since December, 1973 and that he should be placed in Clerical Grade-II provided he did not claim back wages. In the circumstances, I am constrained to hold that the management has no right to deny the concerned workman Clerical Grade-II with effect from 30-1-80. But it is seen that the management has given him that grade with effect from 30-7-82. In the circumstance the concerned workman is entitled to get difference of wages of Clerk Grade-II and Clerk Gr. III from 30-1-80 till 29-7-82.

9. In the result the concerned workman succeeds partially in this reference

Hence, it is ordered that the demand of the workmen of Baiora Colliery of M/s. B.C.C. Ltd. that Ramdeo Singh, Asstt. Loading Clerk Grade-III should be recategorised as Loading Clerk Grade-II, but not from 1-5-1972. He should be recategorised as Loading Clerk Grade-II with effect from 30-1-1980 and paid difference of wages.

In the circumstance of the case parties to bear their own costs.

S. K. MITRA, Presiding Officer
[No. L-20012/376/81-D.III(A)]
P. V. SREEDHARAN, Desk Officer